पृथ्वी से अनंतकाल तक:

नास्तिकवाद और क्रमिक विकास के साथ समस्याएँ,
विश्वसनीय प्रमाण कि मसीहियत सच है,
वास्तव में संसार कैसे खत्म होगा,
साथ ही, कठिन प्रश्नों के उत्तर।

हिन्दी अनुवाद संस्करण

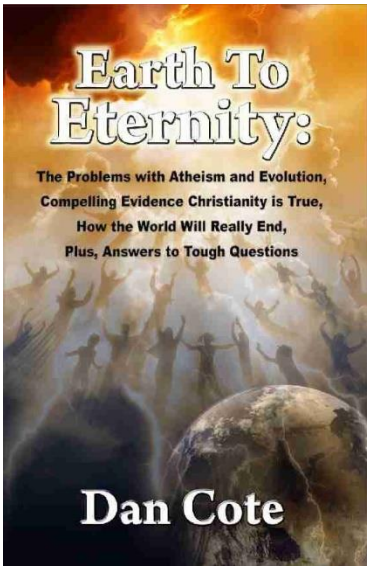

डेन कोट

पवित्रशास्त्र के उद्धरणों को पवित्र बाइबल से लिया गया है। बाइबल सोसायटी ऑफ इण्डिया के द्वारा प्रकाशित। अनुमति से उपयोग किया गया है। सर्वाधिकार सुरक्षित। कॉपीराइट © बाइबल सोसायटी ऑफ इण्डिया।

पृथ्वी से लेकर अनंतकाल तक
कॉपीराइट © 2010, 2020 डेनियल आर. कोट के द्वारा

आप इस आशा में इस पुस्तक को दूसरों के साथ साझा करने के लिए स्वतन्त्र हैं कि वे भी यीशु मसीह के सुसमाचार को पढ़ें।

प्रश्न? इस पर लेखक को अंग्रेजी में ईमेल कीजिए:
multimediaapologetics@gmail.com

हमारी वेबसाईट में जाइए:
www.multimediaapologetics.com

ISBN 978-1-60458-728-9

Instantpublisher.com के द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रिन्ट किया गया

प्रेम सहित नैन्सी, एलेक्जेंड्रा, और एरिक को समर्पित

हिन्दी संस्करण हेतु प्रस्तावना

प्रिय पाठक,

बाइबल हमें बताती है कि सभी मानव प्राणियों को परमेश्वर के स्वरुप में सृजा गया है और यह कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने इसका उद्धार करने के लिए अपने पुत्र को भेज दिया। इसका अर्थ है कि आप बहुत महत्वपूर्ण हैं और परमेश्वर ने आपसे प्रेम किया है! हम बाइबल में भी सीखते हैं कि स्वर्ग हर जाति और भाषा के लोगों से भरपूर हो जाएगा। क्या आप उनके बीच होंगे? वे लोग जो स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं उनमें एक बात समान होगी: वे यह विश्वास करेंगे कि परमेश्वर का पुत्र यीशु उनके पापों के लिए क्रूस पर मर गया और मृतकों में से जी उठा था।

बाइबल हमें बताती है कि सब मनुष्य पापी हैं, जिसका अर्थ है कि हम सभी ने परमेश्वर की नैतिक आचार संहिता को तोड़ा है। पाप मनुष्यों को परमेश्वर से अलग करता है क्योंकि परमेश्वर सिद्ध और भला है। सुसमाचार का शुभ सन्देश यह है कि परमेश्वर उन लोगों के पापों को क्षमा करता है जो उसके पुत्र पर विश्वास करते हैं और वह उन्हें अनंत स्वर्ग में अपने सम्मुख आने की अनुमति देता है। ***यह कोई संयोग नहीं है कि आप इसे पढ़ रहे हैं।*** परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से आपको बुला रहा है कि अपने विश्वास को उसके पुत्र पर रखें और सम्पूर्ण अनंतकाल के लिए उसके पुत्र बन जाएं।

बाइबल के अनुसार, जीने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के पास केवल एक ही जीवन है, उस समय के बाद, हममें से हर कोई परमेश्वर के न्याय का सामना करेगा। प्रत्येक व्यक्ति की अनंत नियति स्वर्ग या नर्क होगी। यह पुस्तक आपको पुख्ता प्रमाण देगी कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, जो मृतकों में से जी उठा है। यह मसीही विश्वास की मूलभूत बातों को भी समझाएगी। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर, पवित्र आत्मा के माध्यम से, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास करने के लिए आपके हृदय और दिमाग को खोलेगा। ऐसा करने से, आप परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु के साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे।

डैनियल कोट
जुलाई 10, 2020
सारी महिमा केवल परमेश्वर को मिले

विषयसूची

परिचय

जीवन की उत्पत्ति की ओर असफल दृष्टिकोण

1. नास्तिकवाद (Atheism) और अनीश्वरवाद (Agnosticism) की अर्थहीनता 8
2. क्रमिक विकास: एक गलत सिद्धांत 13

प्रमाण कि बाइबल परमेश्वर से है

3. बाइबल: ईश्वरीय पुस्तक—भविष्यवाणियां बहुत सारी सूचनाएँ देती हैं 20
4. बाइबल: ईश्वरीय पुस्तक—मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणी 32
5. नया नियम: सबसे विश्वसनीय प्राचीन पुस्तक 37

प्रमाण कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है

6. यीशु: मसीहा, चमत्कार करनेवाला, परमेश्वर का पुत्र 44
7. पुनरुत्थान का सत्य 48
8. प्राचीन गैर-मसीही लेखों ने मसीही दावों की पुष्टि की है 55
9. मसीहियत की अद्वितीय सच्चाई 61

मसीहियत कुल मिलाकर किसके विषय में है

10. यीशु और प्रेरितों ने बाइबल के बारे में क्या सिखाया था 64
11. मसीहियत क्या सिखाती है—एक सरल सार 66

सत्य के लिए संसार के धर्मों की परख

12. हम सब को यीशु की आवश्यकता क्यों है 69
13. महत्वपूर्ण बातों के लिए एक और रास्ता 75

यीशु का अनुसरण करने के लिए और अधिक प्रेरणा

14. वास्तव में संसार का अंत कैसे होगा 78
15. यीशु का पुनःआगमन 85
16. उपसंहार 88

परिशिष्ट: कठिन प्रश्नों के उत्तर 90
नोट्स 97

परिचय

हमारे समय में धर्म एक अत्यंत-विवादित विषय है। शायद यह हमेशा से ऐसा ही रहा है। क्या यह वास्तव में संभव है कि यीशु ही परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र मार्ग है जैसा मसीहियत का दावा है? मैं निश्चित रूप से इस पर विश्वास नहीं करता था, परन्तु वर्षों के अध्ययन और शोध के बाद, मैं प्रमाणों के द्वारा प्रभावित हो गया हूँ। आनेवाले अध्यायों में, मैं इस मामले को पेश करूंगा कि इस बात में कोई संदेह नहीं है, कि यीशु ही परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्त जीवन का एकमात्र मार्ग है।

व्यक्तिगत रूप में, हम सभी अपने धार्मिक दृष्टिकोणों के निर्माण में निर्णायक पलों को सोच सकते हैं। सम्पूर्ण जानकारी होने के लाभ के बिना हम सभी ने धर्म के बारे में कदाचित् जीवन-बदलनेवाले निर्णयों को लिया था। किशोर के रूप में, मैं उसके विषय में सन्देहास्पद हो गया था जिसे मुझे बालपन में परमेश्वर और धर्म के बारे में सिखाया गया था। मैंने निश्चित रूप से सवाल किया था कि क्या वास्तव में कोई परमेश्वर है। जो कुछ मैंने क्रमिक विकास (evolution) के बारे में स्कूल में और मीडिया से सीखा था उसने मानवजाति की उत्पत्ति के विषय में मेरी धार्मिक समझ को चुनौती दी थी। परमेश्वर तक पहुंचने के एकमात्र मार्ग के रूप में यीशु के बारे में और बाइबल की सृष्टि की कहानियों के बारे में मेरा संशय मेरे बीसवें वर्ष में सबसे ऊंचे शिखर पर पहुंच गया था।

मसीहियत की ओर वापस मेरी यात्रा एक इच्छा के रूप में शुरू हुई थी कि उस सत्य को जानूँ यदि उसे जाना जा सकता है। कदाचित् मैं उस भय के द्वारा आंशिक रूप से प्रेरित हो गया था कि जो कुछ मुझे यीशु और स्वर्ग एवं नरक के बारे सिखाया गया था वह शायद सच हो सकता है। किसी भी कीमत पर, मैंने सोचा था कि यह साबित कर सकता हूँ कि सभी धर्म वाकई में मूल रूप से एक समान थे—शायद मैं अपनी खोज के बारे में एक पुस्तक भी लिखूंगा—अतः मैंने विभिन्न धर्मों पर शोध करना शुरू कर दिया था। इंजीनियरिंग और विज्ञान में मेरे प्रशिक्षण ने यह अनिवार्य किया था कि मेरे पास तथ्य, प्रमाण और आंकड़ा हो। एक दिन, काम के बाद जब मैं कार से वापस घर जा रहा था, तो मैंने एक मसीही एपोलॉजिस्ट (ऐसा व्यक्ति जो मसीहियत के तर्कसंगत बचाव में संलग्न रहता है) को रेडियो पर ऐसी बातें कहते हुए सुना जिन्हें मैंने पहले कभी सुना नहीं था और कभी विचार नहीं किया था। इसी प्रकार से यह मेरे लिए आरंभ हुआ था। ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं है, कि मेरी खोज की शुरुआत में हालात वैसे नहीं पाए गए थे जैसे मैंने सोचा था कि वे होंगे।

जब मैं मसीहियत में तल्लीन हो गया, तो मैं ऐसे प्रमाण की गहराई एवं चौड़ाई के द्वारा चकित हो गया था जो इसके अनोखे सत्य का समर्थन करता है। मैं इस मामले के सतही अध्ययन के साथ संतुष्ट नहीं हो सकता था, अतः मैंने क्रिश्चियन एपोलॉजेटिक्स में स्नातक की डिग्री हासिल करने का बीड़ा उठाया।

मेरी आशा है कि वह साझा करूं जिसे मैंने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सीखा है जो उन बातों में रुचि लेता है जिन्हें मसीहियत सिखाती है, और साथ ही उसे मज़बूती देने वाले तर्क एवं प्रमाण भी। इस पुस्तक को ऐसे मसीहियों के लिए भी उपयोगी होना चाहिए जो दूसरों के साथ अपने विश्वास को साझा करना पसन्द करेंगे।

इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य एक सुविस्तृत पुस्तक लिखना नहीं है, बल्कि इसके बजाय, एक सरल पुस्तक लिखना है जो सीधे तौर पर महत्वपूर्ण प्रमाण और तथ्यों को प्रस्तुत करता हो। मसीहियत के बारे में अनेक महान पुस्तकें हैं, परन्तु प्रायः उन्हें ऐसे स्तर पर लिखा गया है जो उस विषय के पूर्व ज्ञान की कल्पना करता है, या उनका विवरण इतना विस्तृत होता है कि उनका अनुसरण करना तब तक कठिन होता है जब तक कि उस क्षेत्र में डूब नहीं जाते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप ऐसे महत्वपूर्ण विषय को पाएंगे जो नास्तिकवाद एवं क्रमिक विकास से लेकर पुनरुत्थान एवं अंत समयों तक घेरते हैं उनका सार-तत्व निकालकर कर उस बिन्दु तक लाया गया है जहाँ आवश्यक मामले और तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं और यह स्पष्टता आपकी सहायता करेगी कि इन मामलों को बेहतर ढंग से समझें और उनके बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लें।

यह मेरा अनुभव रहा है कि कभी कभी, मसीही लोग मसीहियत को प्रस्तुत करने में सीधे-स्पष्ट नहीं होते हैं। इस कारण उनका सन्देश हल्का हो जाता है, और परिणामस्वरूप, इसे कभी भी पूरी तरह से पहुँचाया नहीं जाता है। यह उसके बिलकुल विपरीत है जिसे यीशु के पहले अनुयायियों ने किया था। मैं इसे टालने की कोशिश करूंगा। समय समय पर रूखा होने के लिए मुझे क्षमा कीजिए।

इस छोटी पुस्तक को पढ़ने में आपके पास खोने को कुछ भी नहीं है। आपके समय के कुछ घण्टों में, आप सीख सकते हैं कि मसीहियत वास्तव में किसके विषय में है और आप उस प्रमाण की समझ अर्जित कर सकते हैं जो इसका समर्थन करता है।

मैं आशा करता हूँ कि जब तक आप इस पुस्तक को समाप्त करेंगे तब तक यह सत्य स्पष्ट हो गया होगा। मैं आपको आमंत्रित करता हूँ कि अपने प्रश्नों और टिप्पणियों को multimediaapologetics@gmail.com पर ईमेल करें। मैं आपको उत्तर देने की पूरी कोशिश करूंगा।

डेन कोट

एक
नास्तिकवाद (Atheism) और अनीश्वरवाद (Agnosticism) की अर्थहीनता

यदि आप भूमिका में इससे चूक गए हों, तो इस पुस्तक में मेरा उद्देश्य बिना किसी सन्देह के यह प्रमाणित करना है कि मसीहियत सच है और यह कि परमेश्वर की उपस्थिति में यीशु ही अनन्त जीवन का एकमात्र मार्ग है।

यदि मसीहियत सच है तो यह क्या मायने रखता है?

यीशु के अनुसार, सभी मनुष्य बड़े आनन्द के स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति में अनंतकाल बिताएंगे या बहुत ही अप्रिय स्थान में परमेश्वर से अलग होकर अनंतकाल बिताएंगे। यीशु के अनुसार, ऐसे निर्णय जिन्हें आप इस जीवन में लेते हैं वे आपकी अनंत मंज़िल को प्रभावित करेंगे। इसी लिए यह मायने रखता है।

इससे पहले कि मैं मसीहियत के प्रति अपना पक्ष रखूँ, मैं दो चीज़ों पर ध्यान दिलाना चाहूँगा, जो सच्चाई को धुँधला देते हैं: नास्तिकवाद और क्रमिक विकास (evolution) का सिद्धांत। यदि नास्तिकवाद सही है, तो कोई परमेश्वर नहीं है, और मसीहियत संभवतः सच नहीं हो सकती। यदि क्रमिक विकास का सिद्धांत सही है, तो बाइबल की प्रमाणिकता पर प्रश्न उठाया जा सकता है। इस अध्याय और अगले अध्याय में, मैं दिखाऊंगा कि नास्तिकवाद एक गलत अवधारणा है और क्रमिक विकास का सिद्धांत भी गलत परिकल्पना है। फिर मैं उन प्रभावशाली प्रमाणों की ओर बढ़ूंगा जो दिखाते हैं कि मसीहियत और इसके दावे सही हैं।

फैलता हुआ जगत एक शुरुआत की ओर इशारा करता है

बीसवीं शताब्दी तक, वैज्ञानिकों ने जगत की स्थिर-अवस्था मॉडल को व्यापक रूप से स्वीकार किया था। स्थिर-अवस्था मॉडल मानता था कि जगत असीमित रूप से पुराना और अपरिवर्तनीय था—यह अनंतकालिक रूप से ही अस्तित्व में था। यदि यह असीमित रूप से पुराना है, तो समय और अन्तरिक्ष का कोई आरंभ नहीं होता। जगत हमेशा से रहा होगा और हमेशा रहेगा। चूंकि ऐसा सोचा जाता था कि जगत स्थिर एवं अपरिवर्तनीय है, इसलिए आकाशगंगाओं में नक्षत्रों एवं तारा-मंडलों को एक दूसरे से निश्चित दूरियों पर बनाकर रखा गया होगा। यदि समय और अंतरिक्ष की कोई शुरुआत नहीं होती, तो सृष्टिकर्ता की कोई आवश्यकता नहीं होती।

एल्बर्ट आइन्स्टाइन और जॉर्जस लेमाईट्रे के सैद्धांतिक कार्य के परिणामस्वरूप जगत के उस स्थिर-अवस्था मॉडल के सत्याभास पर प्रश्न खड़ा किया गया था, जिसने यह संकेत दिया था कि संपूर्ण जगत अवश्य फैल रहा होगा। एक दशक के भीतर, आइन्स्टाइन और लेमाईट्रे के भविष्य कथनों की पुष्टि प्रयोगात्मक अवलोकनों के द्वारा की गई होगी।

1929 में, एडविन हबल ने दूरबीन के द्वारा देखा कि संपूर्ण जगत असल में फैल रहा था। उन्होंने ध्यान दिया कि आकाशगंगाए एक दूसरे से दूर जा रही थीं। 1964 में, अर्नो पेनज़ियास और रॉबर्ट विल्सन ने पराभौतिक सूक्ष्म तरंगों के विकरण की उपस्थिति की खोज की थी जो इस तथ्य का परिचायक था कि जगत किसी समय बहुत गर्म था। इन वैज्ञानिक परिणामों ने, दूसरे परिणामों के साथ, वैज्ञानिकों की अगुवाई की थी कि यह मानें कि जगत के पास असीमित रूप से गर्म और ठोस आरंभ था—हमारा अतिविशाल जगत सुदूर अतीत में एक छोटे और गर्म रूप में आरंभ हुआ था। जगत की उत्पत्ति के इस विवरण को बिग बैंग थ्योरी के रूप में जाना गया था। यह इसकी पुष्टि करता है कि समय और अंतरिक्ष का आरम्भ अनुमानतः 13.70 अरब वर्षों पहले हुआ था और यह कि सम्पूर्ण जगत एक विस्फोट के समान निरन्तर फैलता रहा है।[1]

क्या जगत की शुरुआत के बारे में बिग बैंग थ्योरी पूरी तरह से सही है? सिद्धांतों को परिष्कृत किया जाता है और नए आंकड़े इकट्ठा किए जाते हैं, परन्तु यह निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है कि जगत विज्ञानी अब लगभग सार्वभौमिक रूप से सहमत हैं कि जगत का एक आरम्भ था। हज़ारों वर्षों से, दूरबीनों और अंतरिक्ष खोजबीनों से बहुत पहले, उत्पत्ति की पुस्तक ने इस बात की पुष्टि की है: आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

कारण एवं कार्य का सिद्धांत

कारण एवं कार्य का सिद्धांत (Principle of Causality) सरल रूप से बताता है कि हर एक प्रभाव का एक कारण होता है।[2] यह एक निर्विवादित सत्य है कि बिना किसी कारण के कुछ भी नहीं होता है। क्या आपकी कार कभी चालू होगी जब तक कोई व्यक्ति या कोई चीज़ किसी ऐसे कार्य को क्रियान्वित ना करे जो इसे चालू करती है? निश्चित रूप से, यह चालू नहीं होगी। यदि आप इग्निशन को चाबी से चालू करें, अपने रिमोट स्टार्टर पर उस बटन दबाएं, या शायद सही इग्निशन तार को आपस में मिलाएँ, तो कार चालू होगी। किसी भी मामले में, प्रभाव का (कार का चालू होने का) एक कारण होता है।

यदि कारण एवं कार्य का सिद्धांत सही नहीं होता, तो विज्ञान आगे नहीं बढ़ सकता था, और समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता था क्योंकि आप कभी भी निश्चित नहीं हो सकते थे कि आपने बीमारी के कारण या रेल की टक्कर के कारण को ढूंढ़ लिया था। बीमारी और ट्रेन की टक्कर यूँ ही बिना सोचे समझे प्रभाव हो सकते हैं, परन्तु हमारे आधुनिक वैज्ञानिक संसार में, हम जानते हैं कि घटनाओं, बीमारियों और ट्रेन की टक्करों का एक कारण है। आपको किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ने के लिए कड़ा प्रयत्न करना पड़ेगा जो कारण एवं कार्य के सिद्धान्त को अस्वीकार करता हो।

नास्तिकों और अनीश्वरवादियों के लिए एक बड़ी समस्या

एक नास्तिक परमेश्वर के अस्तित्व का इनकार करता है। एक अनीश्वरवादी सामान्यतः इस बात पर बल देता है कि परमेश्वर अस्तित्व में है या नहीं, यह अज्ञात है, या वह इनकार करता है कि उस पुरुष या स्त्री के पास परमेश्वर का ज्ञान हो सकता है।

वैज्ञानिक निष्कर्ष, कारण एवं कार्य (Causality) के सिद्धांत के साथ मिलकर नास्तिकों और अनीश्वरवादियों के लिए एक प्रमुख समस्या को प्रस्तुत करते हैं कि जगत का एक आरंभ है। निम्नलिखित सरल न्यायसंगत तर्कों पर विचार कीजिए:

आधारवाक्य 1: जो कुछ अस्तित्व में आता है उसका एक कारण है।

पृथ्वी से अनंतकाल तक

आधारवाक्य 2: जगत ने अस्तित्व में आया।
निष्कर्ष: इसलिए, जगत के पीछे अवश्य एक कारण होना चाहिए।

यदि इस तर्क में दोनों आधारवाक्य सही हैं, और तर्क की संरचना प्रमाणिक है, तो निष्कर्ष का आवश्यक रूप से अनुसरण अवश्य करना चाहिए। एक पल के लिए इसके बारे में सोचिए। क्या इस तर्क के प्रति निष्कर्ष का कोई निकास द्वार है? यह निष्कर्ष निर्विवादित है। यदि जगत अस्तित्व में आया, तो यह किसी न किसी कारण से अस्तित्व में आया होगा।

जगत के अस्तित्व का क्या कारण हो सकता है?

जगत में तारों की अनुमानित संख्या 10 अरब खरब है, और इनमें से कुछ तारों के पास पृथ्वी की तुलना में 2,00,000 गुना बड़े व्यास हैं। तुलना के रूप में, यदि पृथ्वी के पास एक गोल्फ बॉल जितना व्यास होता, तो सबसे विशाल ज्ञात तारे के पास ऐसा व्यास होता जो एम्पायर स्टेट बिल्डिंग की ऊंचाई के 24 गुने के समान होता! जगत के कारण (*सृष्टिकर्ता*) को वास्तव में बहुत महान और सामर्थी अवश्य होना चाहिए!

अतः यह नास्तिकों और अनीश्वरवादियों को कहाँ छोड़ देता है? वे कारण एवं कार्य के सिद्धान्त और उस स्पष्ट निष्कर्ष को नकारने के लिए असहज और तर्कहीन स्थिति में हैं जो इससे आता है। यह कहना उचित प्रतीत होता है कि *किसी चीज़* ने संसार की सृष्टि की थी। यह कहना उचित प्रतीत नहीं होता कि *किसी भी चीज़* ने जगत की सृष्टि नहीं की थी! किसी व्यक्ति ने या किसी चीज़ ने जगत की सृष्टि की थी यह बात निर्विवादित है—यह अस्तित्व में आया।

सृष्टिकर्ता की सृष्टि किसने की थी?

जगत का सृष्टिकर्ता ज़रूर इसकी सृष्टि से पहले अस्तित्व में रहा होगा, अन्यथा, वह इसकी सृष्टि नहीं कर सकता था। जगत की शुरुआत से पहले समय और अंतरिक्ष जैसी कोई चीज़ें नहीं थीं चूंकि समय और अंतरिक्ष जगत के अनिवार्य हिस्से हैं। कारण एवं कार्य के सिद्धांत (Principle of Causality) के अनुसार, केवल ऐसी चीज़ें जिनके पास शुरुआत हैं उन्हें ही कारण की आवश्यकता होती है। शुरुआत अंतरिक्ष और समय के आरंभ को सूचित करता है। सृष्टिकर्ता अंतरिक्ष और समय से बाहर है क्योंकि वह अंतरिक्ष और समय के आरंभ से पहले अस्तित्व में था। इसलिए, यह उचित प्रतीत नहीं होता कि ऐसे प्राणी की शुरुआत के बारे में बात की जाए। सृष्टिकर्ता को तर्कसंगत रूप से ऐसा प्राणी होना अवश्य चाहिए जो समय से परे हो, अर्थात वह ज़रूर अनंत प्राणी होगा।

नास्तिकों और अनीश्वरवादियों के लिए एक और समस्या

जानकारी को कई तरीकों से संग्रहित किया जाता है। यदि आप किसी वेब पेज पर जाते हैं और इससे जानकारी प्राप्त करते हैं, तो यह इसलिए संभव होता है क्योंकि वेब पेज के निर्माता ने समय लिया था कि अक्षरों को वाक्यों में व्यवस्थित करे या चित्रों एवं तस्वीरों को प्रदान करे। प्राचीन संसार में, लिखने के प्रारम्भिक रूपों का उपयोग करते हुए जानकारी को पत्थर या मिट्टी की पटियों में रखा जाता था जैसे चित्रलेख या मिट्टी की पट्टीयों पर पत्ती के आकार का लेख। ऐसा प्रोग्राम जिसे कंप्यूटर की मेमोरी में संग्रहित किया जाता है उसमें डिजिटल कोड शामिल होते हैं जो विशेष गणितीय या तर्कसंगत संचालनों को दर्शाते हैं। कंप्यूटर प्रोग्रामर वह जानकारी प्रदान करता है जो माइक्रोप्रोसेसर को बताता है कि क्या करना है।

जानकारी बुद्धिमान प्राणियों से आती है

इन सभी उदाहरणों में (वेब पेज, प्राचीन पटियाएं, या कंप्यूटर प्रोग्राम), सूचना का स्रोत कोई बुद्धिमान व्यक्ति है। असल में, जब हम सूचना के स्रोत की खोज करते हैं, जहाँ इसे संग्रहित किया गया था, तो हम हमेशा पाते हैं कि इसे किसी बुद्धिमान व्यक्ति के द्वारा उत्पन्न किया गया था। वास्तविकता यह है कि, बुद्धिमान लोगों के अलावा जानकारी के लिए अन्य कोई ज्ञात स्रोत नहीं है।[3] और कौन पत्रिकाओं, वेब पेजों या कंप्यूटर प्रोग्रामों की रचना करता है? केवल बुद्धिमान लोग—सही?

मानव जीन समूह पर विचार कीजिए, जो एक जीव का पूर्ण DNA अनुक्रम है और जो इसकी सम्पूर्ण विशिष्टता और आनुवंशिक जानकारी को शामिल करता है। Human Genome Project web page के अनुसार:

> मानव जीन समूह DNA से बना होता है, जिसमें चार अलग-अलग रासायनिक निर्माण खण्ड होते हैं। इन्हें क्षार (bases) कहा जाता है और इन्हें A, T, C, और G में संक्षिप्त किया जाता है। मानव जीन समूह में, प्रत्येक अनोखे व्यक्ति के लिए विशेष क्रम में गुणसूत्रों के साथ लगभग 3 अरब क्षार (bases) को व्यवस्थित किया गया है। हमारी कोशिकाओं में से प्रत्येक कोशिका में उपस्थित मानव जीन समूह के आकार का विचार पाने के लिए, निम्नलिखित सदृश्यता पर विचार कीजिए: यदि मानव जीन समूह के DNA अनुक्रम को किताबों में संकलित किया जाता, तो उन सब को धारण करने के लिए मैनहैटन टेलीफोन बुक (प्रत्येक में 1000 पन्ने) के आकार की 200 पुस्तक श्रृंखलाओं के बराबर की किसी चीज़ की आवश्यकता होती। किसी व्यक्ति के जीन समूह अनुक्रम में 3 अरब क्षार को ज़ोर से (बिना रुके) पढ़ने के लिए लगभग 9.5 वर्ष लगेंगे। इसकी गणना 10 क्षार (bases) प्रति सेकंड के पढ़ने के दर से की गई है, जो 600 क्षार/मिनट, 36,000 क्षार/घंटा, 864,000 क्षार/दिन, 315,360,000 क्षार/वर्ष के बराबर है।[4]

आनुवांशिक सूचना की सामग्री जो *प्रत्येक मानव कोशिका में मौजूद* होती है वह 200 पुस्तक श्रृंखलाओं के बराबर है, प्रत्येक का आकार मैनहैट्टन टेलीफोन पुस्तक के समान है! उसे क्रम से पढ़ने के लिए 9.5 साल लगेंगे! प्रत्येक जीवित जीव में जानकारी की कितनी चौंका देनेवाली मात्रा शामिल है। यह स्पष्ट होना चाहिए कि उस जानकारी की भारी मात्रा के लिए बौद्धिक स्रोत होना चाहिए जो मानव आनुवंशिक कोड में शामिल है। न्यायसंगत तर्क कुछ इस तरह दिखाई देता है:

आधारवाक्य 1:	सूचना का एकमात्र स्रोत कोई बुद्धिमान व्यक्ति है।
आधारवाक्य 2:	मानव जीन समूह में बड़ी मात्रा में जानकारी शामिल होती है।
निष्कर्ष:	इसलिए, मानव जीन समूह का स्रोत एक बुद्धिमान व्यक्ति है।

एक बार फिर से, यदि इस तर्क में दो आधारवाक्य भी सही हैं, और तर्क की संरचना प्रमाणिक है, तो निष्कर्ष का आवश्यक रूप से अनुसरण अवश्य करना चाहिए। एक पल के लिए इसके बारे में सोचिए। क्या इस तर्क के प्रति निष्कर्ष का कोई निकास द्वार है? यह निष्कर्ष निर्विवादित है। यहाँ पर एक बार फिर से, नास्तिकों और अनीश्वरवादियों को उस स्पष्ट निष्कर्ष को नकारने के लिए असहज और तर्कहीन स्थिति में छोड़ दिया गया है कि मनुष्यों को बुद्धिमान प्राणी के द्वारा सृजा गया था। मानव जीन समूह को बनानेवाले को बहुत ही बुद्धिमान प्राणी होना होगा। मसीही लोग कहते हैं कि यह परमेश्वर है।

आमतौर पर, इन किस्मों के न्यायसंगत तर्क का सामना करते समय, नास्तिक विषय बदलने में बहुत फुर्तीले होते हैं, परन्तु विषय को बदलना उपर्युक्त तर्कसंगत तर्क को अप्रमाणिक नहीं करेगा।

पृथ्वी से अनंतकाल तक

कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय जिन्हें लोग अपने जीवनों में ले सकते हैं वे परमेश्वर के बारे में उनके दृष्टिकोण के चारों ओर घूमते रहते हैं। पूर्वधारणा के रूप में नास्तिकवाद या अनीश्वरवाद से आरंभ करके जीवन में पथक्रम की प्रगति को अंकित करना, बाद में अनेक गलत निर्णयों की ओर ले जाएगा क्योंकि वे साफ तौर पर गलत हैं।

दो
क्रमिक विकास: एक गलत सिद्धांत

यदि क्रमिक विकास सचमुच में यह है कि इस प्रकार मनुष्य उत्पन्न हुए थे, तो मानवता की उत्पत्ति के बारे में बाइबल की कहानी झूठी होनी चाहिए, क्योंकि क्रमिक विकास और उत्पत्ति अनेक स्तरों पर एक-दूसरे का खण्डन करते हैं।

मसीहियत और क्रमिक विकास (evolution) के बीच परस्पर विरोधी अन्तर

उत्पत्ति में लिखा है कि सर्वसामर्थी परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरुप में सृजा था। उत्पत्ति कहती है कि मानव प्राणी अपने शरीरों से बढ़कर हैं; उनके पास अनंतकालिक तत्व है जिसे आत्मा कहते हैं। उत्पत्ति कहती है कि परमेश्वर ने जटिल जीवों और पौधों की सृष्टि की थी जो उनके इच्छित वातावरण के अनुसार पूर्ण विकसित थे। अत्यंत संभावना है कि क्रमिक विकास के सिद्धांत के समर्थक इन सभी चीज़ों को नकारेंगे।

कुछ लोगों ने कोशिश की है कि परमेश्वर के विषय में बाइबल के दृष्टिकोण का मेल क्रमिक विकास के सिद्धांत के साथ करें, परन्तु वास्तव में, उत्पत्ति और क्रमिक विकास के सिद्धांत के बीच परस्पर विरोधी अन्तर हैं, और हर एक मोड़ पर वे एक दूसरे का खण्डन करते हैं। निश्चित रूप से, इसका अर्थ यह है कि या तो उत्पत्ति या क्रमिक विकास का सिद्धांत गलत है। यह भी तर्कसंगत रूप से संभव है कि उत्पत्ति और क्रमिक विकास दोनों के सिद्धांत गलत हों। उनमें से प्रत्येक को उसकी योग्यता के आधार पर विचार करना चाहिए। इस अध्याय में क्रमिक विकास के सिद्धान्त की प्रमाणिकता पर, और बाइबल की प्रमाणिकता पर विचार किया जाएगा, जिसमें उत्पत्ति शामिल है, अध्याय 3 लेकर से 5 तक विचार किया जाएगा।

क्रमिक विकासवादियों के अनुसार जीवन की उत्पत्ति

आइए हम इस बात का सार प्रस्तुत करने के द्वारा आरंभ करें कि क्रमिक विकास के सिद्धांत के समर्थक आमतौर पर मानवता की उत्पत्ति के बारे में क्या कहते हैं। बहुत लम्बे समय पहले, परमाणु अणुओं में संयुक्त हो गए थे, और वे अणु और अधिक जटिल अणुओं को आकार देने के लिए संयुक्त हो गए थे। फिर एक दिन, अरबों साल पहले, ये अणु संगठित हुए और पहले जीवित जीवों के रूप में जीवित हुए। लगभग तीन अरब साल पहले, अणुओं और परमाणुओं के अनुकूल जोड़ के माध्यम से, सरल कोशिकाओं ने आकार लिया था। फिर और अधिक जटिल कोशिकाओं ने आकार लिया था। अरबों वर्षों में बेतरतीब उत्परिवर्तनों (random mutations) के माध्यम से, ये सरल जीवित रूप क्रमिक परिवर्तनों की लम्बी श्रृंखला के द्वारा जीवित जीव-पौधों में रूपान्तरित हो गए और अस्तित्व में आए।

क्रमिक विकास सिद्धांत के अनुसार, यह सब प्राकृतिक चयन के माध्यम से घटित हुआ था जो अरबों वर्षों तक बेतरतीब उत्परिवर्तनों पर धीरे धीरे काम करता रहा था। चूंकि सभी जीवन बस अणुओं के

उचित जोड़ और उत्परिवर्तन (mutation) के बेतरतीब संयोगों का परिणाम है, तो जीवन के परे कुछ भी नहीं है। मनुष्य उस तत्व से अधिक और कुछ नहीं है जो उन्हें बनाता है, अतः जब वे मर जाते हैं, तो यह उनके अस्तित्व का अंत है। मनुष्य में कोई प्राण या आत्मा नहीं है, अतः जीवन के बाद कुछ नहीं है। मानव जीवन बस खत्म हो जाता है। लाशें एक बार फिर से सरल पदार्थों और तत्वों में विघटित हो जाती हैं, और क्रमिक विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ जाती है।

क्रमिक विकास परमेश्वर को खारिज करता है?

यदि समस्त प्राणियों का क्रमिक विकास प्राकृतिक चयन के माध्यम से हुआ था जो बेतरतीब उत्परिवर्तनों पर काम करता है, तो परमेश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। हम क्रमिक विकास के बारे में सुनने के इतने आदी हो गए हैं कि अनेक लोग इसे बस एक तथ्य के रूप में स्वीकार करते हैं। यहाँ तक कि कुछ वैज्ञानिक क्रमिक विकास के सिद्धांत की ओर "क्रमिक विकास के तथ्य" के रूप में भी संकेत करते हैं, भले ही विज्ञान में, ऐसे सिद्धांतों को कभी सिद्ध नहीं किया जा सकता है। प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग वर्णन करते हैं कि यहाँ तक कि एक दोहराया गया अवलोकन भी अत्यंत भव्य सिद्धांत को नष्ट कर सकता है।[5] क्या क्रमिक विकास का सिद्धांत वास्तव में एक तथ्य है?

क्या क्रमिक विकास मानव जीन समूह को बना सकता है?

कदाचित् क्रमिक विकास के सिद्धांत की प्रमाणिकता को चुनौती देने हेतु सर्वोत्तम तर्कों में से एक को पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका है। मानव जीन समूह में बड़ी मात्रा में जानकारी समाविष्ट होती है, जो केवल बुद्धिमत्ता का उत्पाद हो सकता है, जैसा अध्याय 1 में दिखाया गया था। यदि क्रमिक विकासवादियों (evolutionists) के दावे सच होते, तो मानव जीन समूह को बेतरतीब उत्परिवर्तनों का परिणाम होना होगा।

निम्नलिखित सरल बेतरतीब अवसर प्रयोग पर विचार कीजिए। आइए मान लेते हैं कि आप मानव जीन समूह के लिए सभी तीन अरब प्रोटीन क्षार (bases) को विशाल बैग में रखते हैं, जिनका प्रतिनिधित्व A, T, C और G अक्षरों के द्वारा किया जाता है। एक बार में बैग से बाहर निकालने पर मानव जीन समूह के सम्पूर्ण तीन अरब क्षार अनुक्रम के लिए सही अनुक्रम में होने की क्या संभावनाएं हैं? आप जितनी चाहे उतनी बार कोशिश कर सकते हैं परन्तु जगत की सम्पूर्ण आयु में इसे बस एक बार करने की संभावना वस्तुतः शून्य है।

बेतरतीब प्रक्रियाओं के माध्यम से DNA जैसी जीवन की जटिल संरचनाओं के निर्माण को समझाने की कठिनाई की अभिपुष्टि के रूप में, "...जीवन-की-उत्पत्ति के अधिकांश शोधकर्ताओं ने निर्णय लिया है कि वे ऐसे अन्य सिद्धांतों पर विचार करें जो संभावनाओं पर बहुत अधिक आश्रित नहीं होते हैं।"[6]

आपको एक सम्पूर्ण कोशिका की आवश्यकता होती है इससे पहले कि उसका क्रमिक विकास हो

मान भी लें कि क्रमिक विकास वास्तव में हुआ है, फिर भी इससे पहले कि यह घटित हो, आपको सम्पूर्ण, क्रियाशील और जीवित जीव की आवश्यकता होगी। *क्रमिक विकास कथित रूप से प्राकृतिक चयन के माध्यम से काम करता है जो बेतरतीब उत्परिवर्तनों पर संचालित होता है। जब तक आपके पास एक जीवित जीव ना हो कि उसके साथ शुरू करें, तब तक उत्परिवर्तन के लिए कुछ भी नहीं है। अतः स्पष्ट रूप से, प्रथम एक-कोशीय जीव की उत्पत्ति के लिए क्रमिक विकास कोई स्पष्टीकरण नहीं हो सकता है।*

लेखक और दार्शनशास्त्री स्टीफन मेयर अनुमान लगाते हैं कि परमाणुओं की बेतरतीब जमघट के माध्यम से सरल प्रोटीन अणु को आकार देने की संभावना 10^{125} में एक अवसर है या एक के बाद उसके

साथ 125 शून्य में एक अवसर है। मेयर ने ध्यान दिया है कि एक साधारण कोशिका को बनाने के लिए 300 से 500 प्रोटीन अणुओं की आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी के ठण्डे होने और प्रथम साधारण कोशीय जीव के प्रकटीकरण के बीच में लगभग केवल 100 मिलियन वर्ष बीते थे।[7] महज 100 मिलियन वर्षों में एक साधारण कोशिका के जमघट के अवसर की विषमता इतनी खराब है कि यह सचमुच में चमत्कारीय होगा यदि यह बेतरतीब माध्यमों के द्वारा घटित होता—परन्तु क्रमिक विकास चमत्कारों की अनुमति नहीं देता है। स्पष्ट रूप से, प्रथम जीवित कोशिका के सृजन में सृष्टिकर्ता की ओर संकेत किया गया है। क्रमिक विकास के समर्थकों ने ऐसे विश्वसनीय विकल्पों को प्रदान नहीं किया है जिनका समर्थन प्रमाण के द्वारा किया जाता है।

तिनकों का सहारा लेना

इन समस्याओं को पहचानते हुए कुछ वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि पहली कोशिकाएं उल्कापिंडों पर सवार होकर पृथ्वी पर आई थीं। मान लीजिए वे आई थीं (ऐसा नहीं है कि कोई प्रमाण है कि वे आई थीं)। यह केवल इस सवाल को कि किस प्रकार पृथ्वी पर जीवन का आरंभ हुआ, आगे किसी और दुनिया में ले जाता है, जहाँ पर भी बेतरतीब अवसर के लिए जीवित कोशिका को उत्पन्न करने की कोई बेहतर संभावना नहीं होगी। जीवन की शुरुआत में सृजनात्मक बल स्पष्ट है।

स्पष्ट रूप से बड़ी समस्या: जीवाश्म सटीक नहीं बैठते हैं

ऐसे जीवाश्म जिन्हें पिछले अनेक सैकड़ों सालों से भूमि से खोदकर निकला गया है वे हमें सुदूर अतीत में प्रजातियों के विकास और उनकी उपस्थिति के बारे में बताते हैं। इन जीवाश्म खोजों की ओर "जीवाश्म रिकॉर्ड" के रूप में संकेत किया गया है। जीवाश्म रिकॉर्ड क्रमिक विकास के सिद्धांत का समर्थन नहीं करता है, जैसा क्रमिक विकास के कुछ सबसे प्रभावशाली समर्थकों के शब्दों के माध्यम से दर्शाया जाएगा।

क्रमिक विकास के सिद्धांत के अनुसार, हमें अपेक्षा करनी चाहिए कि "बीच की" प्रजातियों के ठोस जीवाश्म के अवशेषों को ढूंढें, मान लीजिए, उदाहरण के लिए, समुद्री जीव भूमि के पशुओं में रूपान्तरित हो गए। यहाँ तक कि आज भी, हमें प्रकृति को भ्रम में देखना चाहिए चूंकि मौजूदा प्रजातियां नए प्रकार की प्रजातियों में परिवर्तित हो जाती हैं। इस निरन्तर परिवर्तनकाल और प्रजातियों के भ्रम के बजाय, जो कुछ हम पाते हैं वह जीवाश्म रिकॉर्ड में अच्छी तरह से परिभाषित प्रजातियां हैं जो पिछले पूर्वज से क्रमिक विकास के किसी प्रमाण के बिना पूर्ण विकसित होकर प्रगट होती हैं। समूचे समय के दौरान, प्रजातियां या तो विलुप्त हो जाती हैं या आज के दिन तक ठीक वैसी ही बनी रहती हैं जैसे वे मूल रूप में प्रगट हुई थीं। यह चार्ल्स डार्विन के लेखों से स्पष्ट होता है जिसने अपने स्वयं के सिद्धांत के बारे में इस चिंता को उत्पन्न किया था, और आधुनिक प्रस्तावकों के लेखों में भी स्पष्ट होता है जैसे स्टीफन जे गोउल्ड और रिचर्ड डॉकिंस, जैसे नीचे दर्शाया जाएगा।

कैम्ब्रियन धमाका: क्रमिक विकास की दुर्गम समस्या

जैसा ऊपर ध्यान दिया गया है, क्रमिक विकास का सिद्धांत पूर्वानुमान लगाता है कि जीव का आरम्भ एक कोशिका से हुआ, और वह विकसित हुई और लम्बी समयावधि के दौरान अनेक छोटे छोटे संशोधनों के माध्यम से नई प्रजातियों में परिवर्तित हो गए। क्या होता यदि प्रजातियों की बड़ी तादाद जीवाश्म रिकॉर्ड में छोटी समय अवधि में अपने पिछले पूर्वजों से क्रमिक विकास के किसी भी चिह्न के

बिना दिखाई देती? क्या इसका अर्थ यह नहीं होगा कि उनकी उपस्थिति के लिए क्रमिक विकास स्पष्टीकरण नहीं हो सकता है? यह बिलकुल वही समस्या है जिसका सामना पृथ्वी के इतिहास में एक समयावधि का वर्णन करने में क्रमिक विकासवादियों के द्वारा किया जाता है जिसे "कैम्ब्रियन विस्फोट" कहा जाता है।

कैम्ब्रियन विस्फोट लगभग 530 मिलियन वर्ष पहले घटित हुआ था। यह भौगोलिक रूप से छोटी समय अवधि है जहाँ पृथ्वी पर बड़ी संख्या में जटिल, एवं बहु-कोशीय जीव प्रगट हुए थे। इसकी कालावधि भौगोलिक रूप से तात्कालिक थी जो पांच से दस मिलियन वर्ष तक बनी रही। इस छोटी समयावधि में, अधिकांश पशु समुदाय (पशु समूह) जो आज मौजूद हैं वे पृथ्वी पर प्रगट हुए थे। ऐसे जीव जो कैम्ब्रियन विस्फोट के दौरान शीघ्रता से प्रगट हुए थे उनमें कीड़े-मकौड़े, सीपदार मछली, स्टार फिश, कृमि और रीढ़वाले प्राणी शामिल हैं।[8]

कैम्ब्रियन विस्फोट क्रमिक विकास के सिद्धांत के लिए गंभीर समस्या प्रस्तुत करता है। जटिल जीव क्रमिक विकास के लिए पर्याप्त समय के बिना प्रगट हुए थे। समूचा समुदाय और श्रेणी बिना किसी पूर्वज के प्रगट हुआ था। ऐसे जीव जो कैम्ब्रियन विस्फोट से पहले मौजूद थे वे साधारण एकल और बहु-कोशीय जीव थे जिनका ऐसे जीवों से कोई पैतृक लिंक नहीं था जो कैम्ब्रियन विस्फोट के दौरान प्रगट हुए थे। संक्षेप में, परिवर्तनकालिक जीवाश्म (ऐसे प्रजातियों के जीवाश्म जो परिवर्तन से गुज़रते हैं जो नई प्रजातियों में परिणित हो जाते हैं) जिनसे अपेक्षा की जाती यदि कैम्ब्रियन विस्फोट के जीव जिनका आगमन क्रमिक विकास के मार्ग से दृश्य पर हुआ था वे अस्तित्वहीन होते।[9]

कुछ वैज्ञानिकों ने तर्क दिया है कि ऐसे जीव जो कैम्ब्रियन विस्फोट से ठीक पहले मौजूद थे वे ठोस जीवाश्म नहीं बने थे क्योंकि उसके पास कोमल शरीर थे। यह तर्क विफल हो गया है चूंकि जीवाश्म रिकॉर्ड में प्रारम्भिक भौगोलिक युगों के छोटे, कोमल-शरीरवाले जीवों को दर्शाया गया है।[10]

क्रमिक विकास का सिद्धांत, जैसा डार्विन के द्वारा कल्पना की गई थी, कैम्ब्रियन समयावधि में प्राणियों की त्वरित उपस्थिति को समझाने में असफल हो गया है। तो क्यों डार्विन का असमर्थित सिद्धांत आधुनिक विज्ञान पर इतनी मज़बूत पकड़ बनाए रखता है? जवाब के लिए आगे पढ़ें।

डार्विन यह स्वीकार करता है कि जीवाश्म रिकॉर्ड उसके सिद्धांत का समर्थन नहीं करता है

डार्विन जानता था कि जीवाश्म रिकॉर्ड उसके सिद्धांत का समर्थन नहीं करता था यहाँ तक कि 1860 के दशक में भी। *ऑरिजिन ऑफ स्पीसीस (प्रजातियों की उत्पत्ति)* में, डार्विन जीवाश्म रिकॉर्ड में परिवर्तनकालिक रूपों की कमी पर अपनी चिंता व्यक्त करता है। वह कहता है :

> ... यदि प्रजातियां संवेदन शून्यता से उन्नत पदक्रमों के द्वारा अन्य प्रजातियों से आई हैं, तो हम हर जगह असंख्य परिवर्तनकालिक रूपों को क्यों नहीं देखते हैं? जैसा हम प्रजातियों को देखते हैं, उनको अच्छी तरह से परिभाषित किए जाने के बजाय सम्पूर्ण प्रकृति भ्रम में क्यों नहीं है?[11]

उसके स्वयं के शब्दों से, यह स्पष्ट है कि डार्विन समझ गया था कि उसके सिद्धांत के लिए प्रमाण की गंभीर रूप से कमी थी। अमरीकी गृहयुद्ध के ठीक बाद लिखते हुए, डार्विन ने अनुमान लगाया था कि जीवाश्मों की भविष्य की खोज उसके सिद्धांत की पुष्टि करेंगी। परन्तु क्या स्थिति ऐसी है? साफ तौर पर नहीं, प्रख्यात वैज्ञानिकों के रूप में, गोउल्ड और डॉकिंस नीचे पुष्टि करते हैं।

गोउल्ड 1980 के दशक में जीवाश्म समस्या को दोहराते हैं

1980 के दशक से 100 वर्ष और अधिक आगे बढ़ाइए। उस समय तक, निश्चित रूप से, जीवाश्म

वैज्ञानिकों ने डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धान्त का समर्थन करनेवाले प्रमाण को ढूंढ़ लिया होगा। फिर भी, हम प्रमुख जीवाश्म वैज्ञानिक और हार्वर्ड प्रोफेसर स्टीफन जे गोउल्ड को पाते हैं जो जीवाश्म रिकॉर्ड में परिवर्तनकालिक रूपों की इसी कमी का वर्णन करता है। इन *दी पांडास थम्ब में*, गोउल्ड लिखता है:

> जीवाश्म रिकॉर्ड में परिवर्तनकालिक रूपों की चरम दुर्लभता जीवाश्म विज्ञान के व्यापारिक भेद के रूप में निरन्तर बनी रहती है। क्रमिक विकासवादी वृक्ष जो हमारी पाठ्यपुस्तकों को सुशोभित करते हैं उनके पास केवल उनकी शाखाओं की गांठ के छोर पर आंकड़ा है; बाकी सब अनुमान है, चाहे जितना भी तर्कसंगत हो, फिर भी जीवाश्मों का प्रमाण नहीं है। फिर भी डार्विन क्रमिकतावाद के प्रति इतना जुड़ा हुआ था कि उसने अपने शब्दशः रिकॉर्ड को नकारने पर अपने समूचे सिद्धांत को ही दांव पर लगा दिया था...[12]

गोउल्ड पुष्टि करते हैं कि प्रजातियों के बीच क्रमिक परिवर्तनकाल जिसे डार्विन के द्वारा माना गया है उसे जीवाश्म रिकॉर्ड में नहीं पाया जाता है। वे इस तथ्य की ओर "जीवाश्म विज्ञान के व्यापारिक भेद" के रूप में संकेत करते हैं। गोउल्ड के अनुसार, डार्विन ने जीवाश्म रिकॉर्ड के स्पष्ट प्रमाण से इनकार किया था, जिसमें दर्शाया गया था कि जीवों का क्रमिक विकास छोटे छोटे क्रमिक चरणों के माध्यम से नहीं हुआ था।

गोउल्ड के अनुसार,

> अधिकांश जीवाश्म प्रजातियों का इतिहास दो विशेषताओं को शामिल करता है जो क्रमिकता (gradualism) के साथ विशेष रूप से असंगत हैं:
>
> 1. ठहराव (Stasis)। अधिकांश प्रजातियां पृथ्वी पर अपनी अवधि के दौरान कोई दिशात्मक परिवर्तन प्रदर्शित नहीं करती हैं। वे जीवाश्म रिकॉर्ड में प्रगट होते हैं जो बिलकुल उसी तरह दिखाई देते हैं जब वे गायब हो जाते हैं; रूपात्मक परिवर्तन सामान्यतः सीमित और दिशाहीन होता है।
> 2. आकस्मिक उपस्थिति। किसी भी स्थानीय क्षेत्र में, कोई प्रजाति अपने पूर्वजों के नियमित परिवर्तन के द्वारा धीरे धीरे उत्पन्न नहीं होती है; यह सब एक बार में और 'सम्पूर्ण आकार' में प्रगट होती है।'[13]

गोउल्ड के स्वयं के शब्दों से, हम सीखते हैं कि परिवर्तनकालिक रूप अत्यंत दुर्लभ हैं, क्रमिकता जीवाश्म रिकॉर्ड में नहीं पाई जाती है, और पहले के जीवों से क्रमिक विकास सम्बन्धी वंश से होकर गुज़रे बिना जीव दृश्य पर पूर्ण विकसित होकर में प्रगट होते हैं।

गोउल्ड ने क्रमिक विकास में अपने विश्वास को निरन्तर जारी रखा था, परन्तु उन्होंने डार्विन के क्रमिकता (gradualism) को त्याग दिया क्योंकि जीवाश्म रिकॉर्ड इसका समर्थन नहीं करता है। नई प्रजातियों के अचानक प्रकट होने का वर्णन करने हेतु माध्यम के रूप में "प्रतिबाधित संतुलन (punctuated equilibrium)" को आगे बढ़ाने के लिए परिवर्तनकालिक जीवाश्म के प्रमाण की कमी के द्वारा गोउल्ड को अगुवाई मिली थी।

प्रतिबाधित संतुलन के सिद्धांत के अनुसार, प्रजातियां समय की लम्बी अवधियों के लिए वैसी ही बनी रहती हैं, परन्तु कभी कभी त्वरित परिवर्तन की समय अवधियों से गुज़रती हैं। यह गोउल्ड का प्रयास है कि जीवाश्म रिकॉर्ड में समस्याओं का और परिवर्तनकालिक रूपों की कमी का वर्णन करके दूर किया जाए।

पृथ्वी से अनंतकाल तक

संक्षेप में, सृष्टिकर्ता की संभावना को स्वीकार किए बिना प्रतिबाधित संतुलन पृथ्वी के समूचे इतिहास के दौरान पूर्ण विकसित प्रजातियों की अचानक उपस्थिति को समझाने का महज एक प्रकृतिवादी तरीका है।

डॉकिन्स जीवाश्म समस्या की पुष्टि करते हैं और स्वीकार करते हैं कि क्रमिक विकास वास्तव में परमेश्वर का इनकार करने का एक माध्यम है

ऐसा है कि नास्तिकवाद उसकी जड़ है जो क्रमिक विकास के सिद्धान्त को कायम रखता है और उसे स्थायी बनाए रखता है जिसे प्रमुख क्रमिक विकासवादी और ऑक्सफोर्ड प्रोफ़ेसर रिचर्ड डॉकिंस के शब्दों में बहुत स्पष्ट रूप से बताया गया है। जीवाश्म रिकॉर्ड में अंतराल (प्रजातियों के बीच परिवर्तनकालिक रूपों की कमी) के बारे में बात करते हुए, गोउल्ड के प्रतिबाधित संतुलन (punctuated equilibrium) के विरुद्ध डॉकिंस कड़ाई से आलोचना करते हैं, परन्तु वे पुष्टि करते हैं कि अंतराल वास्तविक हैं। उनकी पुस्तक द *ब्लाइंड वॉचमेकर* से रिचर्ड डॉकिंस के शब्दों पर विचार कीजिए:

> यहाँ मेरा तात्पर्य यह है कि, जब हम इस परिमाण के अंतरालों (gaps) के बारे में बात कर रहे हैं, तो 'प्रतिबाधितवादियों (punctuationists)' और 'क्रमिकतावादी (gradualist)' की व्याख्याओं में किसी भी तरह का कोई अन्तर नहीं है। दोनों विचारधाराएं तथाकथित वैज्ञानिक सृष्टि-सिद्धान्त वादियों (creationists) को समान रूप से तुच्छ जानते हैं, और दोनों सहमत होते हैं कि प्रमुख अंतराल वास्तविक हैं, और यह कि जीवाश्म रिकॉर्ड में वे असली खामिया हैं। दोनों विचारधाराएं सहमत होते हैं कि कैम्ब्रियन युग में इतने जटिल जानवरों के किस्मों की अचानक उपस्थिति का एकमात्र वैकल्पिक स्पष्टीकरण ईश्वरीय रचना है, और दोनों इस विकल्प को अस्वीकार कर देंगे।[14]

डॉकिंस पुष्टि करते हैं कि जीवाश्म रिकॉर्ड में अंतराल क्रमिक विकास से असंगत हैं, और, जैसा डॉकिंस ने ऊपर सही रीति से अवलोकन किया, क्रमिक विकास का एकमात्र विकल्प ईश्वरीय सृष्टि है। यदि आप एक नास्तिक या अनीश्वरवादी वैज्ञानिक हैं, तो आप निश्चित रूप से उसके बारे में बात करना शुरू नहीं कर सकते हैं। कुछ वैज्ञानिकों के लिए क्रमिक विकास वास्तव में कुलमिलाकर इसके बारे में ही है—सृष्टिकर्ता की आवश्यकता को नकारने का सत्याभासी माध्यम। वे परमेश्वर को अनदेखा करने के लिए किसी भी चीज़ का आह्वान करेंगे और उसे आगे बढ़ाएंगे, अतः क्रमिक विकासवादी अपने विश्वास को ऐसे सिद्धान्त पर रखते हैं जिसका खण्डन साफ तौर पर जीवाश्म आंकड़े के द्वारा किया जाता है।

क्रमिक विकासवादी का मानना है कि जिसे उसने नहीं देखा है, वह उसे पैदा नहीं कर सकता है, और जीवाश्म आंकड़े के साथ समर्थन नहीं कर सकता है। क्रमिक विकास में उनका भरोसा विश्वास पर आधारित है, और इस प्रकार, कुछ वैज्ञानिकों का धर्म क्रमिक विकास है।

क्रमिक विकास के सम्बन्ध में तर्क स्पष्ट है

स्वयं क्रमिक विकासवादियों के शब्दों से, क्रमिक विकास गंभीर समस्याओं से भरा सिद्धांत है। आइए हम उसे पेश करते हैं जिसे सरल न्यायसंगत तर्क में कहा गया है:

आधारवाक्य 1:	यदि क्रमिक विकास का सिद्धांत सही है, तो जीवाश्म रिकॉर्ड को लगभग अनगिनित परिवर्तनकालिक रूपों को शामिल करना चाहिए।
आधारवाक्य 2:	क्रमिक विकासवादी जीवाश्म रिकॉर्ड में परिवर्तनकालिक रूपों

की "अति दुर्लभता" की पुष्टि करते हैं।

निष्कर्ष: इसलिए, क्रमिक विकास के सिद्धान्त की प्रमाणिकता अत्यंत संदिग्ध है।

हम श्रेणीबद्ध रूप से यह नहीं कहते हैं कि इस बिन्दु पर क्रमिक विकास का सिद्धांत गलत है उसका एकमात्र कारण यह है क्योंकि यह संभव है कि अनगिनत लापता परिवर्तनकालिक रूप नए जीवाश्म खोज में प्रगट हो सकते हैं। फिर भी, कठोर वास्तविकता यह है कि जबसे डार्विन ने अपने सिद्धांत को सूत्रबद्ध किया था तब से 150 साल हो गए हैं, और गोउल्ड और डॉकिंस जीवाश्म रिकॉर्ड में उन्हीं अंतरालों (gaps) और परिवर्तनकालिक रूपों की उसी कमी के बारे में शिकायत करते हैं। तस्वीर निराशाजनक है। कोई अन्य वैज्ञानिक सिद्धांत जो डेढ़ सदी से वैज्ञानिक खोज का वर्णन करने में असफल रहा हो, तो वह प्राकृतिक मौत मर गया होता, परन्तु क्रमिक विकास (evolution) को अनेक वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों के द्वारा निरन्तर बढ़ावा दिया जाता रहा है। क्यों? क्योंकि बहुत से वैज्ञानिक ईश्वरीय सृष्टि की संभावना को अस्वीकार करते हैं, इसलिए जैसा डॉकिंस ने अवलोकन किया है क्रमिक विकास एकमात्र अन्य विकल्प है। हम यहाँ वास्तविकता को देखते हैं कि सत्य की अपनी सम्पूर्ण खोज के बाद वैज्ञानिक प्रतिष्ठान इतने ग्रहणशील नहीं हैं।

अनेक विश्वसनीय वैज्ञानिक क्रमिक विकास की प्रमाणिकता पर सन्देह करते हैं

क्रमिक विकास के सिद्धांत के चारों ओर की शहरपनाह को धीरे-धीरे ढाया जा रहा है। अनेक सक्षम वैज्ञानिक ऊपर वर्णित कारणों की वज़ह से इसे संकट में पड़े सिद्धान्त के रूप में देखते हैं। 2001 से, समूचे संसार के सम्मानीय संस्थानों से सैकड़ों विश्वसनीय वैज्ञानिकों ने निम्नलिखित बयान के लिए अपने नामों से हस्ताक्षर किया है:

> **डार्विनवाद से वैज्ञानिक असहमति**
>
> हम जीवन की जटिलता के लिए ज़िम्मेदार बेतरतीब उत्परिवर्तन और प्राकृतिक चयन की क्षमता के दावों के प्रति सन्देह रखते हैं। डार्विन के सिद्धांत के लिए प्रमाण की सावधानीपूर्वक जांच को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आप, www.dissentfromdarwin.org पर जाकर *ए सईंटीफिक डिस्सेंट फ्रॉम डार्विनिस्म* के बारे में पढ़ सकते हैं और असहमत वैज्ञानिकों के नामों एवं पदों को देख सकते हैं।

नास्तिकवाद के समान, पूर्वधारणा के रूप में क्रमिक विकास के साथ शुरुआत करते हुए, जीवन में पथक्रम की प्रगति को अंकित करना बहुतों को गलत निर्णयों की ओर ले जाएगा चूंकि यह साफ तौर पर झूठा सिद्धान्त है।

तीन

बाइबल: ईश्वरीय पुस्तक—भविष्यवाणियां बहुत सारी सूचनाएँ देती हैं

सभी धार्मिक पुस्तकें जिन्हें पिछले कई हज़ार वर्षों के दौरान लिखा गया था क्या वे एक समान हैं? क्या बाइबल वाकई में *कुरान*, *मोर्मोन की पुस्तक* या हिन्दू वेदों से अलग नहीं है? क्या अन्य धार्मिक पुस्तकों के बीच बाइबल बस एक अन्य धार्मिक पुस्तक है जिसकी उत्पत्ति पर प्रश्न चिह्न है? मैं विश्वास करता हूँ कि इन सभी सवालों के जवाब को एक गूंजते हुए "नहीं" में दर्शाया जा सकता है।

हम कैसे जान सकते हैं कि कोई पुस्तक परमेश्वर की ओर से है?

जैसा इस अध्याय का शीर्षक सूचित करता है, मैं विश्वास करता हूँ कि बाइबल को परमेश्वर की ओर से सन्देश के रूप में दिखाया जा सकता है। बाइबल की ईश्वरीय उत्पत्ति के लिए अत्यंत अकाट्य प्रमाणों में से एक यह है कि इसमें सैकड़ों भविष्यवाणियां शामिल हैं जो सच साबित हुई हैं, जैसा विशिष्ट उदाहरणों के साथ नीचे दिखाया जाएगा।

भविष्यवाणी भविष्य के बारे में पूर्वकथन कथन है। बाइबल में लगभग 1,000 भविष्यवाणियां हैं। वे मसीहा (यहोवा के के सेवक जिसे मसीही लोग यीशु मसीह के रूप में पहचानते हैं—बाद में इस विषय पर और अधिक है), जातियों और लोगों के बारे में हैं, और संसार की घटनाओं, अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में हैं। पिछले कई हज़ार सालों में इन भविष्यवाणियों का एक बड़ा हिस्सा पूरा हो चुका है। बाकी को भविष्य के लिए नियुक्त किया गया है। ऐसा है कि बाइबल में भविष्यवाणियां शामिल हैं जो इसे अद्वितीय बनाती हैं, जैसा धर्मविज्ञानी नॉर्मन गेस्लर और विलियम निक्स संकेत करते हैं:

> अन्य पुस्तकें ईश्वरीय प्रेरणा का दावा करती हैं, जैसे कुरान, मोर्मोन की पुस्तक और वेद के कुछ भाग। परन्तु उन पुस्तकों में से किसी में भी पूर्वकथन सम्बन्धी भविष्यवाणी नहीं है। परिणामस्वरूप, पूरी हुई भविष्यवाणी बाइबल के अद्वितीय एवं ईश्वरीय अधिकार का एक मज़बूत संकेत है।[15]

मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर आपको और मुझे एक सन्देश भेज रहा है। उसने हमारे लिए एक रास्ता बनाया है ताकि हम जानें कि बाइबल मानवजाति के लिए उसके प्रकाशन का सच्चा दस्तावेज़ है। बाइबल का परमेश्वर तर्क का परमेश्वर है। वह लोगों को बुलाता है कि अपने अपने दिमाग का उपयोग करें जिससे उसे खोजें और पाएं।

अपनी स्वयं की व्यक्तिगत यात्रा में, मैंने स्पष्ट तौर पर पूरी हुई भविष्यवाणी को उस प्रमाण का अत्यंत अकाट्य हिस्सा पाया है जो यह दिखाता है कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है। और कौन भविष्य को पहले से बता सकता है और समय के विषय में 100% सही हो सकता है? नॉस्ट्राडेमस की भविष्यवाणियां अस्पष्ट और भ्रमित करनेवाली हैं और उसे तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है और उसे ऐसे कहा जा सकता है जैसे अनुवादक साबित करने का प्रयास कर रहा हो। इसके विपरीत, बाइबल की अनेक भविष्यवाणियां बिलकुल सीधी हैं, जैसा मैं सोचता हूँ जिसे आप नीचे देखेंगे।

भविष्यवाणी के प्रकार

बाइबल में भविष्यवाणियों के दो व्यापक समूह हैं: सामान्य भविष्यवाणियां और मसीहा के सम्बन्धित भविष्यवाणियां। सामान्य भविष्यवाणियां इस्राएल के सौभाग्य एवं भविष्य, यरूशलेम, प्राचीन संसार की जातियों, और अंत समय की घटनाओं से सम्बन्धित हैं। मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणियां यहोवा के आनेवाले सेवक से व्यवहार करती हैं जो दुःख उठाएगा और जगत के पापों की कीमत के रूप में मर जाएगा और बाद में पृथ्वी पर राज्य करेगा।

मसीही लोग विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह इतिहास में एक अद्वितीय व्यक्ति है और वह मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणियों का विषय है। मसीहा शब्द इब्रानी भाषा से आया है जिसका अर्थ है "अभिषिक्त जन।" जबकि ऐसे अन्य लोग हैं जिनके विषय में बाइबल कहती है कि वे अभिषिक्त हैं, परन्तु एक विशेष जन है, एक महान मसीहा है, जिसे अपने लोगों का उद्धारकर्ता होना है। बाइबल बिलकुल स्पष्ट है कि मसीहा को एक उद्धारकर्ता होना है न केवल यहूदियों के लिए बल्कि अन्यजातियों के लिए भी।[16] अंग्रेज़ी शब्द क्राइस्ट/Christ ग्रीक भाषा के शब्द *क्रिस्टोस*/*Christos* से आया है, जिसका अर्थ है मसीहा। यीशु को मसीहा कहा जाता है क्योंकि मसीही लोग विश्वास करते हैं कि वह पुराने नियम का मसीहा है, जिसका अभिषेक परमेश्वर के द्वारा किया गया था कि संसार में उद्धार लाए।[17] मसीहा के दोनों मिशनों को यीशु पूरा करता है। अपने प्रथम आगमन पर, यीशु दुःख उठानेवाले सेवक के रूप में आया था जो मानवजाति के पापों की कीमत चुकाने के लिए मर गया था। अपने दूसरे आगमन में, यीशु एक विजयी राजा और शक्तिशाली शासक के रूप में वापस आएगा जो पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा और शांति लाएगा।

भविष्यवक्ता कौन थे?

भविष्यवक्ता जीवन के सभी दौर से आए हुए लोग थे और उनके व्यक्तित्वों और व्यवसायों में व्यापक भिन्नता थी। उनमें जो कुछ एक समान था वह यह था कि वे लोगों के लिए परमेश्वर के प्रवक्ता थे। उन्हें सीधे तौर पर परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया था। परमेश्वर ने लोगों के लिए अपने सन्देश को भविष्यवक्ताओं पर प्रगट किया और उनके अनोखे व्यक्तित्व एवं योग्यता का उपयोग किया था कि लोगों को यह सन्देश बताया जाए। सन्देश को प्रायः ऐसे आचरण को सुधारने के उद्देश्य हेतु दिया जाता था जो परमेश्वर के लिए अप्रिय था। दर्शनों, स्वप्नों और प्रत्यक्ष बातचीत के माध्यम से भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त किया था। किसी भविष्यवक्ता की प्रामाणिकता एवं अधिकार की पुष्टि उसकी भविष्यवाणियों की सटीकता के द्वारा होती थी। कोई व्यक्ति जो झूठे पूर्वकथनों को बोलता था उसे झूठा भविष्यवक्ता माना जाता था। बाइबल के समयों में झूठे भविष्यवक्ताओं को हल्के तौर पर नहीं लिया जाता था। झूठी भविष्यवाणियां बोलने का दण्ड मृत्यु थी।[18] परमेश्वर नहीं चाहता था कि लोग व्यक्तिगत लाभ के लिए गलत रीति से दावा करें कि वे उसकी ओर से बोल रहे हैं और इस प्रकार लोगों को गुमराह करें।

भविष्यवाणियां कब लिखी गई थीं?

बाइबल में शामिल भविष्यवाणियों को लेखकों के जीवनकाल में लिखा गया था। बाइबल की भविष्यवाणी के एक बड़े खण्ड को मूसा, दाऊद और भविष्यवक्ताओं के पुराने नियम के लेखों में पाया जाता है। मूसा ने 1400 ईसा पूर्व से पहले पंचग्रन्थ (बाइबल की प्रथम पांच पुस्तकें) लिखा था। दाऊद के भजनों में कई भविष्यवाणियां शामिल हैं, और उसे लगभग 1000 ईसा पूर्व लिखा गया था। लिखनेवाले भविष्यवक्ता (यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल, होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गे, जकर्याह, और मलाकी) नौंवी और पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच की समयाविधि में रहे और अपनी पुस्तकों को लिखा।

पृथ्वी से अनंतकाल तक

आपको बाइबल के उदारवादी आलोचक मिल ही जाएंगे जो इन पुस्तकों के लेखन के लिए बाद की तिथियों का महत्वपूर्ण रूप से दावा करेंगे। वे इन पुस्तकों के लिए आम तौर पर बाद की तारीखों को नियुक्त करेंगे क्योंकि वे ऐसी पुस्तकों के स्पष्ट अलौकिक निहितार्थों को अस्वीकार करते हैं जो भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करते हैं, इसलिए नहीं कि प्रमाण उस दिशा में उनकी अगुवाई करता है। ऐसे तर्क जिन्हें उदारवादी विद्वानों ने बाद की तारीखों के समर्थन में दिया है उनका खण्डन बाइबल के रुढ़िवादी विद्वानों के द्वारा किया जाता है।

भले ही कोई व्यक्ति पुराने नियम की पुस्तकों के लेखन के लिए बाद की तारीखों को स्वीकार करे, फिर भी मृत सागर कुण्डल पत्र साफ तौर पर दर्शाते हैं (अध्याय 4 देखें) कि वे मसीह के जन्म से बहुत लम्बे समय पहले से मौज़ूद थे। इसलिए, मृत सागर कुण्डल पत्रों में हमारे पास निर्विवादित भौतिक प्रमाण है कि अनेक भविष्यवाणियों को उन घटनाओं से बहुत पहले लिखा गया था जिनकी वे भविष्यवाणी करते थे।

धर्म विज्ञानी के रूप में नॉर्मन गेस्लर अवलोकन करते हैं:

> यहाँ तक कि अत्यंत उदारवादी आलोचक भी मानते हैं कि भविष्यवाणी से सम्बन्धी पुस्तकों को मसीह से 400 साल पहले पूरा कर लिया गया था, और दानिय्येल की पुस्तक को लगभग 167 ईसा पूर्व पूरा कर लिया गया था। यद्यपि अच्छे प्रमाण हैं कि इन पुस्तकों में से अधिकांश की तिथि को काफी पहले निर्धारित किया जाए (भजनों और पूर्व भविष्यवक्ताओं में से कुछ आठवीं और नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में थे), फिर भी इससे क्या फर्क पड़ेगा? भविष्य में 200 साल बाद होनेवाली घटना की भविष्यवाणी करना उतना ही कठिन है जितना कठिन भविष्य में 800 साल बाद होनेवाली घटना की भविष्यवाणी करना है। दोनों आसाधारण कामों के लिए ईश्वरीय ज्ञान को छोड़ किसी और चीज़ की आवश्यकता नहीं होगी।[19]

बाइबल में पूरी हो चुकी भविष्यवाणी के दस विशिष्ट उदाहरण

मेरी दृष्टि में, किसी भी खुले विचारों वाले व्यक्ति को, इस अध्याय और अगले अध्याय में वर्णित पूर्ण भविष्यवाणियों को देखने के बाद, यह निष्कर्ष निकालना होगा कि बाइबल महज कोई मानवीय पुस्तक नहीं है। यदि बाइबल महज एक मानवीय पुस्तक नहीं है, तो उसे नज़दीकी ध्यान और सूक्ष्म परीक्षण की आवश्यकता है क्योंकि जो कुछ बाइबल में पाया जाता है उसे पृथ्वी की सतह के ऊपर किसी अन्य पुस्तक में पाया नहीं जा सकता है। आइए हम दस विशिष्ट भविष्यवाणियों और उनके पूरे होने पर एक नज़र डालने के द्वारा शुरुआत करते हैं। प्रत्येक भविष्यवाणी के लिए, मैंने भविष्यवाणी के लिखे जाने की अनुमानित तिथि, भविष्यवाणी का बाइबल पाठ, भविष्यवाणी की व्याख्या, और इसका सार प्रदान किया है कि यह किस प्रकार पूरा हुआ था।

भविष्यवाणी 1: इस्राएल का फिर से इकट्ठा होना

भविष्यवाणी की तिथि: 592-570 ईसा पूर्व

बाइबल पाठ: यहेजकेल 36:22-24 (साथ ही यहेजकेल 11:14-18)

> … "इस कारण तू इस्राएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है : हे इस्राएल के घराने, मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूँ जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहाँ तुम गए थे। मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उसके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा, तब वे जातियां जान

> लेंगी कि मैं यहोवा हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा, और देशों में से इकट्ठा करूंगा; और तुम को तुम्हारे निज देश में पहुंचा दूंगा।"

भविष्यवाणी का सार

पुराने नियम में इस्राएल के बारे में कई अद्भुत भविष्यवाणियां की गई हैं, परन्तु शायद सबसे आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों में से एक संसार के देशों से इस्राएल के लोगों का फिर से इकट्ठे होने की भविष्यवाणी है। मसीह के जन्म से पहले छठी शताब्दी की लेखनी में, परमेश्वर भविष्यवक्ता यहेजकेल के माध्यम से इस्राएल से कहता है कि उन्हें उन देशों और जातियों से एक बार फिर से पलिश्तीन के उनके अपने देश में लाया जाएगा जहाँ से उन्हें तितर-बितर कर दिया गया था।

पूर्ण होना

70 ईस्वी में, रोमन जनरल टाईटस ने यहूदी विद्रोह को कुचल दिया था और यरूशलेम के मन्दिर को नष्ट कर दिया था। कई यहूदी मारे गए थे, और इस्राएल में रहनेवाले यहूदी सारे संसार में तितर-बितर हो गए थे। लगभग 1800 वर्षों से, यहूदी पृथ्वी के सारे देशों में बिखरे हुए रहे। उन्हें कई स्थानों पर सताया गया था और उन्हें अक्सर उन देशों से निर्वासन का दुःख सहना पड़ा था जहाँ वे बस गए थे। यहूदियों के सिर्फ एक सामूहिक हत्याकांड में साठ लाख यहूदी मारे गए थे।

1800 के दशक में, सारे संसार से यहूदी लोगों ने इस्राएल में बसना शुरू कर दिया था। 1948 में, संयुक्त राष्ट्रों ने मतदान किया कि पलिश्तीन को यहूदी और पलिश्तिनी राज्य में विभाजित किया जाए। सभी विषमताओं के विरुद्ध, इस्राएल एक बार फिर से एक राष्ट्र बन गया था और तब से वह आक्रमण को झेल रहा है क्योंकि उसके पड़ोसियों में से कई अस्तित्व में होने के उसके अधिकार को नकारते हैं।[20] 1948 में अनेक राष्ट्रों से इस्राएल की ओर यहूदी के आने की विशालकाय लहर शुरू हो गई थी और यह आज के दिन तक जारी है।

भविष्यवाणी 2: मसीहा का जन्म स्थान

भविष्यवाणी की तिथि: 700 ईसा पूर्व

बाइबल पाठ: मीका 5:2-5:4

> हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादि काल से होता आया है ... और वह खड़ा होकर यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। ... वह पृथ्वी की छोर तक महान ठहरेगा।

भविष्यवाणी का सार

बैतलहम के छोटे एवं महत्वहीन नगर से एक अनन्तकालिक हस्ती आएगा (अर्थात् वह जो सृष्टि से पहले से अस्तित्व में है)। एप्राता बैतलहम का प्राचीन नाम है। हम सीखते हैं कि यह अनंतकालिक हस्ती इस्राएल का शासक होगा। वह सामर्थ और परमेश्वर के प्रताप के साथ उसके झुण्ड की चरवाही

करेगा, और उसकी महानता पृथ्वी के छोर तक फैलेगी।

पूर्ण होना

यीशु मसीह का जन्म बैतलहम में हुआ था। भविष्यवाणी का वह हिस्सा पूरा हो गया है। यीशु देह में परमेश्वर के रूप में और यहूदियों के राजा के रूप में आया था, और उसने इस तथ्य की पुष्टि पुन्तियुस पिलातुस के सामने अपनी जांच में की थी। मृतकों में से जी उठने के द्वारा यीशु ने साबित किया था कि वह परमेश्वर है (देखें अध्याय 7)। चूंकि यीशु परमेश्वर है, इसलिए वह एक अनंत्कालिक हस्ती है, अर्थात् वह जगत की उत्पत्ति से पहले अस्तित्व में था। चूंकि उसके प्रथम आगमन पर यहूदियों ने उसे अस्वीकार किया था, परन्तु उसके दूसरे आगमन पर पूरा संसार उसके प्रभुत्व के अधीन होगा।

भविष्यवाणी 3: यरूशलेम का विनाश

भविष्यवाणी की तिथि: 700 ईसा पूर्व

पाठ: मीका 3:9-12

> हे याकूब के घराने के प्रधानो, हे इस्राएल के घराने के न्यायियो, हे न्याय से घृणा करनेवालो और सब सीधी बातों को टेढ़ी-मेढ़ी करनेवालो, यह बात सुनो। तुम सिय्योन को हत्या करके और यरूशलेम को कुटिलता करके दृढ़ करते हो। उसके प्रधान घूस ले लेकर विचार करते, और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देता है, और भविष्यद्वक्ता रुपये के लिये भावी कहते हैं; तौभी वे यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, "यहोवा हमारे बीच में है, इसलिये कोई विपत्ति हम पर न आएगी।" इसलिये तुम्हारे कारण सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा, और यरूशलेम खण्डहरों का ढेर हो जाएगा, और जिस पर्वत पर भवन बना है, वह वन के ऊंचे स्थान–सा *हो जाएगा।*

भविष्यवाणी का सार

इस भविष्यवाणी को याकूब के घराने और उसके शासकों के लिए सम्बोधित किया गया है। पुराने नियम में, जब परमेश्वर ने याकूब को आशीष दी थी, तो उसने उसका नाम बदलकर इस्राएल रखा था। इस्राएल के बारह गोत्रों के बारह कुलपिता याकूब के पुत्र थे, अतः यह भविष्यवाणी इस्राएल के अगुवों को सम्बोधित है।

इस भविष्यवाणी में, सिय्योन और यरूशलेम समानार्थी हैं। प्रभु के लिए बोलते हुए भविष्यवक्ता मीका, याजकों, भविष्यवक्ताओं, और इस्राएल के अगुवों, और विशेष रूप से यरूशलेम अर्थात् इस्राएल की राजधानी के लोगों के अन्याय और बुरे मार्गों की निंदा करता है। शासक आत्मसंतुष्ट थे, यह सोचते हुए कि उनके पास यहोवा है जो उनके पक्ष में है। उनकी बुराई के कारण, परमेश्वर यरूशलेम और मन्दिर को नष्ट और खण्डहर होने की अनुमति देगा।

पूर्ण होना

नबूकदनेस्सर ने 605-562 ईसा पूर्व तक बेबीलोन साम्राज्य पर राज्य किया था। अपने शासन की शुरुआत से ही, नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को परेशान किया, लूटा और अन्ततः 586 ईसा पूर्व में उसे नष्ट कर दिया। अपनी विभिन्न निर्माणाधीन परियोजनाओं के लिए यहूदियों को गुलामों के रूप में इस्तेमाल करते हुए, उसने बड़ी संख्या में उन्हें निर्वासित किया और फिर से बसाया। यरूशलेम को लूट लिया गया, और मन्दिर के पीतल के खंभों को, साथ ही पीतल, सोने और चांदी के उपकरणों को तोड़ दिया गया और

बेबीलोन ले जाया गया। यरूशलेम के सारे घरों और मन्दिर को जला दिया गया। नबूकदनेस्सर की सेना ने यरूशलेम के चारों ओर की शहरपनाह को ढा दिया।[21] ईसा पूर्व 586 में यरूशलेम के विध्वंस से यरूशलेम को तब तक उजाड़ और वीरान छोड़ दिया गया, जब तक 538 ईसा पूर्व में फारस के राजा कुस्रू के द्वारा यहूदियों को मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिए वापस यरूशलेम आने की अनुमति नहीं दे दी गई। ईसा पूर्व 536 में लगभग 50,000 यहूदी यरूशलेम वापस लौट आए और वहाँ पहुंचकर उन्होंने मन्दिर के निर्माण का कार्य आरम्भ किया।

भविष्यवाणी 4: यहूदियों को बनाए रखना

भविष्यवाणी की तिथि: 1450-1410 ईसा पूर्व

पाठ: लैव्यव्यवस्था 26:41-45

यहूदियों के बारे में कहते हुए, परमेश्वर मूसा के माध्यम से बोलता है:

> … इसी कारण वह हमारे विरुद्ध होकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है। यदि उस समय उनका खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करे; तब जो वाचा मैंने याकूब के संग बांधी थी उसको मैं स्मरण करूंगा, और जो वाचा मैंने इसहाक से और जो वाचा मैंने अब्राहम से बांधी थी उनको भी स्मरण करूंगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूंगा। ... वे लोग अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे, इसी कारण से कि उन्होंने मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन किया था, और उनकी आत्माओं को मेरी विधियों से घृणा थी। इतने पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे तब मैं उनको इस प्रकार नहीं छोड़ूंगा, और न उनसे ऐसी घृणा करूंगा कि उनका सर्वनाश कर डालूं और अपनी उस वाचा को तोड़ दूं जो मैंने उनसे बांधी है; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ; परन्तु मैं उनकी भलाई के लिये उसके पितरों से बांधी हुई वाचा को स्मरण करूंगा; जिन्हें मैं अन्यजातियों की आंखों के सामने मिस्र देश से निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूं; मैं यहोवा हूँ।"

भविष्यवाणी का सार

पुराने नियम ने भविष्यवाणी की थी कि यहूदी जीवित बचे रहेंगे। परमेश्वर ने कहा था कि वह यहूदियों को दण्ड देगा यदि वे उसके अवज्ञाकारी होते हैं और अन्य देवताओं की उपासना करते हैं, तो परन्तु साथ ही उसने वादा भी किया था कि समूचे युगों के दौरान थोड़े से लोगों को बनाए रखेगा और उनकी सुरक्षा करेगा।

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में, परमेश्वर यहूदियों को उसके साथ संगति में बने रहने की शर्तों का वर्णन करता है। परमेश्वर पवित्र है, और वह अपने चुने हुए लोगों से, जिनके साथ उसने एक वाचा बांधी है, आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता की मांग करता है। परमेश्वर ने यहूदियों को आशीष देने की प्रतिज्ञा की थी यदि वे उसके और उसकी व्यवस्थाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहें, और उसने उन्हें दण्ड देने की प्रतिज्ञा की थी यदि वे अनाज्ञाकारीता करें। दण्ड देने में परमेश्वर का उद्देश्य स्पष्ट रूप से यह है कि अपने लोगों से पश्चाताप कराए ताकि वे स्वयं को परमेश्वर के सामने दीन करेंगे। परमेश्वर ने यहूदियों को कभी भी पूरी तरह नष्ट ना करने की प्रतिज्ञा की थी क्योंकि उसने उनके साथ एक वाचा बांधी थी—उसने वादा किया था कि यहूदियों के कुछ बचे हुए लोग हमेशा ही होंगे।

पूर्ण होना

यहूदी अपनी उत्पत्ति का मूल 4,000 वर्षों पहले अब्राहम से करते हैं। उस समय से कई साम्राज्य उदय हुए है, और कई गिर गए है और राजनैतिक सीमाओं को बनाया गया और फिर से बनाया गया है। ऐसे प्राचीन साम्राज्य आए और गए जिन्होंने यहूदियों पर विजय पाई और उन्हें उनकी अपनी ही भूमि से तितर-बितर कर दिया। उन्हें यूरोपीय देशों से बार-बार बाहर निकाला गया है जहाँ वे शरण की खोज करते थे। समूचे इतिहास के दौरान उन्हें सताया और जान से मारा गया है, और फिर भी वे आज के दिन तक जीवित बचे हुए हैं। संसार में किसी अन्य समूह ने 4,000 वर्ष की अवधि के दौरान अपनी राष्ट्रीय और धार्मिक पहचान को बनाकर नहीं रखा है। यह बात कि आज के दिन तक यहूदी जीवित बचे हुए हैं जो सचमुच में हैरान कर देनेवाली तो है, परन्तु इस भविष्यवाणी और अन्य भविष्यवाणियों के अनुसार इसकी पूरी तरह से अपेक्षा की जा सकती है।

आज के दिन तक यहूदियों का जीवित बचे रहना, विशेष रूप से 1948 में यहूदी राष्ट्र का पुनः अस्तित्व में आना, सचमुच में आश्चर्यजनक है। यकीनन जो कुछ मूसा ने यहूदियों के बारे में भविष्यवाणी की थी वह पूर्ण रीति से पूरी हो चुकी है!

भविष्यवाणी 5: इस्राएल के उत्तर दिशा के महत्वपूर्ण नगर सोर का विनाश

बाइबल पाठ: यहेजकेल 26:1-15

ग्यारहवें वर्ष के पहिले महीने के पहले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा : "हे मनुष्य के सन्तान, सोर ने जो यरूशलेम के विषय में कहा है, 'अहा, अहा! जो देश देश के लोगों के फाटक के समान थी, वह नष्ट हो गई! उसके उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊंगा।' इस कारण परमेश्वर यहोवा कहता है : 'हे सोर, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; और ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसी उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। वे सोर की शहरपनाह को गिराएंगी, और उसके गुम्मटों को तोड़ डालेंगी; और मैं उस पर से उसकी मिट्टी खुरचकर उसे नंगी चट्टान कर दूंगा। वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा; क्योंकि परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, और वह जाति जाति से लुट जाएगा; और उसकी जो बेटियां मैदान में हैं, वे तलवार से मारी जाएंगी। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।' " क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है : "देख, मैं सोर के विरुद्ध राजाधिराज बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर को घोड़ों, रथों, सवारों, बड़ी भीड़, और दल समेत उत्तर दिशा से ले आऊंगा। तेरी जो बेटियां मैदान में हों, उनको वह तलवार से मारेगा, और तेरे विरुद्ध कोट बनाएगा और दमदमा बांधेगा; और ढाल उठाएगा। वह तेरी शहरपनाह के विरुद्ध युद्ध के यंत्र चलाएगा और तेरे गुम्मटों को फरसों से ढा देगा। उसके घोड़े इतने होंगे, कि तू उनकी धूल से ढंप जाएगा, और जब वह तेरे फाटकों में ऐसे घुसेगा जैसे लोग नाकेवाले नगर में घुसते हैं, तब तेरी शहरपनाह सवारों, छकड़ों, और रथों के शब्द से कांप उठेगी। वह अपने घोड़ों की टापों से तेरी सब सड़कों को रौंद डालेगा, और तेरे निवासियों को तलवार से मार डालेगा, और तेरे बल के खम्भे भूमि पर गिराए जाएंगे। लोग तेरा धन लूटेंगे और तेरे व्यापार की वस्तुएं छीन लेंगे; वे तेरी शहरपनाह ढा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे; तेरे पत्थर और काठ, और तेरी धूल वे जल में फेंक देंगे। मैं तेरे गीतों का सुरताल बन्द करूंगा, और तेरी वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न देगी। मैं तुझे नंगी चट्टान कर दूंगा; तू जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा, और फिर बसाया न जाएगा; क्योंकि मुझ यहोवा ही ने यह कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है। "परमेश्वर यहोवा सोर से यों कहता है : तेरे गिरने के शब्द से जब घायल लोग कराहेंगे और तुझ में घात ही घात होगा, तब क्या टापू न कांप उठेंगे?"

भविष्यवाणी की तिथि: लगभग 586 ईसा पूर्व

भविष्यवाणी का सार

सोर के निवासियों ने इस्राएल के विनाश में आनंद लिया था। ऐसा करने पर परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा। यहेजकेल भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के आदेश को दर्ज़ किया है कि सोर को ऐसी "जातियों" के द्वारा बर्बाद किया जाएगा जिन्हें उसके विरुद्ध लाया जाएगा। सोर के द्वीप के हिस्से को खुरचा जाना था कि उसे नंगी चट्टान बनाया जाए और उसे नियुक्त किया जाए कि वह समुद्र के बीच में मछली पकड़ने के जालों को फैलाने का स्थान बन जाए। यहोवा ने घोषणा की थी कि नबूकदनेस्सर, अर्थात् बेबीलोन का राजा, मुख्य भूभाग पर निवास करनेवालों को मार डालेगा और घरों को नष्ट कर देगा। पत्थर और लकड़ी को पानी में फेंक दिया जाएगा, और सोर का पुनःनिर्माण कभी नहीं किया जाएगा।

पूर्ण होना

585 ईसा पूर्व से लेकर 572 ईसा पूर्व तक पन्द्रह वर्षों को नापते हुए, बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के मुख्य भूभाग को घेर लिया और अंततः उसे नष्ट कर डाला। बाद में 332 ईसा पूर्व में, यहेजकेल की भविष्यवाणी के 350 साल बाद, सिकन्दर महान ने सोर के द्वीप के भाग को घेर लिया और उसे नष्ट कर दिया था। उसने द्वीप की ओर पत्थर और लकड़ी की उन सामग्रियों से सेतू बनाकर उस तक पहुंच हासिल की थी जिन्हें मुख्य भूभाग से समुद्र में डाला गया था। जबकि सोर के आसपास के क्षेत्रों का पुन:र्निर्माण किया गया, परन्तु सोर नगर उजाड़ पड़ा रहा। यहाँ फिर से, सोर के बारे में बाइबल की भविष्यवाणी सम्पूर्ण रीती से पूरी हुई।[22]

भविष्यवाणी 6: बेतेल में मूर्ती पूजा की वेदी का शुद्धिकरण

बाइबल पाठ: 1 राजाओं 13:1-2

> तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था। उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यों पुकारा, "वेदी, हे वेदी! यहोवा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नामक एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी।"

भविष्यवाणी की तिथि: लगभग 930 ईसा पूर्व

भविष्यवाणी का सार

परमेश्वर का एक भविष्यवक्ता 300 साल पहले से भविष्यवाणी करता है कि दाऊद का योशिय्याह नामक पुत्र (दाऊद का एक वंशज), बेतेल में वेदी को मूर्तिपूजा से शुद्ध करेगा। वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों का बलिदान करेगा, और वेदी पर उनकी हड्डियों को जलाएगा।

पूर्ण होना

इस भविष्यवाणी की पूर्ति लगभग 620 ईसा पूर्व में हुई थी और इसे 2 राजा 23: 16–20 में दर्ज़ किया गया है।[23] जैसा सैंकड़ों साल पहले भविष्यवाणी की गई थी ठीक उसी के समान, यहूदा के राजा और दाऊद के वंशज योशिय्याह ने बेतेल में मूर्ति पूजा से मन्दिर को शुद्ध किया था। जैसा भविष्यवाणी की गई थी ठीक उसी के समान, योशिय्याह ने ऊंचे स्थानों के याजकों का वध किया और उनकी हड्डियां को बेतेल की वेदी पर जलाया था।

पृथ्वी से अनंतकाल तक

यह शायद हिंसक और भयंकर काम लग सकता है परन्तु इसे उस प्रकाश में सही ठहराया गया है कि यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। परमेश्वर ने उनके साथ एक वाचा बांधी थी कि यदि वे विश्वासयोग्य बने रहें, तो वे उसकी आशीष को बनाए रखेंगे। दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा में, परमेश्वर इस्राएलियों के लिए इस बात को स्पष्ट करता है कि उनके पास कोई और देवता नहीं होना चाहिए। बेतेल में मूर्ति पूजा एक घोर पाप था। ऊंचे स्थानों के याजकों ने लोगों को और इस्राएल जाति को भटका दिया था। वे इस्राएलियों की अनन्तकालिक नियति को प्रभावित कर रहे थे और इस प्रकार जाति को बचाने के लिए उन्हें नष्ट करने की आवश्यकता थी।

भविष्यवाणी 7: यीशु: संसार का उद्धारकर्ता

भविष्यवाणी की तिथि: 740- 680 ईसा पूर्व

बाइबल पाठ: यशायाह 49:5-6

> अब यहोवा जिसने मुझे जन्म ही से इसलिये रचा कि मैं उसका दास होकर याकूब को उसकी ओर लौटा ले आऊं अर्थात् इस्राएल को उसके पास इकट्ठा करूं, क्योंकि यहोवा की दृष्टि में मैं आदरयोग्य हूँ और मेरा परमेश्वर मेरा बल है, उसी ने मुझ से यह भी कहा है, "यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे जाति–जाति के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।"

भविष्यवाणी का सार

जैसा पहले ध्यान दिया गया था, याकूब के गोत्रों ने इस्राएल देश की रचना की थी। यशायाह भविष्यवक्ता के माध्यम से बोलते हुए, यहोवा का सेवक (मसीहा, अर्थात् यीशु) कहता है कि परमेश्वर ने उसे बताया है कि केवल यहूदियों के लिए उद्धार लाने से बढ़कर परमेश्वर के पास उसके लिए बड़ी योजनाएं हैं। सेवक का उद्देश्य यह होगा कि उद्धार को पृथ्वी के छोर तक, अर्थात् संसार के सभी देशों तक फैलाए।

पूर्ण होना

यीशु ने अपने स्वर्ग में उठाए जाने से पहले अपने चेलों को यह आज्ञा दी थी,

> "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो , और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। " (मत्ती 28:18-20)

यीशु के शिष्यों ने शीघ्रता से सुसमाचार का प्रकाश फैला दिया था, जिसका शुभ सन्देश है कि उद्धार उन सभी के लिए उपलब्ध है जो अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में सचमुच विश्वास करते हैं। कई मामलों में, शिष्यों ने उसे बोलने के लिए, जिसे वे सत्य मानते हैं, अपने जीवनों को जोखिम में डाला दिया था। अनेक शहीदों के रूप में मर गए क्योंकि उन्होंने यीशु के बारे में अपनी गवाही को त्यागने से इनकार कर दिया था (अध्याय 7 में इस विषय में और अधिक)। आज, यशायाह भविष्यवक्ता के वचन पूरे हुए हैं क्योंकि मसीहियत पृथ्वी पर वस्तुतः प्रत्येक देश में फैल चुका है, और इसका विस्तार निरंतर हो रहा है। संसार की जनसंख्या की लगभग 33% आबादी अब मसीही होने

का दावा करती है। ऐसे स्थानों में जहाँ कलीसिया पर अत्याचार किया जाता है, जैसे चीन और अफ्रीका, वहाँ तेज़ी से बढ़ोतरी हो रही है।

भविष्यवाणी 8: यहूदियों के 70 साल की बेबीलोन की बन्धुवाई की भविष्यवाणी

भविष्यवाणी की तिथि: 605 ईसा पूर्व

बाइबल पाठ: यिर्मयाह 25:8-11

> "इसलिये सेनाओं का यहोवा यों कहता है : तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, इसलिये सुनो, मैं उत्तर में रहनेवाले सब कुलों को बुलाऊंगा, और अपने दास बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा; और उन सभों को इस देश और इसके निवासियों के विरुद्ध और इसके आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊंगा; और इन सब देशों का मैं सत्यानाश करके उन्हें ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इन्हें देखकर ताली बजाएंगे; वरन् ये सदा उजड़े ही रहेंगे, यहोवा की यह वाणी है। मैं ऐसा करूंगा कि इन में न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, और न दुल्हे या दुल्हिन का, और न चक्की का भी शब्द सुनाई पड़ेगा और न इन में दिया जलेगा। सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियां सत्तर वर्ष तक बेबीलोन के राजा के अधीन रहेंगी।"

भविष्यवाणी का सार

इस्राएल के उत्तरी भाग को अश्शूरियों के द्वारा सौ साल पहले ही नष्ट कर दिया गया था। जो कुछ इस्राएल के पास बच गया था वह यहूदा का दक्षिणी राज्य था, जिसकी राजधानी यरूशलेम थी। यिर्मयाह भविष्यवक्ता के माध्यम से, परमेश्वर ने घोषणा की थी कि बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के द्वारा यहूदा पर हमला किया जाएगा और उसे नष्ट कर दिया जाएगा। जीवन और उसके आनन्द की सब ध्वनियों को भयानक तरीके से खामोश किया जाएगा, और यहूदी 70 वर्षों के लिए बेबीलोन के राजा के गुलाम बन जाएंगे।

पूर्ण होना

ईसा पूर्व 605 में शुरुआत करते हुए, यहूदियों को 70 वर्षों तक बेबीलोन में बन्दी बनाकर रखा गया था। यहूदी तब भी वहीं थे जब फारसियों के द्वारा बेबीलोन को जीत लिया गया था। 538 ईसा पूर्व में, फारस के राजा कुस्रू ने बेबीलोन पर विजय प्राप्त की और एक आदेश जारी किया जिसमें यहूदियों को अनुमति दी गई कि वे मन्दिर का पुन:निर्माण करने के लिए अपने देश लौट सकते हैं। अपने निर्वासन की शुरुआत के 70 साल बाद, 536 ईसा पूर्व में वे यरूशलेम पहुंचे, और इस प्रकार भविष्यवाणी ठीक वैसे ही पूरी हुई जैसे उसे दिया गया था।

भविष्यवाणी 9: फारस के राजा का नाम जो यहूदियों को मुक्त करेगा 150 वर्ष पहले ही दिया जाना

भविष्यवाणी की तिथि: 740-680 ईसा पूर्व

पृथ्वी से अनंतकाल तक

बाइबल पाठ: यशायाह 45:1-13

> यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है, मैंने उस के दाहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके सामने जातियों को दबा दूं और राजाओं की कमर ढीली करूं, उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूं कि वे फाटक बन्द न किए जाएं। "मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊंची ऊंची भूमि को चौरस करूंगा" ... यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है वह यों कहता है, "क्या तुम आनेवाली घटनाएं मुझ से पूछोगे? क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों के विषय मुझे आज्ञा दोगे? मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैंने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है। मैं ही ने उस पुरुष को (कुस्रू को) धार्मिकता में उभारा है और मैं उसके सब मार्गों को सीधा करूंगा; वह मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बन्दियों को बिना दाम या बदला लिए छोड़ देगा," सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

भविष्यवाणी का सार

यशायाह भविष्यवक्ता के माध्यम से बोलते हुए, परमेश्वर संसार के ऐसे शासक के रूप में कुस्रू का नाम लेता है जिसे वह खड़ा करेगा कि बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के हाथों से हुए निर्वासन से, जो अभी भी भविष्य की बात थी, अपने पुत्रों (यहूदियों) को स्वतन्त्र करे। जब यशायाह ने लगभग 700 ईसा पूर्व में इस भविष्यवाणी को लिखा था, तब भी अश्शूरी संसार की प्रबल ताकत थे, बेबीलोन साम्राज्य का अभी भी उदय और पतन होना था, और फारस के भविष्य का महान राजा, कुस्रू, जो बेबीलोन पर विजय प्राप्त करेगा और यहूदियों को स्वतन्त्र करेगा, वह अभी तक पैदा भी नहीं हुआ था।

पूर्ण होना

अश्शूरियों को नबूकदनेस्सर और बेबीलोनियों विध्वंस कर दिया था। ईसा पूर्व 539 में बेबीलोन साम्राज्य फारस साम्राज्य के शासक कुस्रू महान से पराजित हो गया। जैसा कि ऊपर ध्यान दिया गया है, ईसा पूर्व 538 में कुस्रू ने एक आदेश जारी किया था जिसमें यहूदियों को अनुमति दी गई थी कि वे मन्दिर का पुन:निर्माण करने के लिए अपने मातृभूमि में लौट सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसा यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा भविष्यवाणी की गई थी। "साइरस सिलेंडर," एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक शिल्पकृति है जिसे बेबीलोन में खोजा गया था, उसमें कुस्रू के आज्ञापत्रों का अभिलेख है और उसमें फारस की नीति के बारे में बताया गया है जो कहती है कि विस्थापित लोग अपने मन्दिर और पवित्रस्थान को फिर से बनाने के लिए अपनी-अपनी मूल भूमियों में लौट सकते हैं।[24] इस प्रकार भविष्यवाणी पूरी हुई थी।

भविष्यवाणी 10: मसीहा के वध और यरूशलेम के विनाश की तिथि को तय होना—*कदाचित् सबसे बड़ी भविष्यवाणियों में से एक*

भविष्यवाणी की तिथि: 537 ईसा पूर्व

बाइबल पाठ: दानिय्येल 9:24-26

> "तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उसके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो ; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए। इसलिये यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा। उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा : और

उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी। परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठान लिया गया है।

भविष्यवाणी का सार

दानिय्येल 9:24–26 में भविष्यवक्ता के लोगों और मसीहा के सम्बन्ध में उसके दर्शन को दर्ज़ किया गया है। भविष्यवाणी के सन्दर्भ में, प्रत्येक "सप्ताह" सात वर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। जिब्राएल दानिय्येल के पास आता है, जो उसे बताता है कि यरूशलेम को पुन:स्थापित और उसका पुन:र्निर्माण करने की आज्ञा के जारी होने के 69 सप्ताह बाद (7 सप्ताह + 62 सप्ताह = 69 सप्ताह), मसीहा को काट (मार) डाला जाएगा।

पूर्ण होना

धर्मविज्ञानी हेरोल्ड हॉहेनर ने प्रदर्शित किया है कि यह भविष्यवाणी सटीक रूप से पूरी हुई है।[25] यहूदी मूल रूप से चंद्र कैलेंडर का उपयोग करते थे। तो 69 सप्ताह, 483 चंद्र वर्ष (69 x 7 = 483) के बराबर है। जब इस समय अवधि को सौर वर्षों में बदला जाता है (365 दिन प्रति वर्ष जैसा हमारे वर्तमान कैलेंडर में है), तो यरूशलेम को पुन:स्थापित और उसका पुन:र्निर्माण करने की आज्ञा से लेकर उस समय के बीच में 476 वर्षों के घटाए गए वक्त के दायरे का अनुमान लगाया जाता है जब मसीहा को काट डाला या मार डाला जाएगा।

मन्दिर एवं यरूशलेम के पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में फारस के राजाओं के द्वारा आज्ञाएं जारी की गईं थीं। जैसा पहले ध्यान दिया गया है, कुस्रू ने ऐसी ही आज्ञा को जारी किया था जो यहूदियों को अनुमति देता था कि यरूशलेम में मन्दिर का पुनर्निर्माण करने के लिए वापस लौट जाएं। इसकी पुन:पुष्टि दारा, अर्थात् कुस्रू के उत्तराधिकारी, के द्वारा की गई थी। फिर भी, बाद में यह फारस का राजा अर्तक्षत्र ही था, जिसने विशेष रूप से एक आज्ञा को जारी किया था जो शहरपनाहों और यरूशलेम नगर की दीवारों के पुनर्निर्माण की अनुमति देता था। इस आज्ञा को 444 ईसा पूर्व में अर्तक्षत्र के द्वारा नहेमायाह को जारी किया गया था। मसीहा को ठीक 476 वर्षों बाद मार डाला गया जब यीशु मसीह को 33 ईस्वी में क्रूस पर चढ़ाया गया था। दानिय्येल की पुस्तक 500 से अधिक वर्षों पहले ही यीशु मसीह के क्रूसारोहण के सटीक समय को प्रगट करती है![26]

पिछली उपलब्धियों का सिद्ध लेखा-जोखा

बाइबल की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए पिछली उपलब्धियों का लेखा-जोखा सिद्ध है। जो कुछ मैंने ऊपर प्रस्तुत किया है वह बाइबल में पाई जानेवाली अनेक भविष्यवाणियों का एक छोटा सा नमूना है। अंत समय की भविष्यवाणियों को छोड़कर सभी भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं (अध्याय 14 में इस विषय में और अधिक)। केवल एक सर्व-सामर्थी और सर्व-ज्ञाता हस्ती ही पहले से भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकता है और फिर उन घटनाओं को ठीक वैसे ही अंजाम देता है जैसे उसके बारे में पहले ही बता दिया गया था। बाइबल निश्चित रूप से परमेश्वर की पुस्तक है।

पूरी हुई भविष्यवाणियों के और उदाहरणों के लिए पढ़ते रहिए।

चार
बाइबल: ईश्वरीय पुस्तक—मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणी

मसीहा के विषय में विशिष्ट भविष्यद्वाणियाँ

जैसा कि पिछले अध्याय में चर्चा की गई थी, मसीहा सम्बन्धी भविष्यद्वाणियाँ यहोवा के सेवक के विषय में बताती हैं जो दुःख तो उठाएगा परन्तु पृथ्वी पर राज्य करेगा। मसीहियों का विश्वास है कि यीशु मसीह विश्व के इतिहास में अद्वितीय व्यक्ति है जिसके विषय में मसीहा सम्बन्धित भविष्यद्वाणियाँ हैं। इसका कारण नीचे स्पष्ट हो जाएगा।

पुराने नियम की शुरुआत से लेकर अंत तक, बाइबल की प्रमुख विषय-वस्तु वह उद्धारकर्ता है जो मनुष्य का परमेश्वर से मेलमिलाप करने के लिए आएगा। मसीहा वह उद्धारकर्ता है, और यीशु मसीह के जीवन की घटनाएं स्पष्ट रूप से गवाही देती हैं कि वह संसार का उद्धारकर्ता था जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर के द्वारा भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से की गई थी।

बाइबल में उस आनेवाले मसीहा के बारे में 100 से भी अधिक भविष्यद्वाणियाँ शामिल हैं जिसे परमेश्वर संसार में भेजेगा। नीचे दी गई तालिका इन में से दस को दर्शाती है। मसीहा सम्बन्धी 48 भविष्यद्वाणियों को किसी एकल व्यक्ति के जीवन में बेतरतीब ढंग से पूरा किया जाएगा उसकी संभावना 10^{157} में 1 है (अध्याय 6 में इस पर अधिक दिया गया है)।

यह मानते हुए कि मसीहा सम्बन्धी सभी भविष्यद्वाणियों का एक व्यक्ति में पूरी होने की संभावना लगभग नगण्य है, इसलिए हमें यह अपेक्षा करना चाहिए कि संसार के समूचे इतिहास में एक भी व्यक्ति उन सब को पूरा नहीं कर सकता था। फिर भी यीशु मसीह ने अपने दूसरे आगमन के विषय में की गई भविष्यद्वाणियों को छोड़, उन सब भविष्यवाणियों को पूरा किया, जिन्हें भविष्य के लिए ठहराया गया था। यह स्पष्ट रूप मसीहा के रुप में उसकी पहचान करता है जिसकी भविष्यवाणी भविष्यद्वक्ताओं ने की थी और जिसे परमेश्वर ने भेजा था।[27]

नीचे दी गई तालिका भविष्यद्वाणियों के इस आश्चर्यजनक समूह का नमूना प्रदान करती है जिसे यीशु के जन्म से सैकड़ों वर्षों पहले लिखा गया था। किसी भी अन्य धार्मिक पुस्तक के साथ इसकी तुलना नहीं की जा सकती है। यह तालिका भविष्यवाणी, पुराने नियम में इसका स्थान, और नए नियम के उस भाग का स्थान सूचीबद्ध करती है जो इसके पूरे होने का वर्णन करता है

मसीहा सम्बन्धी दस भविष्यद्वाणियों के नमूने		
मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणी	**पुराने नियम की भविष्यवाणी**	**नए नियम में भविष्यवाणी का पूरा होना**
मसीहा कुंवारी से जन्म लेगा	यशायाह 7:14	मत्ती 1:23
मसीहा बेतलहम में जन्म लेगा	मीका 5:2	मत्ती 2:1,6
मसीहा गदही के बच्चे पर बैठकर आनन्दित भीड़ के साथ यरूशलेम में प्रवेश करेगा	जकर्याह 9:9	मत्ती 21:1-11
चांदी के 30 सिक्कों के लिए मसीहा को पकड़वा दिया जाएगा	जकर्याह 11:12-13	मत्ती 26:14-16
मसीहा को पित्त मिला हुआ दाखरस दिया जाएगा	भजन संहिता 69:21	मत्ती 27:34
मसीहा के वस्त्रों के लिए चिट्ठियाँ का डाली जाएगी	भजन संहिता 22:18	मत्ती 27:35
परमेश्वर पर मसीहा के भरोसे का मज़ाक उड़ाया जाएगा	भजन संहिता 22:7-8	मत्ती 27:43
मसीहा के हाथों और पांवों को छेदा जाएगा	भजन संहिता 22:16	यूहन्ना 19:34
मसीहा की कब्र धनवानों के संग होगी	यशायाह 53:9	मत्ती 27:57-60
मसीहा फिर से जी उठेगा	भजन संहिता 16:10	प्रेरितों के काम 2:24-28

एक पुस्तक जो भविष्य की बात पहले बता देती है वह एक अलौकिक पुस्तक है

ऐसी पुस्तक के बारे में क्या कहा जा सकता है जो भविष्य की बातें पहले ही बार-बार बता देती है? यदि हम बौद्धिक रूप से ईमानदार हैं, तो हम बाध्य हो जाते हैं कि यह निष्कर्ष निकालें कि यह इस संसार से परे है क्योंकि केवल परमेश्वर ही पहले से भविष्य की बातें बता सकता है।

बाइबल में भविष्यवाणी सम्बन्धी भागों के विशाल ढांचे का वर्णन करना असंभव है। इन भविष्यद्वाणियों की स्पष्टता और उनकी पूर्ति की सटीकता ऐसे लोगों के लिए आश्चर्य के रूप में नहीं आनी चाहिए जो पुराने नियम से परिचित हैं, क्योंकि परमेश्वर भविष्यद्वक्ता यशायाह के माध्यम से कहता है:

> क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। … (यशायाह 46:9-10)

परमेश्वर कहता है कि उसके जैसा कोई नहीं है जो घटनाओं के होने से बहुत समय पहले ही घोषणा कर सकता है कि ये बातें किस प्रकार घटित होंगी। परमेश्वर भविष्य की बातें पहले ही बताता है। यह

पृथ्वी से अनंतकाल तक

बाइबल के ईश्वरीय स्वभाव को समझने में महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित सरल तर्क पर विचार करें:

आधारवाक्य 1:	केवल परमेश्वर ही भविष्य का स्पष्ट विवरण जानता है।
आधारवाक्य 2:	बाइबल भविष्य की बातों का स्पष्ट विवरण देती है।
निष्कर्ष:	इसलिए, बाइबल परमेश्वर की ओर से है।

यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की ओर से आई किसी भी पुस्तक का अत्यंत सावधानी से अध्ययन किया जाना चाहिए।

मृत सागर की गुफाओं में एक अद्भुत खोज

जैसा कि हमने देखा था, बाइबल के आलोचक अक्सर दावा करते हैं कि जैसा बाइबल के विद्वान दावा करते हैं उसकी अपेक्षा बाइबल की कुछ पुस्तकों को काफी बाद लिखा गया था। यशायाह की पुस्तक आलोचकों के संशयवाद को गलत साबित करती है। यशायाह की पुस्तक बाइबल की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है, और इसे यीशु मसीह के जन्म के लगभग 700 साल पहले लिखा गया था। चूंकि हमारे पास यशायाह की पुस्तक का कोई मूल कुण्डलपत्र नहीं है, फिर भी सम्पूर्ण प्रतिलिपि पाई गई है जो मसीह के जन्म से काफी पहले की तिथि को तय करती है! 1940 के दशक के दौरान, मृत सागर के पास कुमरान की गुफाओं में आधुनिक समयों की सबसे बड़ी पुरातात्विक खोज में से एक को अंजाम दिया गया था। आरम्भिक खोजें बदूईन जाति द्वारा की गई थीं, परन्तु जल्द ही पुरातात्विक अभियानों को सुनियोजित किया गया, और खोज की तीव्रता को बड़ा दिया गया जिसके फलस्वरूप एस्तेर को छोड़ पुराने नियम की हर पुस्तक के हज़ारों टुकड़े प्राप्त हुए। प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता विलियम अलब्राइट के द्वारा इसे "अब तक की सबसे बड़ी पाण्डुलिपि खोज" कहा गया था।[28]

मृत सागर कुण्डल पत्र प्राचीन एस्सेनस (एकान्तवासियों) के पुस्तकालय के अवशेष हैं, जो धर्मपरायण यहूदी संप्रदाय था और मसीह के समय से काफी पहले कुमरान के मठ में रहा करते थे। कुमरान में पाए गए प्राचीन कुण्डलपत्रों में पुराने नियम की यशायाह की पुस्तक के सभी 66 अध्यायों की सम्पूर्ण प्रति थी, जिसकी तिथि को लगभग 100 ईसा पूर्व या उससे पहले निर्धारित किया गया। आश्चर्यजनक रूप से, यह प्राचीन चर्मपत्र यशायाह की अन्य आधुनिक इब्रानी प्रतियों के समान है जिससे अंग्रेज़ी बाइबल के अनुवाद आते हैं, भले ही यह इनकी तिथि से हज़ार वर्षों पूर्व की मानी जाती है! 1,000 वर्ष की समयाविधि में यशायाह की पुस्तक के पुनरुत्पादन की यह उल्लेखनीय सटीकता पुराने नियम के शास्त्रियों और नकल करनेवालों की विश्वसनीयता को प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त, यह बाइबल के आलोचकों के संशयवाद को अप्रमाणित करती है।[29, 30]

कुमरान से मिले यशायाह के कुण्डल पत्रों के बारे में अत्यंत महत्वपूर्ण बात यह है कि यह मसीहा के बारे में ऐसी भविष्यद्वाणियों से भरी हुई है जो यीशु मसीह के जीवन में पूरी हुई थीं, और यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि ये भविष्यद्वाणियाँ मसीह के जन्म के काफी पहले लिखी गई थीं! मसीहा के जीवन या घटनाओं में 20 से अधिक विशेषताओं की भविष्यवाणी सिर्फ यशायाह की पुस्तक में ही की गई थी। ये सब यीशु मसीह के जीवन पूरे हुए थे।

यशायाह की पुस्तक में मसीहा के बारे में भविष्यद्वाणियाँ		
यशायाह से वचन के भाग	**नए नियम में पूर्ति**	**भविष्यवाणी का स्वभाव**
7:14	मत्ती 1:23	वह कुंवारी से जन्म लेगा
11:1; 10	मत्ती 1:1	वह दाऊद का वंशज होगा
28:16	रोमियों 9:32-3; 10:11	वह नींव के कोने का पत्थर है
42:1	मत्ती 3:15-17	यहोवा का आत्मा उसके ऊपर होगा और यहोवा उसे संभालेगा
49:7; 53:1-3	यूहन्ना 12:37	उसे इस्राएल और जातियों के द्वारा अस्वीकार किया जाएगा
42:6; 49:6	मत्ती 28:18-20 प्रेरितों के काम 1:7-8	वह पृथ्वी के छोर तक उद्धार को फैलाएगा और अन्यजातियों के लिए प्रकाश होगा
50:4-5	मत्ती 26:39	वह यहोवा के प्रति आज्ञाकारी होगा
50:6	मत्ती 27:26, 30	वह अपनी पीठ पर कोड़ों की मार को सहेगा, उसकी दाढ़ी खींची जाएगी, और उसके चहेरे पर थूका जाएगा
52:14	मत्ती 27:27-30	उसका चेहरा क्रूरता के साथ प्रताड़ित करके बिगाड़ दिया जाएगा
53:1-3	मरकुस 15:19-32	वह लोगों के द्वारा तिरस्कृत और त्यागा जाएगा
53:4-6	मरकुस 15:25	उसे हमारे पापों के लिए मारा और घायल किया जाएगा
53:5-6	रोमियों 4:25	वह एक पाप बलि होगा
53:5	यूहन्ना 19:23 लूका 22:33	उसे हमारे अपराधों के लिए भेदा जाएगा
53:7	मत्ती 27:13-14	वह अपने बचाव के लिए कुछ भी नहीं बोलेगा
53:9	मत्ती 27:56-60	उसकी कब्र धनवानों के संग होगी

इस बात पर विवाद नहीं किया जा सकता है कि आज की बाइबल में पाया जानेवाला यशायाह उन हस्तलेखों से आता है जिसे मूल रूप से यीशु के जन्म से बहुत पहले लिखा गया था, परन्तु फिर भी भविष्यवाणी के माध्यम से, यह उसके जीवन में अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करता है! ऊपर दी गई तालिका यशायाह की पुस्तक में भविष्यवाणी और पूर्ति के अद्भुत सार को प्रस्तुत करती है, और यह एक बार फिर बाइबल की अलौकिक उत्पत्ति की पुष्टि करती है।

बाइबल की एकता—इसकी ईश्वरीय प्रेरणा के और अधिक प्रमाण

बाइबल में शामिल कहानी मानवजाति की उत्पत्ति, मानवजाति के पतन, मानवजाति के उद्धार, और मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना के समापन को अपने में समाहित करती है। चौंकानेवाली बात है यह है कि बाइबल को किसी एक लेखक द्वारा एक ही समय में नहीं लिखा गया था। इसके बजाय, इसे लगभग 40 लेखकों के द्वारा, लगभग 1,500 वर्षों की अवधि में, विभिन्न स्थानों और भाषाओं में,

और विभिन्न साहित्यिक शैलियों में लिखा गया था। फिर भी इसमें अद्भुत एकता पाई जाती है। हर एक लेखक का योगदान समग्र कहानी के भाग को प्रगट करता है, और यह सब टाइल्स के समान पच्चीकारी में सटीक बैठता है।

चूंकि बाइबल की एकता इसकी ईश्वरीय प्रेरणा को प्रमाणित नहीं करती है, परन्तु यह इसका सुझाव ज़रूर देती है। इसके विषय में एक पल के लिए सोचिए। जब तक बाइबल का किसी तरीके से संयोजन ना किया जाए, तब तक बाइबल ऐसी एकीकृत कहानी को कैसे बता सकती है जबकि इसे अनेक लोगों के द्वारा, कई वर्षों में, और अनेक स्थानों में लिखा गया था? मैं सोचता हूँ कि सर्वोत्तम उत्तर यह है कि परमेश्वर ही बाइबल का स्रोत है। इसी लिए कहानी एकीकृत है। कथा-वस्तु का संयोजन करने के लिए कोई भी मनुष्य इतने लम्बे समय तक जीवित नहीं था। यदि यह मनुष्य से नहीं है, तो यह ज़रूर परमेश्वर से होगा, क्योंकि बाइबल की एकता निश्चित रूप से एक संयोग नहीं हो सकती है।

बाइबल का प्रभाव

धर्मविज्ञानी गेस्लर और निक्स के निम्नलिखित अवलोकनों पर विचार करें:

> बाइबल की अपेक्षा किसी भी पुस्तक का इतने व्यापक रूप से प्रचार नहीं किया गया है और न किसी भी पुस्तक ने विस्तृत रूप से संसार की घटनाओं के पथक्रम को इतना प्रभावित किया है। इतिहास में किसी भी अन्य पुस्तक की अपेक्षा बाइबल का अत्यधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है, इसे अत्यधिक प्रतियों में प्रकाशित किया जाता है, और इसने अत्यधिक अनुसन्धानों को प्रेरित किया है। बाइबल का अनुवाद एक हज़ार से अधिक भाषाओं में किया गया है जो संसार की जनसंख्या के नब्बे प्रतिशत से अधिक का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसकी अरबों प्रतियाँ प्रकाशित की जा चुकी हैं। अब तक की सबसे अधिक बिकनेवाली पुस्तकों की सूची में कोई भी इसके समान सफल नहीं हुई है। पश्चिमी संसार में बाइबल और इसकी शिक्षा का प्रभाव उन सब के लिए स्पष्ट है जो इतिहास का अध्ययन करते हैं। और संसार की घटनाओं के पथक्रम में पश्चिम की प्रभावशाली भूमिका समान रूप से स्पष्ट है। संसार में किसी भी अन्य पुस्तक या पुस्तकों की श्रृंखलाओं के द्वारा प्रभाव डाले जाने की अपेक्षा यहूदी-मसीही पवित्रशास्त्रों के द्वारा सभ्यता पर कहीं अधिक प्रभाव पड़ा है। वास्तव में, संसार में कोई महान नैतिक या धार्मिक कार्य मसीही प्रेम के सिद्धान्त में नैतिकता की गहराई से बढ़कर नहीं है, और परमेश्वर के विषय में बाइबल के दृष्टिकोण की अपेक्षा किसी के पास भी अत्यधिक उत्कृष्ट आत्मिक अवधारणा नहीं है। बाइबल मनुष्यों को ज्ञात उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत करती है, ऐसे आदर्श जिन्होंने सभ्यता को सांचे में ढाला है।[31]

क्या ऐसी पुस्तक महज मानव कल्पना की उपज हो सकती है? मैं ऐसा नहीं सोचता हूँ।

अध्याय 5
नया नियम: सबसे विश्वसनीय प्राचीन पुस्तक

इस अध्याय में मेरा लक्ष्य यह है कि तर्क की कई पंक्तियों का सार-संक्षेप प्रदान करूं, जो मैं मानता हूँ इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि नया नियम, जिसमें यीशु की सेवकाई दर्ज़ है, अत्यंत विश्वसनीय पुस्तक है।

घटनाओं के अनेक चश्मदीद गवाह

ऐतिहासिक घटनाओं का आंकलन करने में, चश्मदीद गवाह की गवाही को अत्याधिक महत्व दिया जाता है। कई कारक चश्मदीद गवाहों की गवाही को मज़बूत करने में सहायक होते हैं:

1. इसे घटनाओं के घटित होने के तुरन्त बाद दिया गया है, इससे पहले कि अलंकरण हो सके।
2. इसे अनेक स्वतंत्र गवाहों के द्वारा प्रदान किया गया है जिससे विवरणों की तुलना की जा सके।
3. इसे निष्पक्ष या विरोधी गवाहों के द्वारा दिया गया है जिसके पास हासिल करने के लिए कुछ नहीं है।
4. इसमें ऐसे ब्योरे शामिल हैं जो गवाहों के लिए प्रतिकूल हैं चूंकि लोग साधारण रूप से ऐसे हालातों को नहीं गढ़ते हैं जो उन्हें खराब दिखाते हों या उनकी स्थिति को कमज़ोर करते हों।[32]

नए नियम में शामिल सभी पुस्तकों को चश्मदीद गवाहों या उनके निकट सहयोगियों द्वारा लिखा गया था। हम प्रारम्भिक कलीसियाई अगुवों और इतिहासकारों के लेखों से माध्यम से इसे जानते हैं।

मत्ती, पतरस और यूहन्ना यीशु के शिष्य थे। मरकुस पतरस के लिए एक शास्त्री के रूप में कार्य करता था, और इस प्रकार उसने नए नियम की घटनाओं के विषय में पतरस के चश्मदीद लेख को दर्ज़ किया होगा। पौलुस कलीसिया को सताने में सरगर्म व्यक्ति था पर दमिश्क के मार्ग पर यीशु मसीह के साथ उसकी ईश्वरीय मुलाकात हुई, जिससे उसका जीवन परिवर्तित हो गया और वह मसीहियत में आ गया। लूका पौलुस का करीबी सहयोगी था। हालांकि लूका पुनरुत्थान का चश्मदीद गवाह नहीं था, फिर भी वह पौलुस की सेवकाई और आश्चर्यकर्मों का, और प्रारम्भिक कलीसिया की तेज़ी से होने वाली प्रगति का चश्मदीद गवाह था। अत्यधिक संभावना यह है, कि लूका अन्य चश्मदीद गवाहों से परिचित था चूंकि वह हमें अपने सुसमाचार की शुरुआत में बताता है कि उसने आरम्भ से ही सबकुछ की सावधानीपूर्वक खोजबीन की थी। याकूब और यहूदा दोनों यीशु के दूध-भाई थे (यीशु का पिता परमेश्वर था; याकूब और यहूदा का पिता यूसुफ था)।

इब्रानियों एक अज्ञात लेखक की पुस्तक है और शायद इसे किसी चश्मदीद गवाह के द्वारा लिखा गया होगा, परन्तु हम इसके विषय में निश्चित नहीं हो सकते हैं। निश्चय ही इब्रानियों का लेखक अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति था और वह प्रारम्भिक कलीसिया और उसके विश्वास और सिद्धांत के साथ एक मत था।

नए नियम में शामिल किए जाने के लिए चुनी गई सभी पुस्तकों को उपरोक्त लेखकों के द्वारा पहली शताब्दी के समापन से पहले लिखा गया था। अन्य पुस्तकें दूसरी शताब्दी में सामने आई थीं, जैसे झूठी शिक्षा से सम्बन्धित ज्ञानवाद के ग्रन्थ जिनकी खोज मिस्र में नाग हम्मादी में की गई थी। इन पुस्तकों को प्रारम्भिक कलीसिया के द्वारा अस्वीकार किया गया था क्योंकि उनके लेखकों का प्रेरितों से सम्बन्ध नहीं था जो यीशु की सेवकाई के चश्मदीद गवाह थे।

नए नियम के लेखक विश्वसनीय चश्मदीद गवाह थे

साधारण तौर पर, ऊपर वर्णित कारक जो चश्मदीद गवाही को मज़बूत करते हैं वे नए नियम के लेखकों पर स्पष्ट रूप से लागू होते हैं। यीशु के पुनरुत्थान के पन्द्रह सालों के भीतर, नए नियम की पुस्तकें प्रकट होने लगी थीं। प्रेरित यूहन्ना की पुस्तक, और शायद यहूदा के पत्र को छोड़कर, यह संभव है कि पुनरुत्थान के 35 वर्षों के भीतर नए नियम की पुस्तकें पूरी हो गई थीं। कुछ लोगों ने नए नियम की पुस्तकों के लिए पहले की तिथियों को लेकर विवाद किया है, परन्तु विख्यात विद्वान डब्ल्यू. एफ. अलब्राइट निष्कर्ष निकालते हैं कि:

> साधारण तौर पर, हम यह ज़ोर देकर कह चुके हैं कि लगभग 80 ईस्वी के बाद नए नियम की किसी भी पुस्तक की तिथि को निर्धारित करने का कोई ठोस आधार नहीं है… [33]

इसका मतलब है कि ऐसे लोग जिन्होंने यीशु की सेवकाई को देखा था वे तब भी जीवित थे और सच्ची कहानी के प्रति किसी भी अतिशयोक्ति का खण्डन करने के लिए सक्षम हुए होंगे।

जैसा कि मैं अध्याय 7 में दिखाऊंगा, प्रेरितों के पास अपनी कहानी को बताकर अर्जित करने के लिए कुछ भी नहीं था, चूंकि, अधिकांश मामलों में, इसकी घोषणा करने के लिए उन्हें भयानक मौत दी गई थी। पौलुस ने मसीहियत के प्रति पूरी तरह से शत्रुतापूर्ण शुरुआत की थी, और याकूब शुरूआत में शंकालु व्यक्ति रहा था।

जब हम नए नियम पर विचार करते हैं, तो हम नए नियम के लेखकों के बारे में शर्मनाक ब्योरों को पाते हैं, जो इसकी विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं। बहरहाल, क्यों लेखक अपने बारे में शर्मनाक बातों को लिखेंगे जब तक कि वे सही ना हों? नए नियम में, हम यूहन्ना को पद और ताकत के लिए विवाद करते हुए, मुर्ग के बांग देने से पहले पतरस को मसीह का तीन बार इनकार करते हुए, और हत्या के सहायक के रूप में पौलुस को पाते हैं।

नए नियम के लेखकों ने नरक, तलाक, या नैतिकता जैसे कठिन विषयों के बारे में यीशु की शिक्षाओं को लुभावना नहीं बनाया था, जिसके कारण अनेक लोगों को अपमानजनक लगा। साथ ही उन्होंने ब्योरों को एकीकृत करने के द्वारा इकट्ठा की गई कहानी को प्रबंधित करने का भी प्रयास नहीं किया था, जिसे यदि वे किसी धोखे को गढ़ने की कोशिश कर रहे होते, तो निश्चित रूप से करते।

उपरोक्त सभी बातें नए नियम के भरोसे को प्रेरित करनेवाली आवाजें हैं, जिसे किसी के भी द्वारा सुना जा सकता है जो इसे खुले मन के साथ पढ़ने के लिए तैयार होता है।

किसी भी अन्य प्राचीन पुस्तक की अपेक्षा बहुत पहले की पाण्डुलिपियां

नए नियम का लेखन कार्य पहली सदी में पूरा हुआ था। चूंकि हमारे पास मूल पुस्तकें नहीं हैं, परन्तु हमारे पास नए नियम की पुस्तकों की प्रतियां बड़ी मात्रा में हैं। वर्तमान में गिनती करते हुए, लगभग 6,000 टुकड़े और प्रारम्भिक कलीसिया से आंशिक एवं सम्पूर्ण यूनानी पाण्डुलिपियां है जो आज के दिन तक बची हुई हैं। ये पाण्डुलिपियां पपायरस पर लिखी हुई हैं जिन्हें पपायरस के सरकंडों से बनाया गया था, और ये चर्मपत्र पर भी हैं, जो पशुओं की खाल के पतले भागों से बने हैं। यूनानी पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त, नए नियम की लगभग 9,000 प्रारम्भिक प्रतियां हैं जिनका अनुवाद सीरिया, कॉप्टिक, अरबी और लैटिन, और साथ ही साथ अन्य भाषाओं में किया गया है।[34]

प्राचीन संसार की किसी भी पुस्तक की अपेक्षा नए नियम के लिए पाण्डुलिपि का प्रमाण कहीं बेहतर है। किसी भी प्राचीन पुस्तक की अपेक्षा नए नियम की कहीं अधिक प्रतियां मौज़ूद हैं। नए नियम की पाण्डुलिपियों में यूहन्ना के सुसमाचार के हिस्से शामिल हैं जिनकी तिथि लगभग 130 ईस्वी है और लूका एवं यूहन्ना का सम्पूर्ण सुसमाचार भी हैं जिसकी तिथि को 200 ईस्वी तय की गई है। कोडेक्स सिनेटिकस अर्थात् यूनानी की हस्तलिखित बाइबल में समूचा नियम शामिल है और इसकी तिथि को चौथी शताब्दी तय की गई है, जो नए नियम के मूल लेखन के बाद 300 वर्षों से भी कम समय की है। ये नए नियम की ऐसी हज़ारों पाण्डुलिपियों की प्रारम्भिक पाण्डुलिपियों में से केवल कुछ एक हैं जो आज के दिन तक बची हुई हैं।

इसके विपरीत, प्राचीन सांसारिक पाण्डुलिपियां इतनी अच्छी तरह से खरी नहीं उतरती। *थ्यूसीदाइदीज के इतिहास* और *हिरोडोटुस के इतिहास* की प्रत्येक पाण्डुलिपियों में केवल आठ ही अब तक मौज़ूद हैं, फिर भी उन्हें प्राचीन संसार के अत्यंत विश्वसनीय ऐतिहासिक कृतियों में माना जाता है। इन इतिहासों के लेखन और बची हुई उपलब्ध पाण्डुलिपियों के बीच समय का अन्तर लगभग 1,300 साल का है, फिर भी उन्हें वस्तुतः बिना किसी सवाल के स्वीकार किया जाता है।[35]

नया नियम को सटीक रूप से प्रेषित किया गया था

जब प्राचीन मूलपाठों की कई प्रतियां उपलब्ध हैं, तो यह तय करना आसान होता है कि कितनी अच्छी तरह से समय के साथ-साथ इन लेखों को संरक्षित रखा गया था। विद्वान महज समय के कार्य के रूप में मूलपाठ की अलग अलग प्रतियों में विभिन्नता को देखते हैं। उपलब्ध पाण्डुलिपियों का विश्लेषण करने के द्वारा, विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है कि नए नियम के प्रेषण की सटीकता 99 प्रतिशत से अधिक है।

नए नियम की पाण्डुलिपियों में अधिकांश विभिन्नताएं मात्राओं की त्रुटियां, शब्दों की चूक, पुनरावृत्ति, अक्षरों का उलटना, शब्दों का गलत विभाजन इत्यादि मिलते हैं। पाण्डुलिपि की प्रतियों की विशाल संख्या को देखते हुए, उच्च श्रेणी दृढ़ता के साथ नए नियम के लेखों की पुनःसंरचना करना एक सीधा कार्य था। वर्णन की गई कोई भी विभिन्नता किसी भी रीति से मसीहियत की मूल मान्यताओं या शिक्षाओं को प्रभावित नहीं करती है।

प्राचीन संसार की पाण्डुलिपियां[36]				
लेखक/पुस्तक	**लिखने की तिथि**	**पुरानी प्रतियां**	**समय का अंतराल**	**प्रतियों की संख्या**
हिरोडोटुस *इतिहास*	लगभग 484-425 ईसा पूर्व	900 ईस्वी	~1350 साल	8
थ्यूसीदाइदीज *इतिहास*	460-400 ईसा पूर्व	900 ईस्वी	~1300 साल	8
प्लेटो	400-350 ईसा पूर्व	900 ईस्वी	~1300 साल	20
टेक्कीटस *ऐतिसाहिक लेख*	100 ईस्वी	1100 ईस्वी	~1000 साल	20
नया नियम	50-100 ईस्वी	130-250 ईस्वी	~50-150 साल	5000+

उपरोक्त तालिका लेखक के सम्बन्ध में, मूल कार्य के लेखन की तिथि के सम्बन्ध में, प्राचीनतम प्रतियों के लेखन की तिथि के सम्बन्ध में जो आज के दिन तक बची हुई हैं, मूल पुस्तक एवं प्राचीनतम बची हुई प्रतियों के लेखन के बीच में बीते हुए समय के अन्तराल के सम्बन्ध में, और आज के दिन तक बची हुई प्रारम्भिक प्रतियों की संख्या के सम्बन्ध में प्राचीन संसार से महत्वपूर्ण पुस्तकों की तुलना करता है।

जैसा इस तालिका से आसानी से देखा जा सकता है, नए नियम के लिए कहीं अधिक पाण्डुलिपि प्रमाण हैं, असल में, इस सम्बन्ध में नया नियम अपने आप में उत्कृष्ट है।

नए नियम की सावधानीपूर्वक प्रतियाँ तैयार की गई थी क्योंकि ऐसे शास्त्री जिन्होंने इसकी प्रतिलिपि तैयार की थी वे विश्वास करते थे कि यह परमेश्वर का वचन है। इसका परिणाम अत्यंत उच्च प्रेषण की सटीकता था। इसका शुद्ध परिणाम यह है कि नया नियम प्राचीन संसार की बहुत अच्छी तरह से संरक्षित और लिखी गई पुस्तक है। इस निष्कर्ष के समर्थन में, प्रसिद्ध मूल पाठ्य विद्वान, और ब्रिटिश संग्रहालय के पूर्व निदेशक एवं प्रधान लाइब्रेरियन सर फ्रेडरिक केन्योन ने ऐसे लिखा है:

> नए नियम की पाण्डुलिपियों की संख्या, इसके प्रारम्भिक अनुवादों की संख्या, और कलीसिया के प्राचीनतम लेखकों में इससे लिए गए उद्धरणों की संख्या इतनी अधिक है कि व्यावहारिक रूप से यह निश्चित है कि हर सन्देहास्पद भाग के सही पठन को जानकारी के इन प्राचीन स्वीकृत स्रोतों में से किसी एक या अन्य में सुरक्षित रखा गया है। संसार की किसी अन्य प्राचीन पुस्तक के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता है।[37]

तथ्यों की जांच करने पर नया नियम सबसे आगे है

नए नियम के सम्बन्ध में यह देखने के लिए अनगिनित तथ्य-परीक्षण अभियान शुरू किया गए हैं कि जो कुछ इसमें लिखा है क्या वह सही है। इसका परिणाम यह हुआ कि नए नियम में दिए गए हर विशिष्ट ऐतिहासिक और भौगोलिक विवरणों की पुष्टि हो गई कि वह सही हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में सैकड़ों विशिष्ट विवरण शामिल हैं जैसा किसी तथ्यात्मक चश्मदीद गवाह के लेख में अपेक्षा की जाती है। केवल कुछ एक का नाम लें, तो इनमें जहाज़ के विरुद्ध प्रबल होती हुई आंधी, बन्दरगाह, सरकारी अधिकारियों की पदवियां, समुद्र तट की संरचना, द्वीप, शहर, देश, भूदृश्य, स्थानीय उद्योग, भूमिमार्ग, विभिन्न स्थानों में बोली जानेवाली भाषाएं, राजनीतिक रीति-रिवाज, और रोमी नागरिकों के अधिकार शामिल हैं। इन्हें अन्य प्राचीन स्रोतों, पुरातात्विक खोजबीनों एवं स्थानीय अनुसंधान के साथ बराबर-जांचा गया है। नॉर्मन गेस्लर के अनुसार, बिना किसी त्रुटि के "लूका बत्तीस देशों, चौव्वन शहरों, और नौ द्वीपों का नाम" लेता है।[38] प्रेरितों के काम की पुस्तक को बार-बार सही साबित किया गया है।

इन मामलों के एक जांचकर्ता बहुमुखी प्रतिभा के धनी ब्रिटिश लेखक, पुरातत्ववेत्ता और नए नियम के विद्वान सर विलियम रामसे थे। उन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति के साथ अपनी खोजबीन को आरंभ की, परन्तु अंत में उनका निष्कर्ष यह निकला कि यह "अद्भुत सच्चाई" को दिखाती है।[39]

बाद की पुस्तक में, रामसे ने एक इतिहासकार के रूप में लूका के उच्च ज्ञान के बारे में ऐसा कहा है:

> …लूका प्रथम श्रेणी का इतिहासकार था; उसके कथन महज एक तथ्य ही नहीं हैं; बल्कि वह सच्चे ऐतिहासिक अर्थ से भरे हुए हैं …इस लेखक को अत्यंत महान इतिहासकारों के साथ रखा जाना चाहिए।[40]

इसी प्रकार से, रोमी इतिहासकार ए. एन. शेरविन-व्हाइट रोमी इतिहासकारों के द्वारा प्रेरितों के काम के पुस्तक की विश्वसनीयता की व्यापक स्वीकृति की पुष्टि करते हैं:

> प्रेरितों के काम के लिए ऐतिहासिकता की पुष्टि अभिभूत करनेवाली है … इसकी मूल ऐतिहासिकता को अस्वीकार करने का कोई भी प्रयास अब बेतुका सा दिखाई देगा। रोमी इतिहासकारों ने इसे लम्बे समय तक इसका महत्व नहीं समझा है।[41]

पुरातत्व विज्ञान नए नियम की सटीकता का समर्थन करता है

पिछले एक सौ वर्षों में, पुरातत्व विज्ञान ने सामान्य रूप से बाइबल के और विशेष रूप से नए नियम के समर्थन में बड़ी मात्रा में प्रमाण प्रदान किए हैं। अनेक पुरातात्विक खोज ऐसे तथ्यों का समर्थन करते हैं जिन्हें नए नियम में प्रस्तुत किया गया है। चूंकि पुरातत्व विज्ञान नए नियम को प्रमाणित नहीं कर सकता है, परन्तु यह इसके समर्थन में महत्वपूर्ण परिस्थिति से जुड़े हुए प्रमाण को जोड़ सकता है। निम्नलिखित पुरातात्विक खोजों की एक आंशिक सूची मिलती है जो नए नियम में प्रस्तुत किए गए विशिष्ट तथ्यों की पुष्टि करते हैं:[42]

1. हेरोदेस के मन्दिर के संरचनात्मक अवशेष (यूहन्ना 2:20)
2. एक शिलालेख जिसमें "हेरोदेस, यहूदिया का राजा" का नाम है (मत्ती 2:1)
3. एक शिलालेख जिसमें "पुन्तियुस पिलातुस, यहूदिया का राज्यपाल" नाम लिखा है (लूका 3:1)
4. एक सिक्का जिसमें क्विरिनियुस नाम अंकित है जिसने यीशु के जन्म के समय पर जनगणना का आदेश दिया था (लूका 2:2)

5. बैतलहम में एक गुफा जिसे लम्बे समय से यीशु की की जन्मभूमि माना जाता है (लूका 2:4-7)
6. गलील की झील के तट पर कफरनहूम का नगर है, जो यीशु की सेवकाई का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था (मरकुस 2:1)
7. कफरनहूम में प्रेरित पतरस का घर (मत्ती 8:14)
8. कैफा महायाजक, जिसने यीशु को दंड दिया था, उसकी मेहराब वाली कब्र (मत्ती 26:3)
9. क्रूसीकरण के शिकार व्यक्ति का अवशेष जिसके टखने की हड्डी में सात इंच की कील घुसी हुई है (प्रेरितों के काम 2:23)
10. यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का स्थान और उसके दफनाने की जगह (यूहन्ना 19:17; मरकुस 15:46)
11. शीलोह का कुण्ड जहाँ यीशु ने अद्भुतआश्चर्यजनक चंगाई को अंजाम दिया था (यूहन्ना 9:1-12)
12. एक शिलालेख जिसमें "इरास्तुस" का नाम मिलता है जिसका जिक्र रोमियों की पुस्तक में पौलुस के द्वारा किया गया है (रोमियों 16:23)
13. न्याय का आसन जहाँ पौलुस गल्लियो, अर्थात् अखाया के हाकिम, के सामने खड़ा था (प्रेरितों के काम 18:12)
14. बैतहसदा का कुण्ड जहाँ यीशु ने एक आदमी को जो अड़तीस साल से बीमार था, चंगा किया था (यूहन्ना 5:1-5)
15. रोमन फोरम में टाइटस का जहाज़ जो 70 ईस्वी में मन्दिर के विनाश के बाद हुई लूट को चित्रित करता है जैसा यीशु के द्वारा भविष्यवाणी की गई थी (मत्ती 24:1-2)

नए नियम की विश्वसनीयता के लिए पुरातत्व विज्ञान एक सामर्थी साक्ष्य है जैसा ये विशिष्ट उदाहरण दिखाते हैं। मैं ऐसे प्रभावित हुए लोगों को पाता हूँ जिन्होंने इस्राएल की पवित्र भूमि में ज्ञानवर्धक चीज़ों की खुदाई करते हुए दशकों बिताए हैं। बाइबल की भूमि के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता नेल्सन ग्लूएक ने 1,000 से अधिक प्राचीन स्थलों की खुदाई की थी। बाइबल के साथ पुरातत्व विज्ञान की सहमति के सम्बन्ध में, उन्होंने यह कहा था:

> … श्रेणीबद्ध रूप से ऐसा कहा जा सकता है कि किसी भी पुरातात्विक खोज ने कभी भी बाइबल के सन्दर्भ का खण्डन नहीं किया है। बीसियों पुरातात्विक खोज किए गए हैं जो बाइबल में ऐतिहासिक कथनों की स्पष्ट रुपरेखा में या सटीक ब्योरे में पुष्टि करते हैं।[43]

इस प्रख्यात विशेषज्ञ के अनुसार, किसी व्यक्ति ने कभी ऐसी चीज़ को खोद कर नहीं निकाला है जो उसका खण्डन करती है जिसे बाइबल कहती है। इसके ठीक विपरीत, बीसियों खोज के द्वारा बाइबल की पुष्टि की गई है। ऐसा कैसे हो सकता है जब तक बाइबल सचमुच में इतिहास ना हो?

कानूनी मामलों का एक महान बुद्धिजीवी नए नियम की मान्यता की पुष्टि करता है

साइमन ग्रीनलीफ उन्नीसवीं सदी में कानून के सबसे उच्च बुद्धिजीवियों में से एक थे। वे हार्वर्ड में कानून के प्रोफेसर थे और उन्होंने *साक्ष्य विधि के मूलभूत सिद्धान्त* नामक पुस्तक को लिखा था जो वकीलों के प्रशिक्षण के लिए एक मानक पाठ्य पुस्तक बन गई है।

ग्रीनलीफ को वैधानिक साक्ष्य का मूल्यांकन करने की मानक पद्धतियों के अनुसार नए नियम का विश्लेषण करने के लिए चुनौती दी गई थी। ग्रीनलीफ़ ने चुनौती को स्वीकार किया और एक निबंध का प्रकाशन किया था जिसका शीर्षक *सुसमाचार प्रचारकों की गवाही* था। उन्होंने इसमें निष्कर्ष निकाला था कि "प्राचीन दस्तावेज़ नियम" के अनुसार, नए नियम को प्रामाणिक दस्तावेज़ के रूप में स्वीकार किया जाएगा चूंकि इसमें जालसाज़ी का कोई नामोनिशान नहीं मिलता है और यह सैंकड़ो वर्षों से कलीसिया के

उचित संरक्षण में रहा है।

ग्रीनलीफ लिखते हैं:

> ऐसे सिद्धांतों पर और ऐसे नियमों के द्वारा जिन्हें पहले से ही बताया गया था, सुसमाचार प्रचारकों की वर्णनात्मक कहानियों को अब पाठक के निरिक्षण एवं जांच के अधीन किया गया है…। सुसमाचार में तालमेल बैठानेवाले आधुनिक विद्वानों के सापेक्ष गुणों के साथ, और धर्म विज्ञानियों के मध्य विवाद के बिन्दुओं से लेखक को कोई सरोकार नहीं है। उसका काम अधिवक्ता के उद्यम के समान है जो अपने पेशे के नियमों के द्वारा गवाहों की गवाही की जांच करता है, जिससे यह निश्चित किया जाए कि, यदि उन्होंने इस प्रकार न्यायालय में शपथ लेकर गवाही दी थी, तो क्या उन्हें इसका श्रेय देने का हकदार बनाया जाएगा या नहीं और क्या उनकी वर्णनात्मक कहानियों को, जैसा अब हमारे पास है, प्राचीन दस्तावेज़ों के रूप में, जो उचित संरक्षण से आती हैं, ग्रहण किया जाएगा या नहीं। यदि ऐसा है, तो यह विश्वास किया जाता है कि इसके महत्व की सम्पूर्ण सीमा में उनकी गवाही को ग्रहण करने के द्वारा प्रत्येक ईमानदार और निष्पक्ष व्यक्ति उस परिणाम के साथ निरन्तरता से कार्य करेगा।[44]

ग्रीनलीफ़ यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सुसमाचार प्रचारकों की गवाही विश्वसनीय है और “हर ईमानदार और निष्पक्ष" व्यक्ति के द्वारा इसे स्वीकार किया जाना चाहिए।

छह

यीशु : मसीहा, चमत्कार करनेवाला, परमेश्वर का पुत्र

नए नियम के वृत्तान्त की विश्वसनीयता का ठोस प्रमाण मिलता है। प्रमाण को देखकर, किसी व्यक्ति के लिए यह मुश्किल होगा कि यीशु के बारे में जो कुछ इसमें लिखा है उसे गंभीरता से न ले।

वह बड़ा प्रश्न जिसका उत्तर अवश्य देना चाहिए यह है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है या नहीं, जैसा मसीहियत दावा करती है। यदि वह नहीं है, तो आपको इसकी चिंता नहीं करनी है कि वह क्या कहता है। परन्तु यदि वह है, जैसा मैं मानता हूँ कि प्रमाण स्पष्ट रूप से दिखाएंगे, तो वह कुछ ऐसी बातों को जानता है जिसे हम नहीं जानते हैं क्योंकि उसका आरंभ अनंतकाल में परमेश्वर के साथ है। यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, तो उसके शब्दों का बड़ा महत्व है और सावधानीपूर्वक इसका अध्ययन और इस पर विचार किया जाना चाहिए। तर्क की असंख्य पंक्तियां हमें इस निष्कर्ष की ओर ले जाती हैं कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है।

मैंने सबूतों को आठ श्रेणियों में व्यवस्थित किया है:

1. यीशु ने व्यक्तिगत रूप से मसीहा और परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था। उसके चेलों ने भी इसकी पुष्टि की।
2. यीशु ने मसीहा से सम्बन्धित अनेक भविष्यद्वाणियों को चौंकानेवाली सटीकता के साथ पूरा किया था। ऐसी भविष्यद्वाणियाँ जो अभी तक पूरी नहीं हुई हैं वे यीशु के दूसरे आगमन पर पूर्ण होने के लिए ठहराई गई हैं।
3. यीशु एक आश्चर्यकर्म करनेवाला व्यक्ति था। नया नियम, जैसा पहले बताया गया है कि प्राचीन संसार की अत्यंत विश्वसनीय पुस्तक है, वह उसके अद्भुत जीवन की पुष्टि करता है।
4. यीशु मरे हुओं में से जी उठा है।
5. वह कब्र जिसमें यीशु को दफनाया गया था वह उसे दफनाने के बाद रविवार को खाली मिली।
6. शांतिपूर्ण रीति से मसीहियत पूरे रोमी साम्राज्य में तेजी से फैल गई थी।
7. यीशु के बारे में प्रारम्भिक मसीहियों के दावों की पुष्टि प्राचीन सांसारिक, एवं गैर-मसीही स्रोतों के द्वारा की गई है।
8. यीशु इतिहास में एक अद्वितीय व्यक्ति है। संसार के इतिहास में उसके समान कभी कोई नहीं हुआ।

इस अध्याय में 1, 2 और 3 बिन्दुओं पर विचार किया जाएगा। 4, 5 और 6 बिन्दुओं पर अध्याय 7 में विचार किया जाएगा। 7 वें बिन्दु पर अध्याय 8 में विचार किया जाएगा। 8 वें बिन्दु को अध्याय 9 में सम्बोधित किया जाएगा।

कुछ लोगों के लिए, चाहे कितना भी प्रमाण दे दो, लेकिन वह उन्हें विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त नहीं होती। दूसरों के लिए, जब खुले मन के साथ विचार किया जाता है, तो प्रमाण का भार अत्यधिक बाध्यकारी होगा। इस पथ के साथ साथ मेरी यात्रा में, मैं प्रमाण के इस ढांचे का वर्णन किए बिना नहीं रह सकता।

यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था

मैंने संशयवादियों के द्वारा ऐसा कहते हुए सुना है, "यीशु ने कभी भी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया था, जब वह मर गया उसके बाद उसके अनुयायियों ने बस इस बात को गढ़ा था।" प्रमाण बिलकुल इसके विपरीत है। हमने पहले सीखा था कि नया नियम प्राचीन संसार की सबसे विश्वसनीय पुस्तक है। उस पर विचार कीजिए जिसे यीशु अपने बारे में नए नियम में कहता है।

यूहन्ना 10:30 में, यीशु कहता है कि वह परमेश्वर के साथ एक है: मैं और पिता एक हैं।" मरकुस 14:61-64 में, यीशु दावा करता है कि वह ख्रीस्त या मसीहा है। यहूदियों ने समझा कि वह देह में परमेश्वर होने का दावा कर रहा था, अतः उन्होंने उसकी हत्या करने की कोशिश की थी:

> "…क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?" यीशु ने कहा, "मैं हूँ : और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।" तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, "अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? तुमने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी क्या राय है?" उन सबने कहा कि यह वध के योग्य है।

कुंए के पास सामरी स्त्री के साथ बातचीत में, यूहन्ना 4:25-26 में यीशु ने उसे साफ तौर पर बताया था कि वह मसीहा है:

> स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह (जो ख्रिस्त कहलाता है), आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझसे बोल रहा हूँ, वही हूँ।"

अपने समय के धार्मिक अगुवों से बात करते हुए, यीशु ने कहा:

> यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" (यूहन्ना 8:58)

वह एकमात्र तरीका जिसके तहत यीशु अब्राहम से पहले अस्तित्व में हो सकता था, जो उससे 2,000 सालों पहले इस पृथ्वी पर हुआ था, वह यह है कि यदि वह परमेश्वर होता।

यीशु साफ तौर पर विश्वास करता था कि वह परमेश्वर है, और उसने इसे अन्य लोगों पर कई बार स्पष्ट किया था।

यीशु के शिष्य मानते थे कि वह परमेश्वर था

यीशु के चेलों ने कई अवसरों पर उससे ईश्वरत्व को पहचाना था। प्रेरित पतरस ने यीशु की ईश्वरत्व की पुष्टि की थी जब यीशु ने पतरस से पूछा था कि वह क्या सोचता है कि वह क्या है:

> शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" (मत्ती16:16)

लाज़र की बहन मार्था ने निम्नलिखित रूप में यीशु को प्रत्युत्तर दिया:

> उसने उससे कहा, "हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।" (यूहन्ना11:27)

आने वाले युगों के लिए सन्देश को भेजते हुए, प्रेरित यूहन्ना कहता है कि उसने सुसमाचार इसलिए लिखा है ताकि *आप* विश्वास करें कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है:

> यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास कर के उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:30-31)

ऐसे लोग जो अपने जीवन के दौरान यीशु का अनुसरण करते थे उन्होंने विश्वास किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है। परिशिष्ट में प्रदान की गई जानकारी दिखाती है कि ऐसे लोग जिन्होंने प्रेरितों के बाद कलीसिया की अगुवाई की, वे भी विश्वास करते थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु ने मसीहा सम्बन्धित भविष्यद्वाणियों को पूरा किया

इस बात के कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, सब विश्वस्त करनेवाले प्रमाणों में से एक प्रमाण उसमें मसीहा सम्बन्धित भविष्यद्वाणियों का आश्चर्यजनक रीति से पूरा होना है। अपने प्रथम आगमन पर यीशु ने मसीहा के विषय में अनेक भविष्यद्वाणियों को पूरा किया था, जैसा अध्याय 4 में वर्णन किया गया है। ऐसी भविष्यद्वाणियाँ जो इस समय तक पूरी नहीं हुई हैं वे उसके दूसरे आगमन पर पूरी हों जाएंगी, जिसका उसने वादा किया है।

जैसा कि पहले ध्यान दिया गया था, एक भौतिकशास्त्री ने संभावना का अनुमान लगाया है कि किसी व्यक्ति द्वारा मसीहा सम्बन्धित केवल अड़तालीस भविष्यवाणीयों को पूरा करने की संभावना 10^{157} में केवल एक की है। यह, असल में, अविश्वसनीय रूप से छोटी संभावना है।[45] 10^{157} की संख्या में एक के बाद 157 शून्य हैं! यह हमारे लिए आसान है कि 100 में एक संभावना को, या एक हज़ार में संभावनाओं में से एक को पूरा होते हुए समझें। परन्तु 10^{157} में एक संभावना का पूरा होना हमारे अनुभव से पूरी तरह से बाहर है। मैं केवल यही कहूंगा कि संसार के समूचे इतिहास में मसीहा सम्बन्धी सभी भविष्यद्वाणियों को पूरा करने हेतु किसी व्यक्ति की संभावना वस्तुतः शून्य है …जब तक कि घटनाओं को किसी बाहरी प्रतिनिधि के द्वारा संनियोजित न किया जाए, जो कि इस मामले में परमेश्वर ही होगा। असीमित विषमताओं के विपरीत जब हम मसीहा सम्बन्धित सारी भविष्यद्वाणियों को यीशु में पूरा होते हुए देखते हैं, तो यह बात हैरान कर देती है कि क्यों इतने सारे लोग उसकी पहचान को नहीं पहचान पाते। यीशु ही सचमुच में मसीहा है, देह में परमेश्वर—और इसकी संभावनाएं हमें उस दिशा की ओर बाध्य करती हैं।

यीशु के आश्चर्यकर्म भी उसके ईश्वरत्व को प्रमाणित करते हैं

नया नियम, जिसे विश्वसनीय दिखाया गया है, यीशु के द्वारा किए गए कई आश्चर्यकर्मों को प्रस्तुत करता है। यह याद रखना ज़रुरी है कि इस बात का दावा करने के द्वारा कि यीशु ने आश्चर्यकर्मों को अंजाम

दिया है, नए नियम के लेखकों के पास हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं था, जैसा कि बाद में दिखाया जाएगा। क्या आपने कभी उस धन-समृद्धि और ताकत के बारे में सुना है जिसे मत्ती, यूहन्ना, पतरस, पौलुस और बाकी लोगों के द्वारा इकट्ठा किया गया था? मुझे निश्चय है कि आपने नहीं सुना होगा क्योंकि ऐसी कोई बात है ही नहीं। पहली दो शताब्दियों में मसीही होना तरक्की करने के लिए अच्छा नहीं था।

नया नियम यीशु के द्वारा किए गए लगभग 35 तात्कालिक आश्चर्यकर्मों का आँखों देखा हाल वर्णित करता है जिन्हें प्रायः सैकड़ों लोगों की आँखों के सामने दिखाया गया था। नया नियम हमें बताता है कि यीशु ने बीमारों को और अंधों को चंगा किया था, प्राकृति की शक्तियों को नियन्त्रित किया था, और उसने मुर्दों में से लोगों को भी जिला दिया। यीशु पानी को दाखरस में बदलने और कुछ रोटियों और मछलियों से हज़ारों लोगों को भोजन कराने में सक्षम हुआ। ये आश्चर्यकर्म जितने भी अद्भुत प्रतीत हों, परन्तु वे परमेश्वर के पुत्र के लिए आसान थे। प्रेरित यूहन्ना अपने सुसमाचार में हमें बताता है कि वह सब कुछ जो अस्तित्व में है उसे यीशु के द्वारा सृजा गया था, अतः बीमार लोगों को चंगा करना, या प्राकृति की शक्तियों को नियन्त्रित करना जिन्हें उसने सृजा था उसके सामने कोई बड़ी चुनौती नहीं थी।

ऐसा ही एक आश्चर्यकर्म एक मरे व्यक्ति को जिलाना था। लाज़र, जो चार दिनों से मरा हुआ था, उसको जिलाने से पहले यीशु ने लाज़र की एक बहन मार्था से कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जिएगा।"[46]

यीशु ने प्रार्थना की और लाज़र को आज्ञा दी कि अपनी कब्र से बाहर आ जाए। नया नियम निम्नलिखित लेख को दर्ज़ करता है:

> यीशु ने कहा, "पत्थर हटाओ।" उस मरे हुए की बहिन मार्था उससे कहने लगी, "हे प्रभु, उसमें से अब तो दुर्गंध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।" यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?" तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया। यीशु ने आँखें उठाकर कहा, "हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आसपास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।" यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, "हे लाज़र, निकल आ!" जो मर गया था वह कफन से हाथ पांव बंधे हुए निकल आया, और उसका मुँह अंगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसे खोल दो और जाने दो।" (यूहन्ना 11:39-44)

यीशु ने यह अद्भुत आश्चर्यकर्म यह दिखाने के लिए किया था कि वह परमेश्वर के द्वारा भेजा हुआ है। उस दिन यीशु ने कई हृदयों और मनों को बदल दिया। प्रेरित यूहन्ना आगे कहता जाता है कि इस बड़े आश्चर्यकर्म को देखने के बाद यहूदियों में से अनेक लोग उस पर अपना विश्वास लाए। केवल परमेश्वर का पुत्र, देह में परमेश्वर, ही ऐसे कामों को कर सकता था।

सात
पुनरुत्थान का सत्य

यीशु के पुनरुत्थान के प्रमाण[47]

मैं ऐसा नहीं सोचता हूँ कि बहुत से लोग इस बात से इनकार करेंगे कि यदि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था, तो वह ज़रूर परमेश्वर होगा। बहुत ही पक्का प्रमाण है कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था। यह उस समय साफ हो जाता है जब हम यीशु के क्रूसारोहण के बाद प्रेरितों और तरसुस के शाऊल के कार्यों पर विचार करते हैं।

ऐसी घटनाएं जो अतीत में घटित हुई थीं उन्हें प्रमाणित या अप्रमाणित करने के लिए हमें कैसे आगे बढ़ना चाहिए? कुछ लोग यह विश्वास नहीं करते कि यीशु मुर्दों में से जी उठा क्योंकि यह वैज्ञानिक रूप से यह संभव नहीं है। अतीत में घटित सभी घटनाओं के समान, मसीहियत की सच्चाई का विश्लेषण करने के लिए वैधानिक और ऐतिहासिक पद्धतियों का उपयोग करते हुए इसके दावों का मूल्यांकन करने की ज़रूरत है।

अतीत की घटनाओं का आंकलन करने का तरीका फॉरेंसिक पद्धतियों पर आश्रित होता है न कि वैज्ञानिक पद्धतियों पर। ऐसी चीज़ें जो अतीत में घटित हुईं उन्हें वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है क्योंकि उन्हें फिर से सृजा नहीं जा सकता है। उदाहरण के लिए, हम वैज्ञानिक रूप से यह साबित नहीं कर सकते हैं कि जॉर्ज वाशिंगटन संयुक्त राष्ट्र के पहले राष्ट्रपति थे क्योंकि हम क्रांतिकारी समयावधि का रुपान्तरण नहीं कर सकते हैं। परन्तु हम उस समय के चश्मदीद गवाह की गवाहियों, दस्तावेज़ों, और पुरातात्विक प्रमाण का मूल्यांकन करने के द्वारा बिना किसी सन्देह के यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वे पहले राष्ट्रपति थे। चूंकि हम जॉर्ज वाशिंगटन से बात नहीं कर सकते हैं, परन्तु हम राष्ट्रपति के कार्यकाल के चारों ओर की घटनाओं के विषय में उनकी लेखनियों और अन्य चश्मदीद लेखों को अत्यंत महत्व देंगे। अतः आइए हम यीशु की मृत्यु, उसके पुनरुत्थान, और प्रारम्भिक कलीसिया के उदय के चारों ओर की घटनाओं के बारे में चश्मदीद गवाहों की गवाहियों पर विचार करें।

प्रेरितों ने पुनरुत्थित यीशु को देखा था

यीशु के क्रूसारोहण के बाद नया नियम प्रेरितों की दुखद तस्वीर प्रदान करता है। वह करिश्माई अगुवा जिसका उन्होंने तीन साल तक अनुसरण किया था उसे अपमानजनक मृत्यु दे दी गई थी—उसे एक आम अपराधी के समान क्रूस पर चढ़ाया गया था—और ऐसे लोग जो उसका अनुसरण करते थे वे अपने स्वयं के जीवनों को लेकर आतंकित थे। प्रेरित यूहन्ना उस समय के बारे में लिखता है कि यहूदियों के भय के कारण चेले बन्द दरवाज़ों के पीछे इकट्ठे होते थे। वे निःसन्देह डरे हुए थे कि अगली बारी कहीं उनकी तो नहीं होगी। अनपेक्षित रूप से यीशु उस कमरे में प्रगट हुआ जहाँ शिष्य इकट्ठे थे। यूहन्ना यह लिखता है:

> उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहाँ के द्वार जहाँ चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और उनके बीच में खड़ा हो कर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" और यह कह

> कर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए; तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए। (यूहन्ना 20:19-20)

यीशु चेलों के पास महज एक आत्मा के रूप में नहीं आया था। लूका बताता करता है कि यीशु ने चेलों को चुनौती दी थी कि वे उसे छूएं। उसने उनकी उपस्थिति में भुनी हुई मछली का टुकड़ा खाया। उसने यह दिखाने के लिए इन कामों को किया था कि वह मांस एवं लहू का प्राणी था और वह सचमुच में मरे हुओ में से जी उठा था (लूका 24:39-43)।

यीशु की मृत्यु के साथ, यहूदियों ने स्थिति को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास किया

यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के बाद, यहूदी प्रयास कर रहे थे कि लोगों पर अपने नियंत्रण को फिर से कायम करें। जवान यहूदी जेलोतेस, तरसुस के शाऊल, को यीशु के अनुयायियों को सताने के लिए खुला छोड़ दिया गया था।

हम यीशु के अनुयायी स्तिफनुस पर पथराव के समय शाऊल से मिलते हैं। स्तिफनुस की मृत्यु को शाऊल ने स्वीकृति के साथ देखा था जैसा लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखता है:

> शाऊल उसके वध में सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा और उसके लिये बड़ा विलाप किया। शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालता था। (प्रेरितों 8:1-3)

शाऊल जीवन बदलनेवाला अनुभव करने वाला था, जैसा हम नीचे पढ़ेंगे।

चेलों ने पुनरुत्थान की घोषणा करने के लिए अपने जीवनों को जोखिम में डाल दिया था

सताव और कठिनाई के बावजूद भी कलीसिया तेजी से बढ़ने लगी। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के कुछ ही समय बाद ही, प्रेरित हियाव से यीशु के पुनरुत्थान की सच्चाई की घोषणा कर रहे थे।

पिन्तेकुस्त के दिन, जिसे कलीसिया का जन्म दिवस माना जाता है, पतरस ने यरूशलेम में कई देशों से आए हज़ारों यहूदियों की भीड़ को प्रचार किया। पतरस ने वहाँ यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान की घोषणा की। लूका बताता है कि उस दिन, लगभग 3,000 लोगों ने यीशु पर विश्वास किया था (प्रेरितों के काम 2)।

बाद में, पतरस और यूहन्ना ने मन्दिर में बीमारों को चंगा किया और यह घोषणा की कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था। इसके तुरन्त बाद, पतरस और यूहन्ना को यहूदियों के द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया; तब पतरस ने यहूदी अगुवों के सामने अपने कार्यों का बचाव किया था:

> तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो कर उनसे कहा, "हे लोगों के सरदारों और पुरनियों, इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हमसे उसके विषय में पूछताछ की जाती है, कि वह कैसे अच्छा हुआ। तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है। यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया। किसी दूसरे के

द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:8-12)

यहूदियों को समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करें। उन्होंने प्रेरितों को आज्ञा दी कि यीशु के नाम का न तो प्रचार करें और न ही सिखाएं, परन्तु प्रेरितों ने किसी भी तरह से ऐसा करना जारी रखा। प्रेरितों, चेलों, और ऐसे लोग जो यीशु पर विश्वास करने लगे थे उन्होंने पुनरुत्थान की सच्चाई की घोषणा की, और ऐसा करने के लिए कई लोगों को जान से मार दिया गया था। सांसारिक लेखनियों, प्रारम्भिक कलीसिया की लेखनियों, और बाइबल के अनुसार, इसी प्रकार से यीशु के कुछ प्रेरित और चेलों की मृत्यु हुई थी:[48]

स्तिफनुस	पत्थरवाह किया गया
पौलुस	गला काट दिया गया
पतरस	क्रूस पर चढ़ा दिया गया
याकूब (यीशु का भाई)	शहीद हुआ
याकूब	तलवार से काट दिया गया
थोमा	भाले से भेद दिया गया
फिलिप्पुस	क्रूस पर चढ़ा दिया गया
बरतुल्मै	क्रूस पर चढ़ा दिया गया
अन्द्रियास	क्रूस पर चढ़ा दिया गया
कई अन्य	मानव मशालों के रूप में ज़िंदा जला दिया गया, क्रूस पर चढ़ा दिया गया, या नीरो की अधीनता में जंगली जानवरों के द्वारा फाड़ कर चिथड़े चिथड़े कर दिया गया।

ऐसी क्या बात थी जो हतोत्साहित प्रेरितों और चेलों में इस रुपान्तरण को अंजाम दे सकती थी जिन्होंने हाल ही में अपने अगुवे को मारे जाते हुए देखा था? वह क्या बात है जो इतनी सम्पूर्णता से ऐसे रूपान्तरण को अंजाम दे सकती थी कि यीशु के प्रेरित और चेले मरने के लिए भी तैयार हो गए ताकि पुनरुत्थान की घोषणा निरन्तर जारी रह सके? *एकमात्र उचित उत्तर यह है कि प्रेरित और चेले सचमुच में विश्वास करते थे कि उन्होंने पुनरुत्थित मसीह को देखा था।* यह वाकई में उस समय उचित प्रतीत नहीं होता है जब प्रेरित और चेले कुछ ऐसा कहते रहेंगे जो संभवतः उन्हें उनकी मृत्यु की ओर ले जाता परन्तु वे वाकई में विश्वास नहीं करते!

यीशु के दूध-भाई, याकूब का हृदय परिवर्तन

यीशु के जन्म के बाद वास्तव में यूसुफ और मरियम के बच्चे हुए थे। नया नियम हमें बताता है कि यीशु के भाई थे (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3)। वे यीशु के दूध-भाई होंगे क्योंकि उनके पास अलग पिता था। पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु गर्भ में आया था; यीशु के अन्य भाई बहन यूसुफ के द्वारा गर्भ में आए थे।

यीशु पहिलौठा था, और याकूब यीशु का सबसे बड़ा भाई था। लूका और यूहन्ना के सुसमाचार हमें बताते हैं कि यीशु के भाइयों ने पहले पहल उस पर विश्वास नहीं किया था (लूका 8:19–21; यूहन्ना 7:5)। अन्य कई लोगों के समान, उन्हें भी संशय था। याकूब के लिए, उस संशय पर विजय पाने के लिए कुछ प्रकट रूप से घटित हुआ था।

अपने पत्रों में, पौलुस संकेत करता है कि पुनरुत्थित यीशु याकूब पर प्रकट हुआ था।[49] याकूब यीशु

में एक विश्वासी, मिशनरी, और यरूशलेम में कलीसिया का अगुवा बन गया था। यीशु के पुनरुत्थान की सच्चाई की घोषणा करने के लिए याकूब को यरूशलेम में यहूदी अगुवों के द्वारा आख़िरकार मार डाला गया। याकूब की मनोवृत्ति में इस बदलाव का संभवतः क्या कारण हो सकता है? *एकमात्र न्यायोचित उत्तर यह है कि याकूब सचमुच में विश्वास करता था कि उसने पुनरुत्थित मसीह को देखा था।*

पौलुस प्रमुख सतानेवाले से प्रमुख सुसमाचार प्रचारक में बदल जाता है

तरसुस का शाऊल उत्साही और महत्वाकांक्षी यहूदी था जिससे हमारा आमना-सामना ऊपर स्तिफनुस को पत्थरवाह करते समय हुआ था। हमारा आमना-सामना फिर से शाऊल से प्रेरितों के काम की पुस्तक में होता है जहाँ वह यीशु के विश्वासियों को मिटा देने के लिए धर्म युद्ध पर है:

> शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया और उससे दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी कि क्या पुरुष क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बांधकर यरूशलेम ले आए। (प्रेरितों 9:1-2)

शाऊल उन लोगों को एकत्र कर रहा था जो इस "मार्ग" के थे, जो मसीहियत का एक प्रारम्भिक नाम था, ताकि जांच के लिए उन्हें वापस यरूशलेम लेकर आए। हम कहीं और पाते हैं कि शाऊल होनहार और सफल यहूदी था, जिसे यरूशलेम में प्रमुख रब्बी के द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। जब शाऊल दमिश्क, सीरिया के मार्ग पर था, तब उसे जीवन-बदलनेवाला अनुभव हुआ था:

> परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" उसने पूछा, "हे प्रभु, तू कौन है?" उसने कहा, "मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा।" जो मनुष्य उसके साथ थे, वे अवाक रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे परन्तु किसी को देखते न थे। तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आंखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया, और वे उसका हाथ पकड़ के दमिश्क में ले गए। (प्रेरितों 9:1-8)

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, शाऊल का सामना पुनरुत्थित यीशु के साथ हुआ था। शाऊल बाद में प्रेरित पौलुस बन गया था, जो अब तक का सबसे बड़ा मसीही प्रचारक है। पौलुस अपने स्वयं के लेखनियों में इस बात की पुष्टि करता है कि पुनरुत्थित यीशु उस पर प्रगट हुआ था (1 कुरिन्थियों 15:8)।

इस जीवन-बदलनेवाली घटना के बाद, पौलुस उस सताव को फिर से याद करता है जिसे उसने यीशु के पुनरुत्थान की घोषणा को निरन्तर जारी रखने के लिए सहा था:

> पांच बार मैंने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैंने बेंतें खाईं; एक बार मुझ पर पथराव किया गया; तीन बार जहाज, जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात-दिन मैंने समुद्र में काटा। मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में रहा। परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार बार उपवास

> करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में; और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है। (2 कुरिन्थियों11:24-28)

पौलुस ने अपने सम्पूर्ण जीवन के दौरान दुःख उठाया था क्योंकि उसने यीशु के पुनरुत्थान की सच्चाई की घोषणा बंद करने से इनकार किया था। इस बात के कारण उसकी यहूदियों और रोमी लोगों से अनबन हो गई जो मसीहियत को नहीं समझते थे और उस पर विश्वास नहीं करते थे। अंत में, मसीहियों पर नीरो द्वारा आए सताव के दौरान पौलुस का सिर काट दिया गया था।

यीशु के पुनरुत्थान का प्रचार करने के लिए निरंतर अपने जीवन को जोखिम में डालने और खुद को पीड़ित करने हेतु पौलुस की इच्छा के पीछे क्या कारण हो सकता था? *एकमात्र उचित उत्तर यह है कि पौलुस वास्तव में यह विश्वास करता था कि उसने दमिश्क के मार्ग पर पुनरुत्थित मसीह को देखा था।*

यीशु मरे हुओं में से जी उठा था: इतिहास की घटनाएं इसकी पुष्टि करती हैं

प्रेरित और चेले पुनरुत्थान की सच्चाई का प्रचार करते हुए मरने के लिए क्यों तैयार होंगे? यीशु का संशयवादी दूध-भाई यरूशलेम में कलीसिया का अगुवा क्यों बनेगा और अन्ततः अपने विश्वास के लिए क्यों मर जाएगा? तरसुस का शाऊल कलीसिया के प्रमुख सतानेवाले से कलीसिया का प्रमुख सुसमाचार प्रचारक, अर्थात् प्रेरित पौलुस, क्यों बनेगा जो हज़ारों हज़ार किलोमीटर की यात्रा करता है, मार खाता है, कोड़े खाता है, उसका पत्थरवाह किया जाता है, उसका जहाज़ टूट जाता है, और वह तकरीबन डूब सा जाता है? यीशु के अनुयायियों में से किसी ने भी अपने कार्यों के लिए केवल सताव को छोड़कर और कुछ भी हासिल नहीं किया था। नया नियम स्पष्ट है कि यीशु के अनुयायी सांसारिक धन-समृद्ध में धनी नहीं थे।

इसका एकमात्र उत्तर जो उचित प्रतीत होता है वह यह है कि ये सभी लोग सचमुच में विश्वास करते थे कि उनका आमना-सामना पुनरुत्थित मसीहा से हुआ था। एक झूठ के लिए कौन मरने के लिए अपनी जान जोखिम में डालेगा? पुनरुत्थान की घोषणा करने में निश्चित रूप से कोई प्रसिद्धि या धन-सम्पति नहीं थी—केवल सताव और मृत्यु थी!

पहली शताब्दी की घटनाओं का आसानी से वर्णन नहीं किया जा सकता है। पतरस, यूहन्ना, मत्ती, पौलुस, यूहन्ना, याकूब, और अन्य प्रेरितों और चेलों का मानना था कि उन्होंने पुनरुत्थित मसीह को देखा था और वे इसकी घोषणा करते हुए मर गए थे। *यीशु के अनुयायी पुनरुत्थान पर विश्वास करते थे, और उनके कार्यों ने इसे साबित किया था। यह उस बदलाव का अत्युत्तम स्पष्टीकरण था जिसे प्रेरितों और चेलों में देखा गया था।*

पौलुस कुरिन्थियों को लिखे अपने पहले पत्र में पुष्टि करता है कि अनेक लोगों ने पुनरुत्थित मसीह को देखा था:

> इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, और कैफा [पतरस का अरामी भाषा वाला नाम] को तब बारहों को दिखाई दिया। फिर वह पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुत से अब तक जीवित हैं पर कुछ सो गए। फिर वह याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ। (1 कुरिन्थियों 15:3–8)

पौलुस यहाँ कह रहा है, कि मसीह हमारे पापों के लिए मर गया; और गाड़ा, और तीन दिनों के बाद मरे हुओं में से जी उठा था। तब वह पतरस और प्रेरितों को, 500 से भी अधिक यीशु के चेलों को एक

साथ, और फिर याकूब को, और अंत में पौलुस को दिखाई दिया था। पौलुस कहता है कि उनमें से बहुत से लोग जिन्होंने यीशु को देखा था वे उसके लिखने के समय तक अभी भी जीवित थे मानो वे ऐसा कहते हैं, "जाओ और आप ही इसकी जांच कर लो। स्वयं ही गवाहों से बात कर लो।" पौलुस इन बातों को क्यों लिखेगा (यदि यह गलत होता तो उसका आसानी से खण्डन किया जा सकता था) जब तक वे सच न हों? 500 से भी अधिक लोग बिलकुल उसी भ्रम से पीड़ित नहीं हो सकते थे। उसने ऐसा किया इसका एकमात्र प्रत्यक्ष उत्तर है कि यह सही था। *यीशु वाकई में मरे हुओं में से जी उठा था और बहुतों के द्वारा उसे देखा गया था।*

केवल परमेश्वर ही मरे हुओं में से जीवित हो सकता था

यदि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था जैसा स्पष्ट रूप से प्रमाण संकेत देते हैं, तो यीशु परमेश्वर का पुत्र है, जैसा उसने दावा किया था। परमेश्वर के पुत्र को अनदेखा करना, उसे खारिज या अस्वीकार करना नासमझी होगी।

यीशु मरे हुओं में से जी उठा है : खाली कब्र इसकी पुष्टि करती है

पुनरुत्थान के इर्द-गिर्द की घटनाओं के बारे में यहूदियों की प्रतिक्रिया दिखाती है कि यीशु के क्रूसारोहण और दफ़नाने के बाद रविवार की सुबह कब्र वाकई में खाली थी।

हम जानते हैं कि कब्र खाली थी क्योंकि यहूदी अगुवों को एक कहानी गढ़नी पड़ी थी कि यीशु के चेलों ने उसकी देह को चुरा लिया था। यदि देह अभी भी कब्र में होती, तो उन्हें इसका वर्णन के लिए कोई कहानी गढ़नी नहीं पड़ती!

मत्ती का सुसमाचार यहूदी अगुवों की प्रतिक्रिया को दस्तावेज़ में दर्ज़ करता है:

> वे जा ही रही थीं कि पहरुओं में से कुछ ने नगर में आकर पूरा हाल प्रधान याजकों से कह सुनाया। तब उन्होंने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की और सिपाहियों को बहुत चांदी देकर कहा, "यह कहना कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए। और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे।" अत: उन्होंने रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया। यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है। (मत्ती 28:11-15)

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पुनरुत्थान की पहली सुबह कब्र खाली थी।[50] उस संभावना के बारे में क्या कहा जाए कि यीशु के चेले उसकी लोथ को चुराकर ले गए थे? मत्ती 27 में, हम पाते हैं कि यहूदियों ने यीशु की कब्र पर एक पहरुए को तैनात किया था और उस पर मुहर लगा दी थी। कब्र सुरक्षित थी, इसी लिए उन्हें यह कहने के लिए पहरुओं को घूस देने की आवश्यकता थी कि जब वे सो रहे थे तो यीशु के चेलों ने आकर उसकी लोथ को चुरा लिया।

यीशु की लोथ को या तो छिपा लिया गया था, या वह वह हवा में गायब हो गई थी, या, जैसा यीशु के चेले हमें बताते हैं, यीशु मरे हुओं में से जी उठा था और कब्र से बाहर निकल आया था। चेलों के पास यीशु की लोथ को चुराने का मौका नहीं था, क्योंकि कब्र पर पहरा लगा हुआ था। ऐसा करने के द्वारा उनके पास हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं था। यीशु की लोथ स्पष्ट रूप से हवा में गायब नहीं हुई थी। ऐसा कोई प्राचीन प्रमाण नहीं है कि यीशु की लोथ को खोजा गया था, परन्तु प्रचुर मात्रा में ऐसे प्रमाण मिलते हैं

कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था, जैसा इनकी ऊपर विस्तार से चर्चा की गई थी। चेलों के कार्यों और अपने दावों के लिए मरने की उनकी तत्परता को देखते हुए यह अत्यंत न्यायोचित प्रतीत होता है कि पुनरुत्थान के विषय में चेलों के लेख को स्वीकार किया जाए।

मसीहियत के तेज़ी से फैलने के प्रमाण

प्रेरितों और यीशु के चेलों ने यीशु के पुनरुत्थान के समाचार को पूरे रोमी संसार में तेजी से फैलाया था। दूसरी शताब्दी के अंत तक, मसीहियत ऐसे युग में यरूशलेम से 2,000 मील दूर फैल गई थी जहाँ यात्रा को पैदल चल कर, पालदार जहाज़ में, या किसी जानवर की पीठ पर बैठ कर किया जाता था।

दो शताब्दियों से भी कम समय में, मसीही समुदाय भूमध्यसागर के संसार में चारों ओर स्थापित हो गए थे जो आज इस्राएल, तुर्की, बुल्गारिया, ग्रीस, इटली, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, स्पेन, अल्जीयर्स, ट्यूनीशिया, लीबिया, और मिस्र हैं।[51]

चेले उस खबर को फैलाते हैं क्योंकि जब यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया था उसके ठीक पहले उसने कहा था कि जाओ और सभी जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो:

> यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।" (मत्ती 28:18-20)

यीशु ने उन सभी से अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा की थी जो उस पर विश्वास रखते हैं परन्तु केवल ऐसे लोगों से ही प्रतिज्ञा की जो उसमें विश्वास करते हैं। यूहन्ना 3:16-18 में यीशु ने कहा:

> "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उस के द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूहन्ना 3:16–18)

साफ तौर पर, प्रेरित और चेले ऐसे तरीके से काम करते थे जो यह दिखाता था कि वे यीशु के निर्देशों पर और उस सन्देश को बोलने के महत्व पर विश्वास करते थे, भले ही इसकी कीमत उन्हें अपना जीवन देकर ही क्यों न चुकानी पड़े।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि मसीहीयत के इस तेज प्रारम्भिक फैलाव को पूरी तरह से शांतिपूर्ण माध्यमों के द्वारा और अत्यधिक व्यक्तिगत जोखिम उठाकर पूरा किया गया था। प्रारम्भिक मसीहियों के अधिकांश सताव का अंत उस समय हो गया था जब रोमी सम्राट कॉन्सटेनटाइन महान ने 313 ईस्वी में मिलान का आदेशपत्र जारी किया था जो मसीही आराधना को वैध ठहराता था, इस प्रकार द्रुत गति से बढ़ने के लिए मसीहियत के फैलाव की अनुमति दी गई थी।

आठ
प्राचीन गैर-मसीही लेखों ने मसीही दावों की पुष्टि की है

किसी व्यक्ति को ऐसा कहते हुए सुनना असामान्य नहीं है कि नए नियम से बाहर यीशु के बारे में ज्यादा जानने के लिए कुछ भी नहीं है या यह कि वह कभी था ही नहीं। तथ्य यह है कि बाइबल के बाहर असंख्य प्राचीन स्रोत मसीहियत के महत्वपूर्ण दावों की पुष्टि करते हैं। *मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि सांसारिक लेखक यह विश्वास करते थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था और यह कि वह मुर्दों में से जी उठा था, परन्तु वे यह पुष्टि ज़रूर करते थे कि पहली और दूसरी शताब्दी में उसके विषय में इन बातों को कहा जा रहा था।*

इस अध्याय की समाप्ति पर मैं इस विषय में एक सार प्रस्तुत करूँगा कि हम प्राचीन सांसारिक और गैर-मसीही लेखों से मसीहियत के बारे में क्या सीखते हैं, परन्तु पहले, आइए हम स्वयं इन लेखों पर विचार करें।

टेसिटस

टेसिटस, रोमी इतिहासकार, 109 ईस्वी में लिखते हुए इस बात की पुष्टि करता है कि नीरो के शासनकाल में मसीहियों की यातना दी गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि रोम में आग लगाने के लिए कुछ लोगों ने नीरो पर सन्देह किया था। परन्तु उसने अपने ऊपर से दोष को हटाने के लिए मसीहियों को बलि का बकरा बना दिया था। ख्रिस्तुस (मसीह का लतीनी रूप), को मसीहियत की शुरुआत करनेवाले के रूप में जाना जाता है जिसे पुन्तियुस पिलातुस के द्वारा मार डाला गया था। टेसिटस संकेत करता है कि प्रारम्भिक मसीहियों को दर्दनाक तरीकों में मार डाला जाता था। उन्हें कुत्तों के द्वारा फाड़ डाला जाता था, क्रूस पर चढ़ाया जाता था, या मानव मशालों के रूप में जला दिया जाता था ताकि वे रात में जगमगाहट प्रदान कर सकें। नीरो ने 54 ईस्वी से लेकर 68 ईस्वी तक शासन किया था। रोम की बड़ी आग 64 ईस्वी में लगी थी, अतः मसीहियों का यह सताव नीरो के शासनकाल के अंत में भड़का था। इस समयाविधि के दौरान यह माना जाता है कि प्रेरित पतरस और प्रेरित पौलुस भी शहीद हुए थे। टेसिटस *वर्षक्रमिक लेखों (Annals)* के इस परिच्छेद में इस भयंकर वृतान्त को लिखता है:

> फलस्वरूप, उस रिपोर्ट से छुटकारा पाने के लिए, नीरो ने एक ऐसे वर्ग को लोगों पर उस दोष को मढ़ा जिसे जनसामान्य लोग मसीही कहते थे; और उनके कामों को घृणित मानते हुए उसने उन्हें अत्यंत गंभीर यातनाएँ दीं। ख्रिस्तुस, जिससे मसीही नाम की उत्पत्ति हुई थी, उसने हमारे हकीमों में से एक पुन्तियुस पिलातुस के हाथों से तिबिरियुस के शासनकाल के दौरान भयानक दण्ड को सहा था, और एक अत्यंत हानिकारक अंधविश्वास, जिसे कुछ पल के लिए जांचा गया था, फिर से न केवल यहूदिया में भड़क उठा, जो बुराई का पहला स्रोत था, बल्कि यहाँ तक कि रोम में भी भड़क उठा था, जहाँ सभी चीज़ें जो संसार के प्रत्येक भाग से छिपी और शर्मनाक थीं उन्होंने अपने केन्द्र को पा लिया था और प्रसिद्ध हो गई थीं। इसी के अनुसार, पहले उन सभी की गिरफ्तारी की गई जिन्हें दोषी पाया गया था; फिर, उनकी जानकारी के अनुसार, एक बड़ी भीड़ को दोषी ठहराया गया, शहर को आग लगाने के इतने बड़े अपराध के लिए नहीं, परन्तु मानवजाति के विरुद्ध नफरत फैलाने के लिए। उनकी मृत्यु के साथ हर किस्म के हंसी-ठट्ठे को जोड़ दिया गया था। पशुओं

> की खालों से ढककर, उन्हें कुत्तों के द्वारा फाड़ा डाला गया था और वे मार दिए गए, या उन्हें क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया गया था, या उन्हें आग की लपटों और जलाने का दण्ड दिया गया था, जिससे उस समय रात की जगमगाहट का काम करें, जब दिन की रोशनी ढल जाती थी।[52]

जोसीफुस

जोसीफुस प्रथम-शताब्दी का यहूदी इतिहासकार था जो 37 या 38 ईस्वी से 97 ईस्वी के बीच रहा। वह रोमी सेना में काम करता था, और नौकरी में बाद, उसे रोमी सम्राट वेस्पेसियन के अधीन न्यायलय में इतिहासकार के रूप में नियुक्त किया गया था। *प्राचीन लेखों (Antiquities)* में जोसीफुस ने निम्नलिखित बातों को लिखा था:

> इस समय पर एक बुद्धिमान मनुष्य था जिसे यीशु कहा जाता था। उसका आचरण अच्छा था और [उसे] सद्गुण के लिए जाना गया था। और यहूदियों और अन्य जातियां में से अनेक लोग उसके चेले बन गए थे। पिलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने और मार डालने का दण्ड दिया था। परन्तु ऐसे लोग जो उसके चेले बन गए थे उन्होंने उसकी शिष्यता को नहीं छोड़ा था। उन्होंने सूचना दी कि अपने क्रूसारोहण के तीन दिन बाद वह उनके सामने प्रकट हुआ था, और यह कि वह जीवित है; तदनुसार शायद वह मसीहा था, जिसके सम्बन्ध में भविष्यद्वक्ताओं ने बार बार अद्भुत बातें कही थीं।[53]

जोसीफुस हमें सूचित करता है कि यीशु एक बुद्धिमान और खरा मनुष्य था जिसने प्रशंसकों की बड़ी भीड़ को इकट्ठा कर लिया था। उसे पिलातुस के द्वारा क्रूस पर चढ़ाए जाने की सजा दी गई थी, परन्तु उसके मरने के बाद भी, उसके चेले लगातार उसकी शिक्षा का अनुसरण करते रहे। उन्होंने यह दावा किया कि उन्होंने उसे जीवित देखा है। जोसीफुस, जो यहूदी था और भविष्यद्वाणियों से परिचित रहा होगा, यहाँ तक कह देता है कि "शायद" वह मसीहा था जिसकी भविष्यद्वाणी भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा की गई थी।

थालुस

थालुस ने 52 ईस्वी में लिखा था। उसका कोई भी लेखन कार्य आज मौजूद नहीं हैं, हालांकि उद्धरणों के कुछ हिस्सों को अन्य लेखकों के द्वारा सुरक्षित रखा गया है। ऐसा ही एक लेखक है जूलियस अफ्रिकानुस, जिसने लगभग 221 ईस्वी में अपने लेखन कार्यों को लिखा था। वह उन घटनाओं के सम्बन्ध में थालुस की उद्धरण देता है जो मसीह के क्रूसारोहण के इर्द-गिर्द थीं। मसीह के क्रूसारोहण के समय थालुस ने एक सूर्य ग्रहण और भूकंप का वर्णन किया था:

> समूचे संसार पर अत्यंत भययोग्य अन्धकार छा गया था; और चट्टानें भूकंप के द्वारा फट गई थीं, और यहूदिया और अन्य प्रान्तों में अनेक स्थान उलट-पलट हो गए थे। थालुस अपने *इतिहास* की तीसरी पुस्तक में इस अंधकार के विषय में बिना किसी सन्देह के कहता है कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह सूर्य ग्रहण है।[54]

इस अंश में, जूलियस अफ्रिकानुस, थालुस का उद्धरण देते हुए, पुष्टि करता है कि क्रूसारोहण के बाद, अन्धकार इस तरह संसार पर छा गया था जैसे सूर्य ग्रहण हो, जबकि किसी ग्रहण की, और भूकंप के घटित होने की अपेक्षा नहीं की गई थी। इस प्रकार थालुस, क्रूसारोहण के बाद बीस सालों से भी कम समय में लिखते हुए, घटनाओं की पुष्टि करता है जिनका वर्णन सुसमाचार के लेखकों, मत्ती और लूका के द्वारा किया गया था (मत्ती 27:51; लूका 23:44)।

112 ईस्वी में प्लीनी द यंगर और सम्राट ट्राजन

प्लीनी द यंगर एक रोमी प्रशासक था। वह प्लीनी द एल्डर का गोद लिया हुआ पुत्र था, जो स्वाभाविक रूप से एक इतिहासकार था। प्लीनी द यंगर के पास अनेक सैन्य और नागरिक पदवियां थीं, जिसमें रोमी सम्राट ट्राजन के अधीन शाही न्यायाधीश का पद भी शामिल था।

लेख के निम्नलिखित अंश में, मसीहियों से निपटने के सम्बन्ध में प्लीनी ने ट्राजन से सलाह लेने का प्रयास किया था। इस बातचीत में, हम सीखते हैं कि मसीह के प्रति श्रद्धा का पालन करने के लिए मसीहियों को सताया जा रहा था।

उस समय रोमियों की नीति यह थी कि मसीहियों को धर्म-त्याग का एक अवसर प्रदान किया जाए और वे मसीह को कोसें, और रोमी देवताओं एवं सम्राट की उपासना करें। यदि वे ऐसा करने के लिए तैयार होते हैं, तो उन्हें क्षमा किया जाएगा और छोड़ दिया जाएगा। अन्यथा, उन्हें दण्डित किया जाएगा। हमें पता चलता है कि सच्चे मसीही विश्वासी मसीह के नाम को नहीं कोसेंगे और रोमी देवताओं की उपासना नहीं करेंगे।

यह अंश प्रारम्भिक मसीही आराधना पर भी अन्तःदृष्टि प्रदान करता है: एक निश्चित दिन पर, मसीही लोग मसीह का स्तुतिगान अर्पित करने के लिए इकट्ठे होते हैं जिसे वे परमेश्वर के समान परमआदर देते हैं। वे बुराई से दूर रहने के लिए सहमत होते हैं और फिर चले जाते हैं। बाद में, मसीही लोग प्रीति भोज के लिए इकट्ठे होते हैं।

अपने प्रत्युत्तर में, ट्राजन प्लीनी द्वारा मसीहियों से निपटने की पुष्टि करता है।

ट्राजन से प्लीनी का प्रश्न:

> मेरी यही रीति है, महाराज, कि ऐसे सभी मामलों में आपकी सलाह लूँ, जहाँ मुझे सन्देह है, क्योंकि आपसे बढ़कर ऐसा कौन है जो बेहतर ढंग से कठिनाइयों को दूर कर सकता है और मुझे सूचित कर सकता है? मैं कभी मसीहियों की किसी भी कानूनी जांच में उपस्थित नहीं रहा हूँ, और इसलिए मैं नहीं जानता हूँ कि वह आम सजाएं क्या हैं जो उन्हें दूं, या उन सजाओं की सीमाएं क्या हैं, या कितनी खोजबीन की जानी चाहिए…। इसी बीच, यह वह योजना है जिसे मैंने ऐसे मसीहियों के मामले में अपनाया है जिन्हें मेरे सामने लाया गया है। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे मसीही हैं, यदि वे कहते हैं "हाँ," तो मैं दूसरी बार प्रश्न को दोहराता हूँ, और फिर तीसरी बार—इसमें शामिल सजाओं के विषय में चेतावनी देते हुए दोहरता हूं; और यदि वे दृढ़ता से बने रहते हैं, तो मैं उन्हें जेल में डालने का आदेश देता हूँ। क्योंकि मैं सन्देह नहीं करता हूँ कि—चाहे उनका स्वीकृत अपराध जो कुछ हो—उनकी ज़िद और अटल हठ को निश्चित रूप से दण्डित किया जाना चाहिए…। ऐसे लोग जिन्होंने इन्कार किया था कि वे मसीही थे या मसीही रहे थे और जिन्होंने सामान्य मन्त्र के साथ देवताओं को मेरे पीछे पीछे शब्दों को दोहराते हुए पुकारा था, और ऐसे लोग जिन्होंने आपकी प्रतिमा के सामने धूप और शराब अर्पित किया था—जिसकी मैंने आज्ञा दी थी कि देवताओं की दैनिक मूर्तियों के साथ—ऐसे सभी लोगों को जिन्हें मैंने दोषमुक्त माना था— इस उद्देश्य हेतु सामने लाया जाए, विशेष रूप से तब जब वे मसीह के नाम को कोसते हैं, जबकि ऐसा कहा जाता है कि *प्रमाणिक* मसीहियों को ऐसा करने के लिए बहकाया नहीं जा सकता।[55]

प्लीनी मसीही आराधना का वर्णन करना जारी रखता है जैसे वह इसे समझता है:

> …एक निश्चित दिन को वे भोर से पहले मिला करते थे और अपने बीच मसीह का स्तुतिगन करते थे, मानो कि वह कोई ईश्वर हो। किसी भी अपराध रहने की वे सौगंध खाते थे, वे चोरी, डकैती, व्यभिचार, विश्वास भंग से दूर रहने के लिए शपथ लेते थे, और अपने पास न्यास कोष से इन्कार नहीं करते थे जब उन्हें उसे देने

के लिए कहा जाता था। इस उत्सव के समाप्त होने के बाद, वे चले जाते थे और भोजन लेने के लिए फिर से मिलते थे—परन्तु इसमें कोई विशेष गुण नहीं था, और यह पूरी रीति से हानि रहित था।[56]

प्लीनी को ट्राजन का जवाब

मेरे प्रिय प्लिनी, ऐसे मसीहियों के मामलों की जांच करने में तूने सही पथ को अपनाया है जो तेरे सामने आए थे; क्योंकि ऐसे व्यापक प्रश्न को ढकने के लिए किसी कठोर नियम को स्थापित नहीं किया जा सकता है। मसीहियों को ढूंढ़कर न निकाला जाए। यदि वे तेरे सामने लाए जाते हैं, और अपराध साबित हो जाता है, तो उन्हें दण्डित किया जाए, परन्तु इस सुरिक्षत अधिकार के साथ—कि यदि कोई व्यक्ति इन्कार करता है कि वह मसीही है, और इस बात को स्पष्ट करता है कि वह, देवताओं को प्रार्थना अर्पण करने के द्वारा मसीही नहीं है, तो उसके अस्वीकार पर उसे क्षमा करना है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि उसका अतीत कितना भी संदेहास्पद रहा हो।[57]

समोस्ता का लूसियन (लगभग 125–180 ईस्वी)

समोस्ता का लूसियन अश्शूर का व्यंग्यकार था जिसने यूनानी भाषा में लिखा था। नीचे दिए गए अंश में, हम सीखते हैं कि मसीही लोग प्रभु के दिन में मसीह की आराधना करते थे, जो मसीहियत को आरम्भ करने वाला था। हम यह भी सीखते हैं कि मसीही लोग अपने आपको अविनाशी मानते थे, और इस लिए, वे मृत्यु से नहीं डरते थे। वे दूसरों को भाई समझते थे, यूनानी देवताओं का इन्कार करते थे, और उस मसीह की आराधना करते थे जिसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया था। वे सांसारिक साजो-सामान से जुड़े हुए नहीं थे और अपनी सम्पत्ति को एक दूसरे के लिए साझा करते थे।

मसीही लोग, जिन्हें आप जानते हैं, एक *मनुष्य* की आराधना करते हैं, --विशिष्ट प्रतिष्ठित पुरुष जिसने अपने नए संस्कारों का परिचय कराया था, और उसे उस कारण क्रूस पर चढ़ा दिया गया था…। आप देखिए, ये गुमराह किए गए लोग इस सामान्य दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करते हैं कि वे सम्पूर्ण समय के लिए अविनाशी हैं, और यह मृत्यु की अवमानना और स्वैच्छिक आत्म-भक्ति का वर्णन करता है जो उनके मध्य अत्यंत सामान्य है; और फिर उन्हें मूल व्यवस्था देनेवाले के द्वारा उन पर यह प्रभाव डाला गया था कि वे सभी आपस में उसी क्षण से भाई हैं जब उनका हृदय परिवर्तन होता है, और वे यूनान के देवताओं का इन्कार करते हैं, और क्रूस पर चढ़ाए गए अपने संत की आराधना करते हैं, और उसके नियमों के अनुसार जीवन जीते हैं। इन सब पर वे इस परिणाम के साथ पूर्णतया भरोसा करते हैं कि वे सभी सांसारिक साजो-सामानों को समान रूप से तुच्छ जानते हैं, उन्हें महज सार्वजानिक सम्पत्ति के रूप में मानते हैं।[58]

यहूदी स्रोत: बेबीलोन का तालमुद

यीशु के क्रूसारोहण से सम्बन्धित प्राचीन यहूदी स्रोत को यहूदी महासभा के अभिलेखों में बेबीलोन के तालमुद में पाया जाता है। यह अंश पहली दो शताब्दी की तिथि निर्धारित करता है और हमें बताता है कि यहूदी यीशु को पत्थर मारने के लिए पहले से अपनी योजना की घोषणा करते हैं। अंत में, हमें पता लगता है कि यीशु को लटका दिया गया था, जैसे "पेड़ पर लटका दिया जाता है," जो क्रूसारोहण की ओर संकेत करती हुई एक और अभिव्यक्ति है, जिसका उपयोग प्रेरित पतरस ने प्रेरितों के काम 5:30 में किया था। हम सीखते हैं कि यीशु पर जादू-टोने का दोष लगाया गया था, जो आश्चर्यकर्मों को अंजाम देने की उसकी योग्यता को बताता था। यह भी साफ है कि यहूदी महासभा इस बात से चिंतित थी कि यीशु लोगों को उनके नियंत्रण से निकालकर उसमें ले जा रहा था जिसे उन्होंने "स्वधर्म त्याग" का नाम दिया था। यह अंश आगे और पुष्टि करता है कि यीशु को फसह के पर्व की संध्या मार दिया गया था जैसा सुसमाचार वृत्तांतों में सूचित किया गया है।

फसह की संध्या में यीशु को लटका दिया गया था। मार दिए जाने के चालीस दिन पहले, एक सन्देशवाहक आगे आगे गया और चिल्लाकर कहने लगा, "उसे पत्थर मारा जानेवाला है क्योंकि उसने जादू-टोने का अभ्यास किया है और स्वधर्म त्याग के लिए इस्राएल को बहकाया है। कोई भी व्यक्ति जो उसके पक्ष में कुछ कह सकता है, वह सामने आए और उसके बदले में याचना करे।" परन्तु जबकि उसके पक्ष में कुछ भी सामने नहीं लाया गया था इसलिए फसह की संध्या उसे लटका दिया गया था![59]

गैर-मसीही स्रोत मसीहियत के प्रमुख दावों की पुष्टि करते हैं

इस अध्याय की शुरुआत में जैसा कि मैंने कहा था, मसीहियत के प्रमुख दावों की पुष्टि सांसारिक और गैर-मसीही लेखकों के द्वारा की गई थी। ऐसा न कहें कि सांसारिक और यहूदी लेखकों के द्वारा दावों पर विश्वास किया गया था, परन्तु यह साफ है कि इक्कीसवीं शताब्दी में मसीहियत के प्रमुख दावे पहली और दूसरी शताब्दियों में मौजूद थे।

हम निम्नलिखित रूप में उसका सार प्रस्तुत कर सकते हैं जिसे हम इन स्रोतों से प्रारम्भिक मसीहियत के बारे में सीखा गया है: 1) मसीहियों को उनके विश्वास के लिए सताया और मार डाला जाता था। 2) सच्चे मसीही यीशु के बारे में अपनी गवाही को त्यागने से मना करते थे। 3) प्रारम्भिक मसीही यीशु की शिक्षा का अनुसरण करते थे और अपने विश्वास के लिए मरने के लिए भी तैयार थे। 4) यीशु ने अद्भुत कामों या आश्चर्यजनक चिन्हों को अंजाम दिया था जिनकी व्याख्या कुछ लोगों के द्वारा जादू-टोने के रूप में की गई थी। 5) मसीहियत रोमी साम्राज्य में तेजी से फैल गई थी। 6) मसीही लोग शांतिपूर्ण थे। 7) मसीहियों ने रोमी और यूनानी देवताओं की आराधना करने से इन्कार किया था। 8) मसीही लोग विश्वास करते थे कि यीशु मुर्दों में से जी उठा था। 9) मसीही विश्वास करते थे कि उनके पास अनंत जीवन होगा। 10) यीशु ने खरा जीवन जीया था। 11) अनेक यहूदी और अन्यजाति यीशु के अनुयायी बन गए थे। 12) यीशु को मौत की सजा दी गई थी और उसे पुन्तियुस पिलातुस के द्वारा क्रूस पर चढ़ा दिया गया था। 13) अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद यीशु अपने चेलों के सामने प्रकट हुआ था।

सांसारिक और यहूदी लेखकों ने उस रिपोर्ट पर महत्वपूर्ण वैधता को जोड़ दिया था जो नए नियम में मिलती हैं।

मसीहियों ने विश्वास त्यागने से मना किया था—पुनरुत्थान के और अधिक प्रमाण

दूसरी शताब्दी आते-आते, मसीहियत तीव्र गति से फैलने लगी थी। जैसा हमने ऊपर 112 ईस्वी में प्लीनी और रोमी सम्राट ट्राजन के बीच हुए संवाद से जाना था, कि जो मसीही लोग यीशु के बारे में अपनी गवाही को त्यागते थे और रोमी देवताओं की पूजा करते थे उन्हें क्षमा किया जा सकता था। फिर भी सच्चे मसीही यीशु और उसके पुनरुत्थान की सच्चाई को छोड़ने से मना करके मरने को भी तैयार हो जाते थे। प्रायः इन मसीहियों को कई दिनों तक सताव का दुःख उठाना पड़ता था, परन्तु अंत में, यीशु को त्यागने से इन्कार करना, उन्हें भयानक मृत्यु तक पहुँचा देता था। बहुतों को क्रूस पर चढ़ा दिया गया था, खम्बे पर जला दिया गया था, या जंगली जानवरों को परोस दिया गया था।

प्रारम्भिक पहली शताब्दी में मसीही लोग ऐसी स्थिति में थे कि इस बात को जानें कि मसीहियत के प्रमुख दावे सच्चे हैं या नहीं। उन्हें केवल ऐसे लोगों से पूछताछ करने की आवश्यकता थी जो पिछली पीढ़ी, माता-पिता, और दादा-दादी से थे, जो घटनाओं के चश्मदीद गवाह होने की स्थिति में थे। क्या कोई माता/पिता या दादा/दादी की घटनाओं के संस्मरणों पर सन्देह करेगा जिन्हें उस स्त्री या पुरुष ने द्वितीय विश्वयुद्ध में देखा था? निश्चित तौर पर, अधिकांश लोग अपने माता-पिता और दादा-दादी पर भरोसा करेंगे

ठीक वैसे ही जैसे प्रारम्भिक मसीही अपने माता-पिता और दादा-दादी पर भरोसा करेंगे। यदि यीशु के विषय में मसीहियत और उसके केन्द्रीय दावे झूठे होते, तो प्रारम्भिक मसीहियों ने इसे जान लिया होता, इसे छोड़ दिया होता, यीशु का इन्कार कर दिया होता, और अपने जीवनों को बचाने के लिए रोमी देवताओं की आराधना की होती—परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं हुआ था!

कोई व्यक्ति ऐसी चीज़ के लिए नहीं मरेगा जिसे वे जानते हैं कि वह झूठ है। प्रारम्भिक मसीहियों ने यीशु को त्यागने और रोमी देवताओं की उपासना करने से मना किया था क्योंकि वे मानते थे कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है जो मुर्दों में से जी उठा था और उस पर विश्वास करने के द्वारा, उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण चीज़, अर्थात् स्वर्ग में अनंत जीवन, को प्राप्त किया है। कोई भी सांसारिक और अस्थायी यातना उसकी तुलना में बलिदान के लायक नहीं थी!

नौ
मसीहियत की अद्वितीय सच्चाई

यीशु सभी अन्य धार्मिक अगुवों से श्रेष्ठ है

विश्व धर्मों की अपनी कक्षा के पुनःअवलोकन के एक भाग में जिसे मैं पढ़ाता था, मैंने उसका एक सार प्रस्तुत किया था जो यीशु को मोहम्मद, बुद्ध, कन्फुशियस, हिन्दुओं के 33 करोड़ देवी-देवताओं, और किसी भी ऐसे धार्मिक अगुवे से अलग करता है जो कभी अस्तित्व में थे।

यीशु वाकई में किसी अन्य धार्मिक अगुवे के समान नहीं है क्योंकि उसके विषय में निम्नलिखित सभी बातें सही हैं, और मैं ऐसा कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं पा सकता हूँ कि वे किसी अन्य धार्मिक अगुवे के विषय में सही हो जो कभी मौजूद रहे।

1. अनेक स्पष्ट भविष्यद्वाणियों के साथ सैकड़ों वर्षों पहले से ही उसके आने और जीवन की भविष्यद्वाणी की गई थी।
2. उसने अपने जीवन के बारे में सभी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया।
3. उसने निष्पाप जीवन जीया।
4. उसने आश्चर्यकर्म दिखाए जिन्हें बहुतों के द्वारा देखा गया।
5. उसने भविष्य की घटनाओं के बारे में बताया, उनमें से कुछ पूरी हो चुकी हैं।
6. उसकी कहानी को एक पुस्तक (बाइबल) में बताया गया है जिसे ऐसा दर्शाया जा सकता कि वह ईश्वरीय है।
7. उसने अपने जीवन को सबके लिए छुटकारे के रूप में दे दिया।
8. वह मुर्दों में से जी उठा।
9. उसने कहा कि वह परमेश्वर है, और उसने इसे साबित भी किया।
10. उसने वापस लौटने की प्रतिज्ञा की।
11. उसने कहा था कि वह व्यक्तिगत रूप से अनंत जीवन का स्रोत है।
12. उसने स्वर्ग का वर्णन किया था जो मानव अनुभव से परे का है।

इन बातों में यीशु को छोड़कर इतिहास का कोई भी व्यक्ति सही नहीं! यीशु सचमुच में अद्वितीय है! वह इस सांसारिक आयाम से परे है और, इसलिए, वह हमें स्वर्गीय आयाम में पहुंच देने हेतु सक्षम है।

मसीहियत: एक सच्चा धर्म

क्या यह संभव है कि सभी धर्म सही हैं? उत्तर है नहीं क्योंकि सभी धर्म एक दूसरे का खण्डन करते हैं। नीचे दी गई तालिका पर विचार कीजिए।

विश्वास की प्रमुख पद्धतियों की तुलना					
दावा	**नास्तिक**	**मुस्लिम**	**यहूदी**	**मसीही**	**नव युगवाद/ पूर्वी धर्म**
यीशु परमेश्वर का अद्वितीय पुत्र है	नहीं	नहीं	नहीं	हाँ	नहीं
मनुष्य परमेश्वर है	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	हाँ
कोई परमेश्वर नहीं है	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं
मोहम्मद सबसे बड़ा नबी है	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं

इस तालिका की ओर देखने पर यह प्रकट होता है कि संसार के धर्मों के बीच बहुत असहमति है। केवल मसीही लोग ही सकारात्मक रूप से उत्तर देंगे कि यीशु ही परमेश्वर का एक एवं एकमात्र पुत्र है। नास्तिक लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, मुस्लिम यह विश्वास नहीं करते हैं कि परमेश्वर का कोई पुत्र हो सकता है, और यहूदी निश्चित रूप से इसे नकारते हैं। नव युगवादी/पूर्वी देश के धर्मावलम्बी यीशु को शायद का प्रबुद्धित जन या एक अवतार के रूप में देख सकते हैं, परन्तु परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र के रूप में नहीं देखते।

केवल नव युगवादी ही मनुष्य को परमेश्वर के रूप में देखते हैं, असल में, नव युगवाद का महत्वपूर्ण ध्यान केन्द्रण व्यक्ति के स्वयं के ईश्वरत्व के विषय में आत्म-जागरूकता को प्राप्त करने का है।

असल में, केवल नास्तिकवाद ही पुष्टि करेगा कि कोई परमेश्वर नहीं है; परन्तु, बौद्ध धर्म के कुछ विशेष मतों का झुकाव नास्तिकवाद की ओर है।

केवल मुस्लिम ही पुष्टि करेंगे कि मोहम्मद ही अन्तिम और सबसे बड़ा नबी है।

हम जल्दी से इस निष्कर्ष में आ गए हैं कि संसार के धर्म अनेक तरीकों से एक दूसरे का खण्डन करते हैं, फिर भी प्रत्येक धर्म अव्यक्त रूप से परम सत्य होने का दावा करता है।

मसीहियत दावा करती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, जो मुर्दों में से जी उठा था। अन्य सभी धर्म इस दावे को नकारते हैं। न्यायालय के सभाकक्ष में, यदि दो गवाह एक दूसरे का खण्डन करते हैं, तो उसमें से एक झूठ बोल रहा है, और दूसरा सच बोल रहा है, या दोनों ही गवाह झूठ बोल रहे हैं। संसार के धर्मों के बारे में ऐसा ही कहा जा सकता है। ज्यादा से ज्यादा एक ही धर्म सही हो सकता है। तर्कसंगत रूप से यह भी संभव हो सकता है कि सभी धर्म झूठे हों।

हम कैसे जानते हैं कि यदि कोई धर्म सही है तो वह कौन सा है?

वह प्रश्न जिसे पूछा जाना चाहिए वह यह है, "किस धर्म के सच्चाई के दावों को ऐतिहासिक, पुरातात्विक, और भविष्यद्वाणी सम्बन्धी प्रमाण के द्वारा समर्थन दिया गया है, और किस धर्म के पास अलौकिक उत्पत्ति के चिह्न हैं?

इस विषय के प्रति मेरे द्वारा निष्पक्ष रूप से किए गए गहन अध्ययन में, मैं किसी अन्य वैश्विक धर्मों की सच्चाई के दावों का समर्थन करनेवाले किसी भी विश्वसनीय प्रमाण से अवगत नहीं हूँ, जैसा हमने मसीहियत के सम्बन्ध में पिछले अध्यायों में देखा था। इस रीति से मसीहियत सचमुच में अद्वितीय है।

इसके लिए आपको मेरी बातों पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। संसार के धर्मों के विषय में आप अपने स्वयं के निजी अध्ययन को कर सकते हैं।

यीशु अपने लिए यह दावा करता है कि वही परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र मार्ग है, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना 14:6)

क्या यीशु वाकई में परमेश्वर का पुत्र है और परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र मार्ग है? मैं आशा करता हूँ कि पहले के अध्यायों में प्रस्तुत प्रमाण ने इसके उत्तर को स्पष्ट बना दिया है।

दस
यीशु और प्रेरितों ने बाइबल के बारे में क्या सिखाया था

मैं आशा करता हूँ कि आप सहमत होंगे कि इस बात के बहुत प्रमाण हैं कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है और यह कि यीशु ही मसीहा अर्थात् परमेश्वर का पुत्र है। यदि यीशु सचमुच में ईश्वरीय है, तो हमें उसकी ओर सावधानीपूर्वक ध्यान देना चाहिए जिसे वह सिखाता है। विशेष रूप में, आइए हम विचार करें कि यीशु ने बाइबल के बारे में क्या सिखाया था।

बाइबल के विषय में यीशु का दृष्टिकोण

निम्नलिखित अंश में, यीशु "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं" के अविनाशी होने की पुष्टि करता है, जो कि समूचा पुराना नियम है। वह कहता है कि वह उन्हें पूरा करने के लिए आया था, जो निश्चित रूप से यह देखते हुए उचित प्रतीत होता है कि उसने मसीहा सम्बन्धी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया था। इसके अतिरिक्त, यीशु कहता है कि पुराने नियम का एक भी भाग या सबसे छोटा ब्यौरा भी पूरा होने से नहीं चूकेगा, जैसा हम नीचे सीखते हैं।

> "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ; लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। (मत्ती 5:17-18)

यीशु कहता है कि मनुष्य को जीने के लिए भोजन से भी बढ़कर किसी चीज़ की आवश्यकता है। मनुष्य को परमेश्वर के वचन की भी आवश्यकता है जो कि बाइबल है:

> ...लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।' (मत्ती 4:4)

यीशु कहता है कि पवित्रशास्त्र, अर्थात्, पुराना नियम अखण्डनीय है, और आगे, यीशु सत्य के साथ परमेश्वर के वचन की बराबरी करता है:

> पवित्रशास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती…(यूहन्ना 10:35)

> सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है। (यूहन्ना 17:17)

यीशु सदूकियों को डांटता है और उन्हें बताता है कि उनकी गलतियां पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को नहीं समझने से आती हैं:

> "तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़े हो। (मत्ती 22:29)

"सम्पूर्ण सत्य में" प्रेरितों का मार्गदर्शन करने के लिए यीशु पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा करता है, और इस प्रकार वह नए नियम को प्रेरित करने की प्रतिज्ञा करता है:

> "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। (यूहन्ना 16:12-13)

यीशु जो परमेश्वर का पुत्र है और मुर्दों में से जी उठा है, उसने पुष्टि की थी कि समूचा पुराना नियम परमेश्वर का वचन है और उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि नए नियम का मार्गदर्शन परमेश्वर के आत्मा के द्वारा किया जाएगा। इसलिए, आदि से लेकर अंत तक, बाइबल परमेश्वर का वचन है।

निम्नलिखित सरल तर्क पर विचार कीजिए:

आधारवाक्य 1:	परमेश्वर त्रुटि नहीं कर सकता है
आधारवाक्य 2:	यीशु ने सिखाया था कि बाइबल परमेश्वर का वचन है
निष्कर्ष:	इसलिए, बाइबल को अवश्य ही त्रुटिहीन होना चाहिए

बाइबल के विषय में प्रेरितों का दृष्टिकोण

प्रेरित पौलुस कहता है, "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है।" (2 तीमुथियुस 3:16) इसके अतिरिक्त, पतरस कहता है, "पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जा कर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" (2 पतरस 1:20-21) बाद में इस पत्र में, पतरस पौलुस के पत्रों को इस रूप में सम्बोधित करता है "पवित्रशास्त्र" जो यह इंगित करता है कि पौलुस के पत्र परमेश्वर के द्वारा प्रेरित थे। (2 पतरस 3:15-16)

प्रेरित पतरस और पौलुस ने साफ तौर पर सिखाया था कि हमें पवित्रशास्त्र परमेश्वर के द्वारा दिया गया था। पवित्रशास्त्र बाइबल में है और और वह मानवता के लिए परमेश्वर के अचूक प्रकाशन है, और वह उन सब में सही है जिसकी वह पुष्टि करता है।

ग्यारह
मसीहियत क्या सिखाती है—एक सरल सार

मसीहियत अनेक बातों को सिखाती है, परन्तु यहाँ पर कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण चीज़ों की छोटी सी सूची है जो बाइबल में स्पष्ट है:

1. जगत और जो कुछ उसमें है उसे परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह के द्वारा सृजा गया।
2. मनुष्य परमेश्वर से अलग हो गया क्योंकि सब ने पाप किया है।
3. मसीह का जन्म कुंवारी मरियम से हुआ था।
4. मसीह परमेश्वर का पुत्र है।
5. सभी लोगों के पापों का मूल्य चुकाने के लिए मसीह क्रूस पर मर गया।
6. मसीह मुर्दों में से जी उठा था।
7. मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा उन सब का मेलमिलाप परमेश्वर से कर दिया, जो उस पर विश्वास करते हैं।
8. वे सब जो पश्चाताप करते हैं और मसीह पर विश्वास करते हैं उन्हें स्वर्ग में अनंत जीवन प्रदान किया जाएगा।
9. वे सब जो मसीह पर विश्वास करते हैं उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में नाम से बप्तिस्मा दिया जाना चाहिए, और उन्हें यीशु की शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिए।
10. बाइबल (पुराना नियम और नए नियम) परमेश्वर का प्रेरित और अचूक वचन है।
11. द्वितीय आगमन पर मसीह वापस लौटेगा।
12. सभी मनुष्यों की नियति स्वर्ग या नरक है।

सच्ची मसीहियत क्या है?

सच्ची मसीहियत वह सिखाती है जो बाइबल सिखाती है क्योंकि यह परमेश्वर का प्रेरित वचन है, जो त्रुटि रहित है (देखिए अध्याय 3, 4, 5 और 10)। संक्षेप में, मसीही लोग मानते हैं कि बाइबल सत्य की पुष्टि करती है। मसीही लोग बाइबल को जीवन को समझने और जीने के लिए सर्वोच्च मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा काम करते हुए साधारण लोगों (भविष्यद्वक्ताओं) का इस्तेमाल किया, जिनका अलग-अलग व्यक्तित्व था, और युगों से मानवता के लिए अपने सन्देश को दिया। इसके परिणाम स्वरूप बाइबल की पुस्तकों का संकलन हुआ।

जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, मसीही लोग विश्वास करते हैं कि कई महत्वपूर्ण कारणों से बाइबल परमेश्वर का वचन है।

1. बाइबल में मसीहा, इस्राएल, लोगों, और जातियों से सम्बन्धित अनेक विस्तृत

भविष्यद्वाणियों शामिल हैं जो संसार के इतिहास में अक्षरशः पूरी हुई हैं, जैसा कि ऊपर दिखाया गया है।

2. पुरातत्व विज्ञान ने बाइबल के लोगों और इसके इतिहास के सम्बन्ध में अत्याधिक समर्थन प्रदान किया है।
3. बाइबल को प्रारम्भिक पाण्डुलिपियों और बहुत सी प्रतियों के द्वारा समर्थन दिया गया है। अन्य प्राचीन पुस्तकों से अलग, बाइबल की पुस्तकों की हज़ारों आंशिक एवं सम्पूर्ण प्रतियां मौज़ूद हैं जो वर्णित घटनाओं से 50 से 100 वर्षों के भीतर की तिथि को तय करती हैं।
4. यद्यपि बाइबल को तकरीबन 40 लेखकों के द्वारा तीन भिन्न भाषाओं में और विभिन्न स्थलों में 1500 से अधिक वर्षों में लिखा गया था, फिर भी यह परमेश्वर की महिमा और पतित मानवता को बचाने के लिए उसकी योजना की एकीकृत तस्वीर प्रस्तुत करती है।
5. यीशु और प्रेरितों ने पुष्टि की थी कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।

मसीहियत के बारे में थोड़ा और ब्यौरा

निम्नलिखित भागों को बाइबल से लिया गया है और उसमें मसीहियत की शिक्षाओं की थोड़ी गहराई को जोड़ दिया गया है जिसेके बारे में ऊपर कहा गया था। मेरी वेबसाईट www.multimediaapologetics.com पर और अधिक जानकारी उपलब्ध है।

परमेश्वर

परमेश्वर एक है, परन्तु उस परमेश्वर में तीन व्यक्तित्व हैं: पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। एक साथ मिलकर, उन्हें त्रिएकत्व और कभी कभी परमेश्वरत्व के रूप में जाना जाता है। त्रिएकत्व का प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर है, और वे एक दूसरे के साथ सिद्ध एकता में है।

परमेश्वर उस सबका मापदण्ड है जो अच्छा है। वह किसी भी रीति से पाप को सहन और उसे अनदेखा नहीं कर सकता है क्योंकि यह उसके सिद्ध स्वभाव से पूरी तरह से विपरीत है। हम कहते हैं कि परमेश्वर पवित्र है क्योंकि वह असिद्धता और बुराई से स्वतन्त्र है। परमेश्वर सर्व-शक्तिमान और सर्व-ज्ञानी है। वह सब जो अस्तित्व में है वह उसका कर्ता है। उसका प्रेम, न्याय, और सत्य सिद्ध है।

सृष्टि

परमेश्वर, यीशु और पवित्र आत्मा जगत की सृष्टि के समय मौज़ूद थे। वे तब भी मौज़ूद थे जब जगत अस्तित्व में नहीं था। यीशु के द्वारा परमेश्वर जगत को अस्तित्व में लाया। बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि यह कब घटित हुआ। वह सब जिसे परमेश्वर ने सृजा था, बहुत ही अच्छा था, और उसमें पुरुष एवं स्त्री शामिल थे। पहला पुरुष और पहली स्त्री आदम और हव्वा थे। सभी मानव प्राणी जो पहले हुए हैं वे आदम और हव्वा के वंशज थे।

पतन

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रखा ताकि वे उसकी सृष्टि की देखभाल करें। वहाँ पर कुछ नियम थे। आदम और हव्वा को फलवंत और बहुगुणित होना था, और उन्हें वाटिका के बीच में उस वृक्ष से खाना या उसे छूना वर्जित था। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उसकी आज्ञा मानने या ना मानने की स्वतन्त्रता दी थी। आदम और हव्वा को शैतान के द्वारा प्रलोभित किया गया, और उन्होंने

परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी। उनमें और उनके चारों ओर के संसार में बड़ी तेज़ी से बदलाव आ गया। पाप उनके चारों ओर के संसार में प्रवेश कर चुका था जिसके कारण परमेश्वर की अच्छी सृष्टि भ्रष्ट हो गई थी। आदम और हव्वा सदा के लिए बदल गए। वे स्थायी रूप से भ्रष्ट हो गए थे, जो आनुवंशिक प्रतीत होता था। परिणाम यह था कि पापी मानवता सिद्ध परमेश्वर से अलग हो गई जो सही और अच्छे का मापदण्ड है। चूंकि सारी मानवता आदम और हव्वा से आई थी, इसलिए सभी मनुष्यों को पाप का स्वभाव विरासत में मिला था। यह मानवीय अनुभव की सच्चाई है कि पाप का स्वभाव विभिन्न लोगों में अलग अलग तरीकों से दिखाई देता है और यह कि कोई भी सिद्ध नहीं है।

परमेश्वर से मानव अलगाव का समाधान

अपने सिद्ध न्याय में परमेश्वर, मनुष्यों के पापों की ओर किसी अन्य तरीके से नहीं देख सकता है। फिर भी, अपने सिद्ध प्रेम में, उसने मनुष्यों के लिए एक मार्ग बनाया है कि वे उससे मेलमिलाप करें। परमेश्वर, अर्थात् सृष्टिकर्ता के लिए एकमात्र स्वीकारयोग्य बलिदान और संसार के पापों का मूल्य उसके पुत्र का दुःख उठाना और क्रूस पर मरना था। क्रूस पर, परमेश्वर ने मानव देह में संसार के पापों के लिए कीमत चुकाई। सभी लोग जो अपने पापों के लिए सचमुच में पश्चाताप करते हैं और यीशु की मृत्यु एवं पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं उन्हें स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में अनंत जीवन प्रदान किया जाएगा।

अध्याय 12
हम सब को यीशु की आवश्यकता क्यों है

हमारे अपने जीवनों में पाप की वास्तविकता

परमेश्वर ने अपने नियमों को बनाया है कि किस प्रकार दस आज्ञाओं के द्वारा हम सरलता से अपने जीवनों को जी सकते हैं। आइए हम इस बात पर कुछ पल के लिए विचार करें कि किस प्रकार हम अपनी स्वयं की योग्यताओं के आधार पर दस आज्ञाओं के विरुद्ध डटे रह सकते हैं।

एक पल के लिए सोचिए। क्या आपने कभी कोई झूठ बोला है, यहाँ तक कि एक छोटा सा सफेद झूठ, कदाचित् सहूलियत के लिए कोई झूठ, या किसी व्यक्ति की भावनाओं को ठेस न पहुंचानेवाला कोई झूठ? यह अभी भी एक झूठ है। क्या आपने कभी भी अपनी आय कर में संख्याओं से हेरफेर किया है—यहाँ पर कुछ और कटौतियां, वहाँ पर थोड़ी कम आय? क्या आपने कभी भी नौकरी के आवेदन या बायोडाटा को बढ़ा चढ़ाकर कहा है? कोई सन्देह नहीं है, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसने किसी रीति से झूठ न बोलकर किसी आज्ञा को न तोड़ा हो।

चोरी करने के विषय में क्या? क्या आपने कभी किसी चीज़ को लिया है जो आपकी नहीं थी, कोई भी चीज़, शायद यह एक पेन्सिल, एक पेपर क्लिप, या कुछ सिक्के हों?

व्यभिचार के विषय में क्या कहा जाए? शायद आप संतुष्ट हैं कि आपने कभी भी अपने जीवन साथी को शारीरिक रूप से धोखा नहीं दिया है, परन्तु यीशु कहता है कि यदि हम किसी को वासना के साथ देखते भी हैं, तो हमने अपने हृदयों में व्यभिचार कर लिया है!

हत्या के विषय में क्या कहा जाए? कदाचित् आप इसके विषय में सुरक्षित हैं, परन्तु एक बार फिर से, इतनी जल्दी मत कीजिए। यीशु कहता है कि यदि हम अपने भाइयों के साथ क्रोधित भी हैं, तो हमने अपने हृदयों में हत्या कर ली है।

प्रभु का नाम व्यर्थ में लेने के विषय में क्या कहा जाए? क्या आपने कभी भी ऐसा किया है? अत्यंत संभावना है, कि आपने किया है।

यहोवा के सामने अन्य देवताओं के होने के विषय में क्या कहा जाए? शायद हमारे पास पत्थर या धातु से बनी हुई मूर्तियां न हों, परन्तु धन, चीज़ों, या गतिविधियों के विषय में क्या कहा जाए? क्या आपने कभी इन्हें परमेश्वर से पहले रखा है? क्या हममें से कोई वाकई में ऐसा कह सकता है कि हमने पूरे समय अपने जीवन में परमेश्वर को पहले स्थान पर रखा है?

क्या आपने कभी कलीसिया की किसी सभा को टाला है, बस यूं ही बेपरवाही से यहाँ-वहाँ गए और यहाँ-वहाँ बैठे, या पूरी तरह से कलीसिया से परहेज किया है? यदि ऐसा है, तो आपने सब्त का पालन नहीं किया है।

लालच करने के विषय में क्या कहा जाए? क्या आपने कभी किसी चीज़ को चाहा है जो आपके पड़ोसी की थी? शायद आप थोड़ा ईर्ष्यालु थे?

हम सभी परमेश्वर के सिद्ध मापदण्ड से रहित हो गए हैं!

पृथ्वी से अनंतकाल तक

क्यों अच्छे लोग स्वर्ग में नहीं होंगे

मैं बाकी आज्ञाओं के विषय में बात नहीं करूँगा, परन्तु मैं सोचता हूँ कि यदि हम ईमानदार हैं, तो हमें स्वीकार करना है कि हमने अपने सम्पूर्ण जीवनों में कई बार सभी दस आज्ञाओं को तोड़ा है। परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ना आसान है, और पाप हमारे और उस परमेश्वर के बीच में बाधा खड़ी करता है, जो सिद्ध है। जब हम कहते हैं कि हम एक "अच्छे इंसान हैं," तो हम अपनी तुलना संसार के मापदण्डों से कर रहे हैं; परन्तु वह मापदण्ड बहुत ही निम्न स्तर का है! हम मुख्य बात को खो देते हैं कि सच्चा मापदण्ड सिद्धता है। यह परमेश्वर का मापदण्ड है, और जब हम स्वयं की तुलना इससे करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हम सब परमेश्वर की सिद्धता से रहित हैं। संसार के मापदण्ड परमेश्वर के मापदण्ड नहीं हैं। हम अपनी स्वयं की योग्यताओं पर परमेश्वर की उपस्थिति में होने के लिए कभी भी इतने अच्छे नहीं हो सकते हैं। हम परमेश्वर के सिद्ध प्रेम के बारे में सुनना पसन्द करते हैं परन्तु हम परमेश्वर के सिद्ध न्याय में कम रुचि लेते हैं। परन्तु इसकी अनदेखी करना इसे कम नहीं करेगा। एक सिद्ध परमेश्वर को पाप को दण्डित करना ही होगा।

नहीं, अच्छे लोग स्वर्ग में नहीं होंगे। केवल धर्मी लोग ही स्वर्ग में होंगे। केवल धर्मी लोग ही धर्मी परमेश्वर के सामने स्वर्ग में होंगे। हम अपनी योग्यता के आधार पर कभी धार्मिकता हासिल नहीं कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जब हम अपने पापों से मन फिराते हैं और सचमुच में उसके पुत्र में विश्वास करते हैं, तो वह हममें से प्रत्येक को धार्मिकता दे देता है!

परमेश्वर का स्वभाव पाप के लिए दण्ड की मांग करता है

भविष्यद्वक्ता हबक्कूक हमें बताता है कि परमेश्वर इतना अधिक शुद्ध है कि वह दुष्टता की ओर देख भी नहीं सकता है, और पाप बिलकुल ऐसा ही है। परमेश्वर ने कोई निरंकुश मापदण्ड नहीं बनाया है जिससे हमारे लिए असफलता को निर्धारित करे। नहीं, उसने हमें अपनी व्यवस्था दी है क्योंकि यह उसका मापदण्ड है। चूंकि परमेश्वर हमारा स्वामी और जगत का सृष्टिकर्ता है, इसलिए उसके मापदण्ड को संतुष्ट अवश्य किया जाना चाहिए।

परमेश्वर एक है, और वही अच्छे का एकमात्र मापदण्ड है, और जो अच्छा है वह उसके स्वभाव के साथ निरन्तर बना रहता है। क्योंकि परमेश्वर धर्मी है, इसलिए उसे पाप को अवश्य दण्ड देना चाहिए। परमेश्वर स्वयं अपने सिद्ध स्वभाव के विरुद्ध नहीं जा सकता है।

यदि परमेश्वर इतना प्रेमी है, तो उसे लोगों को दण्ड क्यों देना चाहिए?

परमेश्वर का सिद्ध न्याय यह मांग करता है कि पाप के लिए दण्ड हो। कुछ लोग कहते हैं, "यदि परमेश्वर इतना बड़ा प्रेमी है, तो नरक नहीं हो सकता है।" इस आंकलन के साथ समस्या यह है कि यह उस बात को नज़रअन्दाज़ करता है कि परमेश्वर एक ही समय में सिद्ध रूप से प्रेमी और सिद्ध रूप से धर्मी है। वह अपने प्रेम को दिखाने हेतु न्याय को नहीं छोड़ सकता है।

उस काल्पनिक स्थिति पर विचार कीजिए जहाँ कोई व्यक्ति उस समय आपके घर में चोरी से घुस जाता है और क्रूरता से आपके जीवनसाथी को मार डालता है जब आप कहीं दूर होते हैं। जिसने यह किया उसे जांच के लिए लाया जाता है। प्रमाण बिलकुल साफ है, और हत्यारे को न्यायाधीश की पीठ के द्वारा दोषी ठहराया जाता है। दण्ड देते समय, दण्ड को पढ़ने से पहले न्यायाधीश हत्यारे को बोलने की अनुमति देता है। हत्यारा रो-रोकर यह कहता है कि उसे इस बात का दुःख है और वह प्रतिज्ञा करता है कि फिर कभी ऐसा नहीं करेगा। फिर न्यायाधीश दण्ड को पढ़ना शुरू करता है: हत्यारे को रिहा किया जाता है क्योंकि जो कुछ उसने किया है उसके लिए वह दुखी है। न्यायाधीश लकड़ी के हथोड़े से बेंच पर प्रहार करता है, और हत्यारा स्वतन्त्रता से न्यायालय के कक्ष से चला जाता है जबकि आप अपने टूटे हुए जीवन

पर मनन करते हुए, वहाँ पर वेदना में पड़े बैठे होते हैं।

कोई भी सभ्य जन ऐसी क्रूरता का समर्थन नहीं करेगा। उस न्यायाधीश को पीठ से हटाने की आवाज़ उठेगी। इस दुःखद कहानी का यह हास्यास्पद परिणाम है, परन्तु यह सटीक उस बात को दर्शाता है जिस तरह लोग प्रायः सोचते हैं कि परमेश्वर उनके साथ इस प्रकार बातचीत करेगा। वे अन्दाज़ा लगाते हैं जैसा मैंने कहा है कि परमेश्वर इतना बड़ा प्रेमी है कि वह उनको कभी भी दण्ड नहीं देगा। वे उस अक्षम न्यायाधीश के समान उसकी कल्पना करते हैं, कि परमेश्वर बस उनके पापों की अनदेखी कर देगा।

परिणाम हास्यास्पद है क्योंकि न्याय की उपेक्षा की गई है! कोई भी अच्छा मानवीय न्यायाधीश कानून को तोड़नेवाले को सजा पाए बिना जाने नहीं देगा। हत्यारे ने परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा है और समाज के प्रति उसे बड़ा ऋण चुकाना है चाहे वह दुखी हो या ना हो। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वह सिद्ध न्यायाधीश, अर्थात् परमेश्वर, हमें बिना सजा के जाने देगा, जबकि हम उसकी व्यवस्थाओं को तोड़ते हैं। सब कुछ जाननेवाला परमेश्वर ऐसे पापों को नज़रान्दाज़ नहीं कर सकता जो हमने किए हैं!

अपने रचे हुए प्राणियों के साथ व्यवहार में परमेश्वर के प्रेम और न्याय दोनों को संतुष्ट होना चाहिए। हममें से प्रत्येक अपने समूचे जीवन के दौरान अनेक तरीकों से परमेश्वर की व्यवस्थाओं को तोड़ते हैं। यदि हम स्वयं के साथ ईमानदार हैं, यदि हम अपने भीतर गहराई में देखें, तो हम कुछ अप्रिय चीज़ों को पाएंगे। क्या आप कल्पना कर सकते हैं यदि हर बुरा विचार जिसे आपने सोचा, और हर बुरा कार्य जो आपने कभी किया, उन्हें संसार के सभी लोगों के देखने के लिए विशाल स्क्रीन पर चलाया जाए? क्या आप ईमानदारी से कह सकते हैं कि आप अपने उन सभी विचारों और कार्यों पर गर्व महसूस करेंगे?

यदि परमेश्वर सिद्ध रूप से भला है और हम भ्रष्ट हैं, और परमेश्वर के मापदंडों से गिर गए हैं, तो क्या हम आशाहीन रूप से परमेश्वर से अनंतकालिक रूप से अलग होने के लिए ठहराए गए हैं? ऐसा बिलकुल नहीं है—परमेश्वर ने इस समस्या का समाधान प्रदान किया है!

यहाँ परमेश्वर का प्रेम दाखिल होता है

परमेश्वर जानता है कि उसकी संतानें अपने पापों के ऋण को नहीं चुका सकती हैं। अपनी संतानों के पापों की कीमत अदा करने के लिए परमेश्वर स्वर्गीय स्थान से नीचे उतरा। यीशु मसीह मानव रूप धारण करके इस धरती पर आया ताकि क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा हमारे पाप का मूल्य चुका दे।

कोई भी दोषी हत्यारा जैसा वर्णन ऊपर किया गया है वह ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता है जो उसके दोषी होने की सच्चाई को बदल दे। उसी प्रकार, हम भी ऐसा कुछ नहीं कर सकते हैं जो उस सच्चाई को बदल दे कि हम परमेश्वर के सामने दोषी हैं। जन्म से हमारे पास पाप का स्वभाव था, और हमने अपने समूचे जीवन में पाप किया है। इसलिए, यह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा है कि हमारा उद्धार हुआ है क्योंकि हम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते हैं जो हमारे दोष को हटा दे। परमेश्वर धरती पर हमारे पास आया। परमेश्वर, यीशु के द्वारा हमारे उद्धार का कर्ता है।

परमेश्वर ने, अपने प्राणियों के लिए अपने अद्भुत प्रेम में, ऐसा मार्ग बनाया है जिससे उन्हें उसके साथ एक किया जा सके। पतित मानवता को बचाने के लिए परमेश्वर ने यीशु को मिशन पर भेजा था। क्रूस पर यीशु मसीह का दुःख उठाना और मारा जाना, संसार के पापों के लिए परमेश्वर को ग्रहणयोग्य बलिदान था। मसीह हमारे पापों के लिए मर गया था। वह ऐसी मौत मरा था जिसके लायक हम थे और उसने हमारे पापों की कीमत चुका दी। क्रूस पर उसकी मृत्यु ने हमारे पापों का प्रायश्चित किया था (मत्ती 20:28; गलातियों 3:13)। उसके निष्पाप पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारा मेलमिलाप परमेश्वर से हुआ है, और

पृथ्वी से अनंतकाल तक

मसीह की धार्मिकता को हम सब के लेखे में गिना गया है जो उसमें विश्वास करते हैं। (2 कुरिन्थियों 5:18-21; 1 पतरस 2:24; इब्रानियों 9:28; यशायाह 53:4-6)

मसीह के कार्य के द्वारा ऐसे लोगों के पापों को क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया गया है जो पश्चाताप और विश्वास करते हैं, और परमेश्वर ने उन अभियोगों को रद्द कर दिया है जिन्हें हमारे विरुद्ध लगाया गया था। संक्षेप में, विश्वासियों को क्षमा किया गया है, और उनके पाप के ऋण को पूरी तरह से चुका दिया गया है (कुलुस्सियों 2:13)।

यीशु मसीह देह में प्रकट हुआ परमेश्वर है। उसने निष्पाप जीवन बिताया था। यीशु ने हमारे लिए कुछ ऐसा किया जिसे कोई मनुष्य नहीं कर सकता था। वह हमें हमारे पाप में डूबने से बचाता है क्योंकि वह निष्पाप है। यीशु हमें पाप के समुद्र में डूबने से बचाने में सक्षम है क्योंकि वह नहीं डूब रहा है। एक डूबता हुआ व्यक्ति दूसरे डूबते हुए व्यक्ति को नहीं बचा सकता है। वे दोनों डूब जाएंगे। मसीह में विश्वास करने के द्वारा हम उस बलिदान को स्वीकार करते हैं जिसे उसने हमारे बदले में दिया, और परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप करा दिया।

वे लोग जो प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में यीशु पर भरोसा करते हैं उन्हें कर्मों के आधार पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की दया और अनुग्रह के माध्यम से उद्धार प्रदान किया जाता है। यीशु में विश्वासियों को पवित्र आत्मा के द्वारा फिर से नया और फिर से जीवित किया गया है। विश्वासियों को अपनी उपस्थिति में अनंतकाल के लिए तैयार करने हेतु परमेश्वर उनके सम्पूर्ण जीवन में उन पर कार्य करता रहता है। कोई भी मनुष्य इससे अधिक अच्छी मंजिल की आशा नहीं कर सकता है।

एक स्याह पहलू

इस सब का एक स्याह पहलू है। परमेश्वर की उपस्थिति में अनंतकाल का जीवन केवल उन्हीं के लिए है जो अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और सचमुच में यीशु में विश्वास करते हैं। यीशु के शब्दों पर विचार कीजिए:

> "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उस के द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूहन्ना 3:16-18)

वे जो सचमुच में यीशु में विश्वास करते हैं उन्हें निश्चय है कि वे अनंतकाल तक परमेश्वर के साथ हैं। वे जो यीशु में विश्वास नहीं करते हैं उन्हें निश्चय है कि वे अनंतकाल के लिए परमेश्वर से अलग किए गए हैं।

सभी लोगों की अनंतकालिक मंज़िल

कोई भी व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की अनंत नियति को नहीं जानता है। परमेश्वर निर्णय लेगा कि हम से से प्रत्येक व्यक्ति अनंतकाल कहाँ बिताएगा। फिर भी, परमेश्वर ने अपनी ईश्वरीय योजना को बिलकुल स्पष्ट किया है।

बाइबल हमें बताती है कि जब हम अपना जीवन बिता लेते हैं, तो उसके बाद हमारा न्याय उस सिद्ध न्यायाधीश के द्वारा किया जाएगा (इब्रानियों 9:27)। कोई पुनर्जन्म, दूसरा मौका, या बच निकालने का द्वार नहीं होगा। केवल दो ही संभावित स्थान हैं जहाँ मनुष्य अनंतकाल बिताएगा: स्वर्ग या नरक। यह वह है जिसे यीशु सिखाता है (यूहन्ना 3:16-18)। ऐसे लोग जिन्होंने यीशु को ठुकराया, नकारा, या उसे

नज़रान्दाज़ किया है उन्हें नरक नामक स्थान में सदा के लिए परमेश्वर से अलग कर दिया जाएगा। काश मैं आपको इससे बेहतर समाचार दे सकता, परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ और अभी भी आपको उस सच्चाई को बताता हूँ जिसे बाइबल कहती है। वे जो अपने पापों से पश्चाताप करते हैं, इस जीवन में यीशु को ग्रहण करते हैं, और सचमुच विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का पुनरुत्थित पुत्र है उन्हें स्वर्ग में प्रवेश दिया जाएगा।

बाइबल में किसी बीच के रास्ते का वर्णन नहीं है। ऐसे लोग जो यीशु को नज़रान्दाज़ करते हैं या उसे नकारते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है उन्होंने उसे अस्वीकार किया है और अपने भाग को बाहर निकाले गए लोगों के साथ पाया है।

यहाँ तक कि इसे पढ़ने के बाद, बहुत से लोग अपने स्वयं के उद्धार की योजना बनाएंगे। वे इस पर आश्रित होंगे, "मैं विश्वास करता हूँ कि सभी अच्छे लोग स्वर्ग जाएंगे।" जब लोग ऐसा कहते हैं, तो वे अपने आपको जगत का स्वामी समझ रहे होते हैं। वे निश्चित रूप से यह साबित नहीं कर सकते कि सभी अच्छे लोग स्वर्ग जाएंगे।

इस जगत के स्वामी ने भविष्यद्वाणी सम्बन्धी अपनी ईश्वरीय पुस्तक के द्वारा हमसे बात की है। उसने कहा है कि केवल ऐसे लोग जो उसके पुत्र में विश्वास करते हैं वे ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। यह परमेश्वर की सृष्टि है। उसने इसे शून्य से सृजा था! यह मानता है कि परमेश्वर ही है जो यह तय करेगा कि किस प्रकार उसके प्राणी उसके स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं।

स्वर्ग

स्वर्ग ऐसा स्थान है जहाँ सब कुछ परमेश्वर और मसीह के हाथ में हैं (मत्ती 22:44)। यह सिद्धता और बड़ी सुन्दरता का स्थान है जहाँ कोई बीमारी, दर्द, या मृत्यु नहीं होगी। वहाँ कोई दण्ड या पाप नहीं होगा। यह सिद्ध एकता का स्थान होगा जहाँ ऐसे लोग जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे परमेश्वर के साथ होंगे। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा वहाँ पर उपस्थित होंगे। जो मसीह को अपना उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते और उस पर विश्वास करते हैं, जब वे मर जाते हैं तो उन्हें तुरन्त ही स्वर्ग में प्रवेश दिया जाता है। उसकी महिमा में आनन्द करते हुए और उसकी स्तुति गाते हुए, सभी युगों के सच्चे विश्वासी स्वर्ग में अनंतकाल बिताएंगे।

नरक

नरक अनेक लोगों के लिए परेशान करनेवाला शीर्षक है, अतः इससे पहले कि आप नरक की वास्तविकता को नकारें निम्नलिखित पर विचार कीजिए। क्या आप ऐसे जीवन की कल्पना कर सकते हैं जिसमें आप परमेश्वर को नज़रान्दाज़ करते हैं, यीशु के साथ जुड़े लोगों और मसीहियों का मजाक उड़ाते हैं, या बाइबल जो कुछ उचित जीवन जीने के बारे सिखाती है उसे अस्वीकार करते हैं, और साथ ही इस बात का भी इनकार करते हैं कि स्वर्ग जैसा कोई स्थान है जहाँ के निवासी परमेश्वर एवं यीशु के लिए अनंतकाल तक स्तुति के गीत गाते हैं? उस व्यक्ति के लिए जिसने परमेश्वर को नज़रान्दाज़ किया है या उसके पुत्र का इनकार करके परमेश्वर को अस्वीकार किया है, उसके लिए स्वर्ग वह स्थान नहीं होगा जहाँ पर रहना चाहता है या चाहती है। असल में, ऐसा व्यक्ति जो यीशु को नज़रान्दाज़ या अस्वीकार करता है, उसके लिए स्वर्ग यातना का स्थान, और नरकीय जीवन होगा।

यीशु, जिसने साबित किया था कि वह मसीहा सम्बन्धी भविष्यद्वाणियों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर का पुत्र है, उसने लगभग 21 बार नरक का जिक्र किया है, और उसे नरक, बाहरी अंधकार, या रोने

एवं दांत पीसने का स्थान कहकर सम्बोधित किया था। नरक कष्ट और अनंतकालिक दण्ड और परमेश्वर से सम्पूर्ण अलगाव का स्थान है। यह कोई अच्छा स्थान नहीं है। नरक ऐसा स्थान है जहाँ शैतान, उसके दूत, और ऐसे लोग अनंतकाल बिताएंगे जिन्होंने यीशु को नज़रान्दाज़ और अस्वीकार किया है। अधर्मी और उनके पिता शैतान को आग के भट्ठे में डाल दिया जाएगा जिसे उनके लिए तैयार किया गया है और वहाँ रोना और दांतों का पीसना होगा (मत्ती 13:41-42)।

इसके बारे में सोचिए। यदि कोई अनंतकालीन स्वर्ग है, तो अनंतकालीन नरक भी ज़रूर होगा जहाँ ऐसे लोगों को भेजा जाएगा जो परमेश्वर को तुच्छ जानते हैं, उसे अस्वीकार, या नज़रान्दाज़ करते हैं ताकि उन्हें अनंतकालिक रूप से परमेश्वर से अलग कर दिया जाए। परमेश्वर अपने शत्रुओं को अनुमति देता है कि अपना स्वयं का मार्ग अपनाएं। शैतान और उसके विद्रोही स्वर्गदूतों के साथ साथ, परमेश्वर ऐसे लोगों को शत्रु मानता है जो उसके पुत्र को अस्वीकार करते हैं।

तेरह
महत्वपूर्ण बातों के लिए एक और रास्ता

बाइबल साफ तौर पर हमें बताती है कि परमेश्वर प्रेमी और धर्मी है। उसने अपने पुत्र को भेजने के द्वारा हमारे लिए अपने प्रेम को दिखाया है (यूहन्ना 3:16)। अतः जब हम उसके पुत्र को ठुकराते हैं, तो हम उसे ठुकराते हैं, क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर है जिसने पहले होकर अपने पुत्र को भेजा था। यदि हम इस पृथ्वी पर अपने जीवन में उसे ठुकराते हैं, तो वह हमें अपने साथ अनंतकाल बिताने के लिए बाध्य नहीं करेगा। हमारे प्रति अपने सिद्ध प्रेम के कारण परमेश्वर हमें बाध्य नहीं करता कि हम उससे प्रेम करें। परमेश्वर हमें उसके स्नेहिल प्रस्तावों का विरोध करने की अनुमति देता है। वह अपने सृजे हुए प्राणियों को स्वतन्त्र रूप से चुनाव करने की अनुमति देता है। वह जगत से प्रेम करता है, और वह अपने पुत्र और पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेमपूर्वक निवेदन कर रहा है, परन्तु वास्तविकता यह है कि बहुत से लोग उसके प्रेम को अस्वीकार करेंगे।

यह जीवन अनंतता की तैयारी है। यदि हम इस जीवन में परमेश्वर की बातों से नफरत करेंगे, तो हम उन बातों से अनंतकाल में भी पसन्द करनेवाले नहीं होंगे। प्रेमी परमेश्वर अपने साथ अनंतकाल बिताने के लिए ऐसे लोगों को बाध्य नहीं करेगा जो उससे प्रेम नहीं करते हैं। परमेश्वर ने उन लोगों के लिए जो उसको और उसके पुत्र को नज़रान्दाज़ करते और तुच्छ जानते है, एक स्थान तैयार किया है जिसे नरक कहते हैं। शुभ सन्देश यह है कि क्रूस पर यीशु के कार्य के कारण किसी को भी नरक जाने की ज़रूरत नहीं है, परन्तु वस्तविकता यह है कि कुछ लोग नरक जाएंगे।

पतरस कहता है:

> प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; परन्तु तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (2 पतरस 3:9)

परमेश्वर चाहता है कि इस जीवन में प्रत्येक व्यक्ति अपने पापी स्वभाव को समझे , और पश्चाताप करने और उससे क्षमा मांगने के मुकाम पर आ जाएं। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु धर्मी परमेश्वर को ऐसे लोगों से स्वयं को अलग करना होगा जो अपने पापी , भ्रष्ट, मानव स्वभाव को स्वीकार तक नहीं कर सकते हैं।

परमेश्वर से अलगाव, और उसके परिणामस्वरूप आनेवाले दण्ड को टाला जा सकता है। यीशु ने कहा:

> "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उस के द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता

है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूहन्ना 3:16-18)

ऐसे लोग जो पश्चताप करते हैं और यीशु में विश्वास करते हैं वे नरक की यातना से बच जाएँगे। पश्चाताप करने और विश्वास करने के लिए वर्तमान से बेहतर कोई समय नहीं है। इस धरती पर हमारा अस्तित्व अस्थायी है। हमारे जीवन के अगले मिनट की गारंटी नहीं है। परमेश्वर यीशु को ग्रहण करने के लिए हमें बुलाता है। सवाल तो यह है कि: आप यीशु के साथ क्या करेंगे?

लोग मसीहियत के प्रति संशय रखते हैं भले ही विश्वसनीय प्रमाण के द्वारा इसका समर्थन ही क्यों न किया जाए। इसके बजाय, संसार गपशप की छिछली बातों के पीछे भागता है। क्यों? संसार झूठ और भ्रम से भरा हुआ है जो जवान और बूढ़ों दोनों को खत्म कर देता है। वे हमें मानव जाति के समूचे इतिहास में मसीह की अद्वितीयता की स्पष्ट सच्चाई को देखने से रोकते हैं। वे हमारे पथ को अस्पष्ट तथा हमारे आंकलन को धुंधला कर देते हैं और हमें जगत में पाई जाने वाली अत्यंत अकाट्य एवं अविनाशी सच्चाई को देखने से रोकते हैं, ऐसी सच्चाई जो अनंत परिणामों के साथ आती है।

सत्य तो यह है: मनुष्य परमेश्वर के प्रति जानबूझकर अवज्ञाकारी हुआ जिसके द्वारा वह पाप के बन्धन में फंस गया। जगत का परमेश्वर प्रेम और न्याय का परमेश्वर है। अपने धर्मी स्वभाव के कारण, उसे पाप को दण्ड देना होगा जैसा कि हम किसी अच्छे मानवीय न्यायाधीश से अपेक्षा करते हैं कि अपराध को दंडित करे।

परमेश्वर ने अपने प्रेम के कारण मनुष्य को छुटकारा देने का एक मार्ग बनाया है। ऐसे लोग जो यीशु को ग्रहण करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, यीशु ने उन्हें संसार के पापों के मूल्य में क्रूस पर बहाए लहू के द्वारा क्षमा किया गया। क्रूस पर मसीह की विजय के कारण, सभी जो उसे ग्रहण करते हैं उन्हें उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया है। परन्तु हमें उसे ग्रहण करना होगा, और उसे ग्रहण करने का अर्थ अपने पापों से पश्चाताप करना, उस पर विश्वास करना, और उसकी आज्ञाओं को मानना है। यदि हम उससे प्रेम करते हैं, तो हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे।

संसार परमेश्वर की उद्धार की योजना को अस्वीकार करता है क्योंकि इसमें विनम्रता और अधीनता की ज़रूरत होती है। संसार परमेश्वर की उद्धार की योजना को अस्वीकार करता है क्योंकि इसमें परमेश्वर के प्रति समर्पण करनेवाले अधिकार की ज़रूरत होती है। हमें विश्व के कर्ता के सामने विनम्रता से जाना होगा। मिट्टी कुम्हार को नहीं बताएगी कि उसे क्या करना है!

यीशु अच्छा चरवाहा है। वह आपके हृदय के द्वारा पर खड़ा हुआ खटखटाता है, और द्वार खोलने के लिए आपका इंतज़ार करता है।

पवित्र शास्त्र के अनुसार, यीशु अपने पर विश्वास करनेवालों को उन लोगों से अलग करने के लिए आया था जो उसे अस्वीकार करते हैं। यह कड़वी दवाई की तरह है। वह इस जीवन में हमें बाध्य करता है कि हम उसे ग्रहण करें या अस्वीकार करें। यदि हम उसे नज़रान्दाज़ करते हैं, तो हमने उसे अस्वीकार कर दिया है। वह हमें बाध्य करता है कि देहधारी परमेश्वर के रूप में उसकी प्रशंसा करें, या फिर उसे महत्व न देकर उसका तिरस्कार करें। वह हमें बाध्य करता है कि हम उसके ईश्वरत्व की पुष्टि करें या उससे अलग अनंतकाल में जीवन जीएं।

यीशु हमें विश्वास करने के लिए बुलाता है। इस मामले के गलत पहलू पर जाकर हम अनंतकाल में नहीं जा सकते हैं, क्योंकि अनंतकाल अधर में लटका होता है। स्वर्ग और नरक अधर में लटके होते हैं। स्वर्ग की खातिर, उसे ग्रहण कीजिए जो आपके पापों को दूर कर सकता है और आपको परमेश्वर के धर्मी न्याय से बचा सकता है। जब आप यीशु पर भरोसा करते हैं, तो आपके पाप का ऋण रद्द हो जाता है। जब आप यीशु को ठुकराते हैं, तो आप अपनी स्वयं की योग्यताओं पर परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं, और

आप से मांग की जाएगी कि अपने पापों के लिए भुगतान करें। यह आपके ऊपर है। क्रूस पर अपने पूरे हुए कार्य के द्वारा यीशु आपके पापों का मूल्य चुका सकता है, या *आप* अपने पापों का मूल्य स्वयं चुकाएँ।

यीशु मसीह मार्ग, सत्य और जीवन है उसके बिना कोई भी पिता के पास नहीं जा सकता है।

क्या आप वहाँ जा नहीं पा रहे हैं?

क्या आप यीशु पर विश्वास करना पर साथ ही साथ अपने आपको को संशय और सन्देह से निपटते हुए देखना पसन्द करेंगे? यदि ऐसा है, तो मैं ऐसी स्थिति में रह चुका हूँ जिसमें आप वर्तमान में हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि यदि आप परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह सत्य को ढूंढ़ने में आपकी सहायता करे, तो वह बस ऐसा ही करेगा। परमेश्वर से विनती कीजिए कि आपके पापों को क्षमा करे, और उससे विनती कीजिए कि आपको सच दिखाए। प्रभु हमारे साथ धीरजवंत है। वह नहीं चाहता है कि कोई नाश हो परन्तु यह चाहता है कि सभी अपने मन को फिराएँ।

चौदह
वास्तव में संसार का अंत कैसे होगा

लोगों के किसी भी समूह से बात कीजिए कि वे क्या सोचते हैं कि संसार का अंत कैसे होगा, और मुझे पता है कि आपके पास उत्तरों की भर-मार होगी। कुछ लोग कहेंगे कि संसार का अंत तब होगा जब एक धूमकेतु पृथ्वी से टकराएगा और वातावरण को धूल और वाष्प से भर देगा, जिससे पृथ्वी ठंडी हो जाएगी। कुछ लोग कहेंगे कि पृथ्वी पर उड़न तश्तरियों के द्वारा कब्ज़ा कर लिया जाएगा। कुछ लोग तो यहाँ तक कहेंगे कि मशीनें इतनी उन्नत हो जाएंगी कि वे संसार पर कब्ज़ा कर लेंगी। कुछ लोग मानते हैं कि हम अपने आपको परमाणु युद्ध से नष्ट कर लेंगे। कुछ लोग सोचते हैं कि सच्चाई नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों में छिपी हुई हैं। हॉलीवुड के पास अपनी अलग ही सोच है, परन्तु इस विषय की सच्चाई साफ रूप से उस पुस्तक में प्रकट है जो स्वयं ईश्वरीय मूल की है। इसके लिए अन्दाज़ा लगाने और मानने की कोई ज़रूरत नहीं है। बाइबल साफ तौर पर ऐसी घटनाओं को पेश करती है जो संसार के अंत की ओर ले जाएँगी।

अंत समय की घटनाओं का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है

संसार के अंत के विषय में लोग बाइबल के समानांतर कुछ बेतुके निराधार सिद्धान्तों का दावा करते हैं, परन्तु यह एक बड़ी गलती है। बाइबल की सैकड़ों भविष्यद्वाणियाँ पूरी हो चुकी हैं, जो मुझे उस निष्कर्ष की ओर ले जाती है कि हमें उसे स्वीकार करना चाहिए जिसे बाइबल अत्यंत गंभीरता से संसार के अंत के बारे में कहती है।

अंत किसी भी समय आ सकता है। मेरी दृष्टि में, यह तथ्य हम सब को इस बात को सुनिश्चित करने के लिए बड़ा प्रोत्साहन देता है कि हम तैयार हैं। पौलुस कहता है कि प्रभु का दिन (बाइबल में संसार के अंत के लिए इस्तेमाल होनेवाला एक आम शब्द), रात में चोर के समान आ जाएगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:2)। संसार आश्चर्य चकित हो जाएगा जब यीशु वापस आएगा। जब यीशु आएगा, यदि आप उस समय जीवित होंगे और आपने उसे ग्रहण नहीं किया होगा, तो बहुत देर हो जाएगी।

मुझे कोई सन्देह नहीं है कि सब कुछ बाइबल के अनुसार घटित होगा। संसार तेज़ी से बदल रहा है। सब कुछ बिना किसी समस्या के ऐसी रीति घटित हो रहा है जो अंत के समय के विषय में बाइबल की भविष्यवाणियों के अनुरूप है। बाइबल हमें अंत के समय के चिह्नों की साफ तस्वीर प्रदान करती है, जिसे हम नीचे देखेंगे।

मुख्य घटना

मसीहियत के मौलिक सिद्धान्तों में से एक यह है कि यीशु अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वापस लौटेगा। संसार यीशु के वापस लौटने के विचार पर हंसी ठट्ठा करता है, परन्तु वह ऐसा अपने स्वयं के जोखिम पर करता है, क्योंकि वह जो एक नम्र मेम्ने और अच्छे चरवाहे के रूप में आया था, वह विजयी राजा और सामर्थी परमेश्वर के रूप में वापस लौटेगा। हाँ, संसार यीशु के वापस लौटने की धारणा पर हंसी ठट्ठा करता है, परन्तु जो यीशु का अनुसरण करते हैं, वे उत्सुकता से उसके वापस लौटने का इंतज़ार करते हैं क्योंकि वह सब जो संसार से साथ गलत है उसे एकदम से सही बना दिया जाएगा।

नया नियम और पुराना नियम दोनों मसीह के द्वितीय आगमन की प्रतिज्ञाओं से भरा हुआ है। पुराने नियम में भजन संहिता और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में इसके लिए सैकड़ों सन्दर्भ पाए जाते हैं, और नए नियम में इसके लिए 300 से अधिक सन्दर्भ मिलते हैं। नए नियम की पुस्तकों में, अर्थात 27 में से 23 पुस्तकें इस बड़ी घटना की ओर संकेत करती हैं। मसीह के प्रथम आगमन की प्रत्येक भविष्यद्वाणी के लिए, मसीह के द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में आठ हैं।[60]

यीशु के द्वितीय आगमन से पहले घटित होनेवाली घटनाएं

बाइबल असंख्य घटनाओं की भविष्यद्वाणी करती है जो यीशु के द्वितीय आगमन के पहले घटित होंगी। यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा था कि "जागते रहो…क्योंकि न तो तुम उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।"[61] चूंकि यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया था, इसलिए यीशु के शिष्य संसार की घटनाओं को घटित होते हुए देखते रहते हैं ताकि वे उसके वापस लौटने पर अनभिज्ञ न पाए जाएं। जब घटनाएं उस रीति से घटित होती हैं जो अंत समय के बारे में की गई भविष्यवाणियों के अनुरूप होती हैं, तो हम पवित्र शास्त्र के ईश्वरीय स्वभाव के और भी अधिक पुष्ट करनेवाले प्रमाण को पाते हैं।

बुराई का बढ़ना (2 तीमुथियुस 3:1-4; मत्ती 24:12)

पौलुस अत्यंत विस्तार से अंतिम दिनों की स्थिति का वर्णन यह कहते हुए करता है:

> …पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे… (2 तीमुथियुस 3:1-4)

पौलुस ऐसे अशिष्ट समाज की तस्वीर चित्रित करता है जहाँ हर स्त्री या पुरुष अपने आप में ही खोया हुआ है, दूसरों के प्रति क्रूर है और अविश्वासयोग्य है। परमेश्वर के बजाय लोग सुख-विलास पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। हम निश्चित रूप से देखते हैं कि लालच हमारे संसार में अनियन्त्रित है। यूनाईटेड स्टेट्स में परमेश्वर को एक ओर धकेल दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों के परिणामस्वरूप सार्वजानिक स्कूलों में प्रार्थना और दस आज्ञाओं को प्रतिबन्धित कर दिया गया है। रो बनाम वेड[62] (1973 के गर्भपात के आंकड़े) के समय से ही लगभग 5,00,00,000 निर्दोष शिशु भ्रूणों को उनकी माँ की कोख से चीर-फाड़ करके निकाला गया है। इससे अधिक क्रूर क्या हो सकता है?

सन 1960 से लेकर 2004 तक की समयावधि के दौरान, जनसंख्या वृद्धि को सुधारने के बाद भी हिंसक अपराध 200 से अधिक प्रतिशत बढ़ गया था।[63] यह निश्चित रूप से दिखाई देता है कि हमने बुराई को बढ़ते हुए देखा है। प्रश्न यह हो जाता है, कि क्या यह बुराई की अंतिम वृद्धि है?

युद्ध और आपदाएं (मत्ती 24:6–8)

यीशु मत्ती में कहता है कि जैसे जैसे हम अंत की ओर पहुंच रहे हैं, "लड़ाईयों और लड़ाईयों की अफवाहें होंगी।" तब यीशु कहता है, "एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध खड़ी होगी, और एक राज्य दूसरे राज्य के विरुद्ध खड़ा होगा।" कुछ धर्मविज्ञानी इसे विश्व युद्ध के स्पष्ट विवरण के रूप में देखते हैं। यदि यीशु, असल में, विश्व युद्ध की ओर संकेत कर रहा है, तो बीसवीं शताब्दी ने निश्चित रूप से वैश्विक स्तर पर

भड़काने हेतु मानव जाति की योग्यता को प्रकट किया था।

यीशु द्वारा युद्ध के अंत तक चलने वाले विवरण के साथ-साथ अकाल और भूकंप भी हैं। विकिपीडिया पिछले 1,500 से अधिक वर्षों के आकालों की सूची प्रदान करता है, जो कृषि तकनीक और तीव्र-गति यातायात के इस युग में भी अकाल की चौंकानेवाली आवृत्ति को दिखाता है।[64] एक लेखक ने पिछले 700 वर्षों में भूकंप के महत्वपूर्ण और स्थायी वृद्धि पर ध्यान दिया है। चौदहवीं शताब्दी में 157 भूकंप आए थे। प्रत्येक आगामी शताब्दी के दौरान, भूकंपों के घटित होने में वृद्धि हुई है। उन्नीसवीं शताब्दी में, 2,119 भूकंपों को दर्ज़ किया गया था। स्पष्ट रूप से, भूकंप का पता लगाने की और उसकी जांच करने की क्षमता बहुतायत से बढ़ गई है, परन्तु फिर भी, यह वृद्धि महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।[65]

कलीसिया का विश्वास को त्यागना (2 थिस्सलुनीकियों 2:3; 1 तीमुथियुस 4:1; 2 तीमुथियुस 4:3–4)

बाइबल हमें बताती है कि यीशु के द्वितीय आगमन से पहले, कलीसिया विश्वास को त्यागने के समय से निकलेगी, जो मसीहियत की ऐतिहासिक शिक्षाओं से मुख फेर लेना है। क्या कोई प्रमाण है कि हम वर्तमान में विश्वास को त्यागने की समयावधि में हैं?

गॉल्लप मतसंख्या के अनुसार, 1950 के दशक में, यूनाईटेड स्टेट्स में कलीसियाई उपस्थिति का स्तर 49 प्रतिशत था।[66] नए अनुसंधान संकेत करते हैं कि साप्ताहिक कलीसियाई उपस्थिति की संख्या 20 प्रतिशत से भी नीचे गिर चुकी है।[67] यूरोप में तो, स्थिति और भी बदतर है, और कुछ कलीसियाओं को स्मारकों या घरों में बदला जा रहा है। कुछ देशों में कलीसियाई उपस्थिति की संख्या 3 प्रतिशत से भी कम है।[68,69] चेकोस्लोवाकिया में, परमेश्वर पर विश्वास करने की अपेक्षा लोग उड़न तश्तरियों में अधिक विश्वास करते हैं।[70]

क्या मसीहियत विश्वास को त्यागने की समयावधि में है? मैं कहूंगा कि उत्तर निश्चित रूप से हाँ है, मसीही संसार विश्वास को त्यागने के समय में है। क्या मसीहियत विश्वास को त्यागने के अंतिम रूप में है जिसका ज़िक्र प्रेरित पौलुस ने किया था? मैं नहीं जानता हूँ, परन्तु यह निश्चित रूप से दिखाई देता है कि आज विश्वास को त्यागना बहुत हो गया है और यह बढ़ रहा है।

अनेक पुराने प्रोटोस्टेंट साम्प्रदायों ने बाइबल सम्बन्धी ऐसी शिक्षाओं को अस्वीकार किया है, वे उन पर ज़ोर नहीं देते हैं, या उनमें हेर-फेर कर देते हैं, जिन्हें हज़ारों सालों से पवित्र माना गया है। इस सब का परिणाम यह निकला है कि ऐसे साम्प्रदाय और स्वतन्त्र कलीसियाएं जो बाइबल का अनुसरण करती हैं बढ़ रही हैं, जबकि ऐसे साम्प्रदाय जो बाइबल से दूर चले गए हैं वे कम होते चले जा रहे हैं। कलीसिया ऐसे क्षेत्रों में निरन्तर तेज़ी से बढ़ रही है जहाँ इसे सताया जाता है, जैसे चीन और आफ्रिका। यीशु ने यह ज़रूर कहा था कि अधोलोक के फाटक उसकी कलीसिया पर प्रबल न होंगे।

यीशु एवं प्रेरित पौलुस के अनुसार यीशु और उसके शिष्यों की शिक्षाओं को अस्वीकार किया जाएगा। उदारवादी मसीही साम्प्रदाय पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता, मसीह के ईश्वरत्व, और केवल मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार के विषय में बाइबल की शिक्षाओं को अस्वीकार करते हैं। उन्होंने विवाह को पुनःपरिभाषित किया है और गर्भपात किए जाने का समर्थन किया है। जबकि उनका इस तरह का रवैया लोगों के लिए उनके सन्देश को और अधिक प्रसन्न करनेवाला बनाता है, परन्तु यह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रहा है। तक़रीबन 2,000 वर्षों पहले पौलुस ने चेतावनी दी थी कि ऐसा होगा:

> क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे, और अपने कान सत्य से फेर कर कथा-कहानियों पर लगाएंगे। (2 तीमुथियुस 4:3-4)

पौलुस के शब्द हमारे समय पर साफ तौर पर सटीक बैठते हैं क्योंकि अनेक धर्म मानव-केन्द्रित हैं और परमेश्वर-केन्द्रित नहीं हैं। कुछ लोग परमेश्वर को अपने स्वरूप में फिर से बनाना चाहते हैं, परन्तु इस बात की मूर्खता और खतरा स्पष्ट है। अस्थायी प्राणी चिरस्थाई परमेश्वर को परिभाषित नहीं कर सकता है।

हम ऐसे समय में रहते हैं जब अनेक लोग अपनी स्वयं की नैतिकता और धर्म को परिभाषित करते हैं। नैतिकता की ईश्वरीय परिभाषा से भिन्न, हर व्यक्ति की राय अगले व्यक्ति जितनी ही अच्छी होती है। सम्पूर्ण नैतिकता संबंधपरक बन जाती है। जो कुछ एक व्यक्ति के लिए सही है वह अन्य व्यक्ति के अनुसार शायद गलत हो सकता है। इसका अंतिम परिणाम यह है कि सम्पूर्ण नैतिकता संबंधपरक हो जाती है क्योंकि सही और गलत को उस व्यक्ति के द्वारा परिभाषित किया जाता है।

इस्राएल की प्रतिज्ञा के देश के रूप में बहाली (यहेजकेल 36:22-28)

जैसा अध्याय 3 में चर्चा की गई थी, बाइबल स्पष्ट है कि यहूदी फिलिस्तीन में अपने पूर्वजों के देश में वापस इकट्ठे किए जाएंगे। यहेजकेल 36:22-28 में, परमेश्वर ने सभी देशों से यहूदियों को इकट्ठा करने की और फिर उन्हें शुद्ध करने की प्रतिज्ञा की है। यहूदी अविश्वास में इकट्ठा होंगे, परन्तु परमेश्वर उनके हृदयों को बदलने की प्रतिज्ञा करता है। परमेश्वर इस्राएल की जाति को बदल देगा। उसने उनके भीतर एक नया आत्मा डालने की और अपने प्रति उनके हृदयों को नम्र करने की प्रतिज्ञा करता है। साफ तौर पर, भविष्यद्वाणी का एक भाग पूरा हो चुका है क्योंकि यहूदी एक अत्यंत सांसारिक इस्राएल में इकट्ठे हो रहे हैं, और वे पृथ्वी के अत्यंत सुदूर इलाकों से अपनी मातृभूमि की ओर लगातार वापस लौट रहे हैं। इस्राएल में घटनाओं को करीब से देखिए। और अधिक आनेवाली हैं। परमेश्वर ने इसकी प्रतिज्ञा की है।

इस्राएल के विरुद्ध युद्ध (यहेजकेल 38:1-12)

करीबन 2,600 वर्षों पहले बाबुल में निर्वासित एक यहूदी के द्वारा लिखी गई यहेजकेल की पुस्तक, यहूदी लोगों के अंत-समय की घटनाओं का परिदृश्य प्रदान करती है। जैसा ऊपर बताया गया है, यहेजकेल ने इस्राएल में यहूदियों की वापसी की भविष्यद्वाणी की थी। यहेजकेल ने इस्राएल के विरुद्ध एक बड़े युद्ध की भी भविष्यद्वाणी की थी जिसका होना अभी बाकी है। गठबंधन सेनाओं के द्वारा इस्राएल पर आक्रमण किया जाएगा जिसकी अगुवाई मागोग देश के गोग के द्वारा होगी। काला सागर के उत्तर में और केस्पियन सागर के पूर्व में एक प्रदेश के रूप में मागोग की पहचान प्रथम शताब्दी के यहूदी इतिहासकार फ्लेवियस जोसीफुस के द्वारा की गई थी, जो ऐसा प्रतीत होता है कि यह हमारे समय के रूस के समान है। गठबंधन सेनाओं के अन्य सदस्यों में फारस, इथियोपिया, पुत, गोमर, और बेथ-तोगार्माह शामिल हैं, जो अन्दाज़न वर्तमान समय के ईरान, सूडान, लीबिया, यूक्रेन, और तुर्की से सम्बन्धित हैं।

गठबंधन सेनाओं के द्वारा इस्राएल पर आक्रमण असफल हो जाएगा। परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा, और हमला करती हुए सेनाएं और उनके राष्ट्र नष्ट हो जाएंगे।[71] मध्य पूर्व में तनाव को देखते हुए, जो हमारे समय में बढ़ रहा है, यह इतना हैरान कर देनेवाली बात नहीं होगी, यदि इस्राएल पर उसी प्रकार आक्रमण होता है जिसका वर्णन यहेजकेल के द्वारा किया गया है। हम एक बार फिर से देखते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि संसार की घटनाएं बाइबल सम्बन्धी भविष्यवाणियों के साथ एक मेल में घटित हो रही हैं।

बादलों पर उठाया जाना (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)

प्रेरित पौलुस एक अद्भुत घटना का वर्णन करता है जहाँ यीशु मसीह में सभी युगों से विश्वासियों

पृथ्वी से अनंतकाल तक

(संतों) को अचानक से पृथ्वी से हटा दिया जाता है:

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)

इस भाग में, प्रभु यीशु अपने लोगों के लिए एक ललकार के साथ नीचे उतरेगा। ऐसे लोग जो उसमें विश्वास करते हुए मर जाते हैं, और सभी जीवित लोग जो उसमें विश्वास करते हैं, वे उससे मिलने के लिए हवा में उठा लिए जाएँगे। तुरन्त ही, उन्हें अविनाशी पुनरुत्थित शरीर दे दिया जाएगा, जो कभी नहीं मरेगा या बीमार नहीं पड़ेगा। उसके बाद, पवित्र लोग हमेशा यीशु के साथ रहेंगे। कुरिन्थियों के लिए अपने पहले पत्र में पौलुस इस प्रक्रिया कर वर्णन करता है:

> हे भाइयो, मैं यह कहता हूँ कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। देखो, मैं तुमसे भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे, और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूंकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। (1 कुरिन्थियों 15:50-53)

कुछ अनुवादकों ने बादलों पर उठाए जाने को यीशु के द्वितीय आगमन के साथ मिलाने की कोशिश की है, परन्तु इन घटनाओं का स्वरूप वृहद् रूप से अलग है।

बादलों पर उठाए जाने के समय, यीशु अपनी कलीसिया से हवा में मिलेगा। सभी युगों के विश्वासी अपने प्रभु से मिलने के लिए ऊपर हवा में उठा लिए जाएंगे। कोई न्याय नहीं होगा चूंकि अविश्वासी पृथ्वी पर ही हैं। ऐसे कोई अग्रिम चिह्न नहीं हैं जो बादलों पर उठाए जाने से पहले होते हैं—यह बस किसी दिन घटित हो जाएगा।

द्वितीय आगमन पर, विजयी राजा और पृथ्वी के निवासियों के न्यायी के रूप में यीशु स्वयं अपने लोगों के साथ आएगा। यह सभी विश्वासियों और अविश्वासियों पर प्रकट हो जाएगा कि यीशु वापस आ गया है। यीशु मत्ती अध्याय 24 में अपने द्वितीय आगमन से पहले घटित होनेवाले चिह्नों का वर्णन करता है। यीशु के द्वितीय आगमन पर अगले अध्याय में विस्तार से चर्चा की गई है, परन्तु ऐसा बिलकुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि बादलों पर उठाया जाना और द्वितीय आगमन अलग अलग घटनाएं हैं।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि बादलों पर उठाया जाना (rapture) बाइबल में नहीं है। मूल यूनानी भाषा में, पौलुस इसका वर्णन करने के लिए *हारपाज़ो* शब्द का उपयोग करता है, जिसका अर्थ अचानक से हटा देना, या छीन लेना या झपट कर पकड़ लेने से है। "बादलों पर उठाया जाना (rapture)" शब्द लातीनी भाषा के शब्द *रेप्टुस* से आता है, जो *हारपाज़ो* का लातीनी अनुवाद है। स्पष्ट है, बादलों पर उठाए जाने की अवधारणा ऊपर दिए पौलुस के विवरण में है।

अधिकांश धर्मविज्ञानी मानते हैं कि कलीसिया का बादलों पर उठाया जाना महा क्लेशकाल से पहले होगा। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पहले तीन अध्यायों में कलीसिया का 16 बार जिक्र है, और 6 अध्याय से लेकर 16 अध्यायों तक कलीसिया का कोई जिक्र नहीं है, जो महा क्लेशकाल का वर्णन करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कलीसिया महा क्लेशकाल के दौरान अनुपस्थित होगी। पवित्रशास्त्र में यह भी स्पष्ट है कि यीशु पर विश्वास करनेवालों को क्रोध के लिए ठहराया नहीं गया है:

> … तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है। (1 थिस्सलुनीकियों 1:9-10)

इस भाग में पौलुस थिस्सलुनीके में कलीसिया से बात कर रहा है, परन्तु उसका सन्देश उन सभी तक पहुँचता है जो यीशु में विश्वास करते हैं। यदि विश्वासियों को "आनेवाले क्रोध" से बचना है, तो उन्हें महा क्लेशकाल के दौरान पृथ्वी पर होने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, जिसकी ओर परमेश्वर के क्रोध के बड़े दिन के रूप में संकेत किया गया है (प्रकाशितवाक्य 6:15-17)। धन्य हैं वे जो प्रभु के वापस आने से पहले पश्चाताप करके उस पर विश्वास लाते हैं। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे आनेवाले क्रोध से बचा लिए जाएंगे।

मसीह विरोधी का प्रकट होना (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12; मत्ती 24:15-21; दानिय्येल 7:8-24)

अंत के समयों की घटनाओं के केन्द्र में एक बुरा व्यक्तित्व मसीह विरोधी है। मसीह विरोधी, अर्थात् अधर्मी पुरुष जिसका वर्णन पौलुस करता है, उसके प्रकट होने के सम्बन्ध में प्रारम्भिक कलीसिया के समय से ही अटकलें तेज़ी से फैली हुई हैं। इसके कुछ उम्मीदवारों में रोमी सम्राटों, पोप, मार्टिन लूथर, नेपोलियन, और हिटलर के नाम शामिल हो सकते हैं। स्पष्ट रूप से, मसीह विरोधी का नाम देने का प्रयास करने में अनेक लोगों ने गलती की हैं, और हमें उसके लिए किसी पहचान को निर्दिष्ट करने में सावधान होना होगा। उसकी वास्तविक पहचान एक रहस्य है, परन्तु उसके पीछे की ताकत को पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से पहचाना गया है। पौलुस कहता है कि अधर्म के पुरुष, अर्थात् मसीह विरोधी, का आना शैतान की गतिविधि के अनुरूप होगा।

मसीह विरोधी की ओर संकेत करने के लिए बाइबल में उपयोग किए गए कुछ नामों में पशु, अधर्म का पुरुष, आने वाला शासक, छोटा सींग, पाप का पुरुष, और उजाड़नेवाली घृणित वस्तु (यीशु और दानिय्येल ने इस अंतिम नाम का उपयोग किया है) को शामिल किया गया है।

मसीह विरोधी किसके समान होगा? वह एक राजनैतिक विद्वान होगा जो संभवतः ऐसे देश से आएगा जो पुराने रोमी साम्राज्य के प्रदेश से होगा। पहले शांति स्थापित करनेवाले के रूप में उसकी प्रशंसा की जाएगी। वह एक करिश्माई पुरुष होगा जो सर्वोच्च आत्म-विश्वास रखता होगा, और वह चिह्नों और चमत्कारों को अंजाम देने में सामर्थी होगा। वह शैतान से अपने अधिकार को प्राप्त करेगा और उस सब का विरोध करेगा जो परमेश्वर से है। वह चाहेगा कि संसार उसकी उपासना करे, परन्तु उसका समय छोटा होगा, क्योंकि अन्ततः उसे आग की झील में फेंक दिया जाएगा। पहली नज़र में मसीह विरोधी बहुत अच्छा दिखाई देगा, परन्तु संसार जल्द ही जान जाएगा कि वह बहुत, बहुत बुरा है।

एक वैश्विक सरकार और वैश्विक धर्म (प्रकाशितवाक्य 13:1-18)

प्रकाशितवाक्य एक और पशु की बात करता है, जो पहले पशु अर्थात् मसीह विरोधी का अपवित्र सहायक होगा। दूसरा पशु चिह्नों को अंजाम देता है, जैसे स्वर्ग से आग गिराना, जो उन लोगों को भरमाएगा जो पृथ्वी पर रहते हैं। वह पृथ्वी के लोगों को पहले पशु अर्थात् मसीह विरोधी की उपासना करने के लिए उकसाएगा। वह समूचे संसार को उकसाएगा कि अपने दाहिने हाथ या माथे पर पशु का चिह्न प्राप्त करें। ऐसे

लोग जो मना करेंगे, वे कुछ भी खरीदने या बेचने के लिए असमर्थ होंगे, और ऐसे लोग, किसी भी किस्म के कारोबार में भाग लेने में असमर्थ होंगे।

महाक्लेश का समय (मत्ती 24:15-21; प्रकाशितवाक्य 7:14; प्रकाशितवाक्य 4:1-19:21)

यीशु ने पृथ्वी पर बड़े और अप्रत्याशित खतरे के समय की बात करते हुए कहा,

> क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा। (मत्ती 24:21)

दानिय्येल की भविष्यवाणियों के आधार पर धर्मविज्ञानी निष्कर्ष निकालते हैं कि क्लेशकाल की अवधि सात वर्षों की होगी। वर्षों को मुहर दंड से लेकर और तुरही दंड से होते हुए अन्तिम कटोरे के न्याय तक निरंतर बढ़ती हुई आपदाओं के द्वारा चिन्हित किया जाएगा। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में 6 से लेकर 16 अध्यायों तक, भयंकर दंड की श्रृंखला का वर्णन किया गया है। वे युद्ध एवं अकाल के साथ शुरू होते हैं और पृथ्वी के विशाल भागों के विनाश, स्वर्ग में चिह्नों, और इतिहास में सबसे बड़े भूकंप के साथ समाप्त होते हैं। इस समयावधि के दौरान मसीह विरोधी संसार के मंच पर प्रभुता करेगा।

इस समयावधि में परमेश्वर के उद्देश्यों के मध्य ऐसे लोगों को दण्ड दिया जाए जो उसके पुत्र को ठुकराते हैं और उसके नाम की ईशनिंदा करते हैं, और उस समय के दौरान रह रहे लोगों को उकसाया जाएगा कि वे यह निर्णय लें कि वे किसका अनुसरण करेंगे, मसीह का या मसीह विरोधी का।

आप नहीं चाहेंगे कि आप महाक्लेश काल के दौरान पृथ्वी पर हों।

पन्द्रह
यीशु का पुनःआगमन

क्या हम अंत के समय में हैं?

जब से कलीसिया अस्तित्व में है, तब से यीशु के अनुयायियों ने इस सवाल पर विचार किया है, और अनेक लोग विश्वास करते थे कि वे असल में अंत के समय में रह रहे थे। हम शायद, या हम शायद इसकी ओर पहुंच रहे हैं, या हो सकता है कि यह अभी भी सुदूर भविष्य में हो। कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता है। फिर भी हम ज़रूर जानते हैं कि वह आ रहा है।

यीशु को ग्रहण करने के लिए वर्तमान से बेहतर कोई और समय नहीं है। यीशु आज ही आ सकता है, या हो सकता है कि यह अब से सैकड़ों वर्षों बाद हो। यीशु ने कहा था कि कोई उस दिन को नहीं जानता है जब संसार का अंत होगा। यह महत्वपूर्ण है कि जब हम यीशु की वापसी के चिह्नों को देखते हैं जिसकी चर्चा ऊपर की गई है, तो हमें तिथियों को तय करने से बचना चाहिए। कुछ समय के लिए संसार अवनति की समयावधि में लगातार बना रह सकता है। हो सकता है आत्म-जागृति भी हो, और लोग वापस परमेश्वर की ओर मुड़ें। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उस समय के लिए तैयार हैं जब यीशु अपनी कलीसिया के लिए बादलों पर फिर से आएगा।

बाइबल में अंत-समय के बड़े भागों में से एक मत्ती की पुस्तक का चौबीसवाँ अध्याय है, जिसमें दुःख भोग सप्ताह के दौरान यीशु द्वारा अपने चेलों को कहे शब्द दर्ज़ हैं। यह वह सप्ताह था जिसमें यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। यीशु ने इन वचनों को बोलने से पहले अभी अपने चेलों को यह बताया था कि यरूशलेम में मन्दिर को पूरी तरह से नष्ट नाश कर दिया जाएगा,, "यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।"[72] जैसा अध्याय 3 में वर्णन किया गया है, यह भविष्यद्वाणी 70 ईस्वी में पूरी हुई थी जब रोमियों ने यरूशलेम को ध्वस्त कर दिया था।

प्रकट था कि चेले उस बात से व्याकुल हो गए थे जो यीशु ने उन्हें बताया था। कुछ समय बाद, जब यीशु जैतून के पर्वत पर बैठा था जो पर्वत पर मन्दिर के समीप था, तो वे ऐसे चिह्नों के बारे में यीशु से पूछने के लिए उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए, जो युग के अंत में उसके पुनः आगमन से पहले प्रकट होंगे। मत्ती इसे ऐसे दर्ज़ करता है

> जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने एकान्त में उसके पास आकर कहा, "हमें बता कि ये बातें कब होंगी? तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?" यीशु ने उनको उत्तर दिया, "सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए, क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को भरमाएंगे। तुम लड़ाईयों और लड़ाईयों की चर्चा सुनोगे, तो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे। ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। तब वे क्लेश देने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुमसे बैर रखेंगे। तब बहुत से ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा,

पृथ्वी से अनंतकाल तक

> परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा। (मत्ती 24:3-14)

इस भाग में यीशु कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण बातें कहता है। वह कहता है कि बहुत से लोग उसके द्वितीय आगमन से पहले आएंगे और दावा करेंगे कि वे ख्रीस्त (मसीहा के लिए यूनानी शब्द) हैं और वे, झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ साथ, बहुतों को भटका देंगे। यह वास्तव में, युगों युगों से होता चला आ रहा है।

मोहम्मद यीशु के सैकड़ों वर्षों बाद आया, और मुस्लिम दावा करते हैं कि वह अंतिम और सबसे बड़ा नबी है जिसकी शिक्षा यीशु की शिक्षा से बढ़कर थी। अभी तक अनेक अन्य लोग दावा करते हुए आ चुके हैं कि उनके पास ऐसा प्रकाशन है जो नए नियम में यीशु के वचनों से उत्तम है, जिसमें मोरमन चर्च के संस्थापक जोसेफ स्मिथ, और यहोवा विटनेस के संस्थापक चार्ल्स टेज़ रस्सल शामिल हैं। बार बार कोई न कोई आता है जो स्वयं को मसीहा होने या देह में परमेश्वर होने का दावा करता है। वह मुख्य बात जिसे यीशु यहाँ कह रहा है वह यह है कि इन झूठे शिक्षकों और झूठे मसीहाओं के द्वारा बहुत से लोगों को भटका दिया जाएगा।

अंत के समय में युद्ध और युद्ध के खतरे सामान्य बात हो जाएंगें। जैसा पहले कहा गया था, बाइबल के कुछ अनुवादक विश्वास करते हैं कि "एक जाति का दूसरी जाति के विरुद्ध उठ खड़ा होना" विश्व युद्ध की ओर संकेत करता है। अकाल और भूकंप अंत के समय में मुख्य विषय हो जाएंगे। इन बातों के बाद, मसीहियों पर सताव आरंभ हो जाएगा, झूठे भविष्यद्वक्ता बढ़ जाएंगे, और बहुत से लोगों को भटका दिया जाएगा।

क्योंकि बड़ी संख्या में लोग परमेश्वर की व्यवस्थाओं का उल्लंघन करते हैं, इसलिए लोग ठण्डे पड़ जाएंगे और एक दूसरे के प्रति सन्देहास्पद हो जाएंगे। सुसमाचार प्रचार, अर्थात् संसार के पापों के भुगतान के रूप में यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के शुभ सन्देश के साथ युग समाप्त होता है। जब एक बार सारी जातियों को सुसमाचार प्रचार कर दिया जाएगा, तब अंत आ जाएगा। हमारे समय में कितने लोगों ने अभी तक सुसमाचार नहीं सुना है?—शायद बहुत ज्यादा नहीं होंगे, यह देखते हुए कि हमारे युग में संचार तकनीकों की भरमार है।

यीशु कैसे वापस आएगा?

मत्ती 24 में यीशु थोड़ा बाद में अपनी वापसी का वर्णन करता है। यह क्लेश के समय के अंत में होगा। स्वर्ग हिला दिया जाएगा। यीशु कहता है:

> … उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे। (मत्ती 24:29-31)

यीशु का चिह्न आकाश में प्रकट होगा। यह अज्ञात है कि वास्तव में वह चिह्न क्या है। फिर भी, पृथ्वी पर हर कोई इस बात से अवगत होगा कि यीशु वापस लौट आया है।

पृथ्वी की सभी जातियां विलाप करेंगी क्योंकि उन्होंने अवसर को गवां दिया था। उन्होंने परमेश्वर

का इन्कार किया था, और उन्होंने उसके पुत्र का इन्कार किया था, और अब उनका आमना-सामना इस वास्तविकता के साथ होगा कि सुसमाचार का सन्देश सच्चा है: यीशु वाकई में मुर्दों में से जी उठा था। जातियां विलाप करती हैं। उनके पास खुश होने की कोई वज़ह नहीं होगी, क्योंकि आज के बहुत से लोगों के समान उन्होंने पश्चाताप करने से इनकार किया था, और यीशु को अस्वीकार किया था! आज अनेक लोगों के समान उन्हें नरक में सम्पूर्ण अनंतकाल के लिए परमेश्वर से अलग कर दिया जाएगा। किसी भी व्यक्ति के लिए नरक में अनंतकाल बिताना ज़रूरी नहीं है। परमेश्वर सभी लोगों को अपने पुत्र को ग्रहण करने के लिए बुलाता है, परन्तु उसे ग्रहण करने के लिए वह आपको बाध्य नहीं करेगा। निर्णय आपका है।

यीशु की वापसी के बाद का संसार (प्रकाशितवाक्य 19-20)

जब यीशु वापस आएगा, तो वह मसीह विरोधी की विद्रोही सेनाओं को कुचल देगा, और वह सहस्राब्दी (1,000 वर्षों) के लिए यरूशलेम में अपने पवित्र लोगों (सभी युगों के विश्वासियों) के साथ राज्य करेगा। बादलों पर उठाए जाने के समय सभी युगों के विश्वासियों को अविनाशी शरीर प्रदान किए गए थे। ऐसे लोग जो महा क्लेश के दौरान यीशु में विश्वास करने लगेंगे, वे सामान्य मानव शरीर में सहस्राब्दी में प्रवेश करेंगे। उनके पास संतानें होंगी और वे संसार को फिर से आबाद कर देंगे जबकि उसी समय यीशु अपने पवित्र लोगों के साथ यरूशलेम में राज्य करेगा। सहस्राब्दी के दौरान शैतान को बांध दिया जाएगा, और संसार को मसीह में एक कर दिया जाएगा।

यरूशलेम में मसीह के राज्य के हज़ार-वर्ष की समाप्ति पर, शैतान को खुला छोड़ दिया जाएगा कि अंतिम विद्रोह को भड़काए। परमेश्वर इसकी अनुमति क्यों देगा? कदाचित् ऐसे मनुष्यों को अनुमति देने के लिए जो सहस्राब्दी के दौरान पैदा हुए ताकि वे एक बार फिर से उसके और शैतान के बीच में स्वतन्त्रता के साथ चुनाव करें। परमेश्वर मशीनी मानवों को नहीं चाहता है, परन्तु इसके बजाय ऐसे लोगों को चाहता है जिन्होंने पवित्र आत्मा के प्रभाव के अधीन स्वतन्त्र रूप से उसका चुनाव किया है। इस अंतिम विद्रोह को कुचल दिया जाएगा। शैतान और सभी लोग जो उसका अनुसरण करते थे उन्हें अनंतकाल के लिए आग की झील में फेंक दिया जाएगा।

एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी निर्मित की जाएगी, जो सम्पूर्ण अनंतकाल के लिए बनी रहेगी, क्योंकि पुराना आकाश और पुरानी पृथ्वी टल जाएगी।

परमेश्वर का सन्देश युगों-युगों तक नहीं बदलता। हमें उसी रीति से चुनौती दी गई है जैसे यहोशू ने इस्राएलियों को चुनौती दी थी:

> और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे... परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा।" (यहोशू 24:15)

हम अपने कार्यों के द्वारा चुनाव कर सकते हैं कि क्या हम अपने बनाए हुए ईश्वरों का अनुसरण करेंगे या उस परमेश्वर का अनुसरण करेंगे जो अपने शब्द के बोलने से जगत को अस्तित्व में लाया था, जिसने बाइबल के द्वारा अपने लोगों से सरलता से संवाद किया है। आप किसका चुनाव करेंगे? आप किसकी सेवा करेंगे? आप अनंतकाल कहाँ पर बिताएंगे? केवल आप ही इन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं।

सोलह
उपसंहार

मसीहियों के रूप में, हमें सत्य को प्रेम से बोलने के लिए बुलाया गया है। भले ही मैं आपको नहीं जानता हूँ, फिर भी सह-मानव के रूप में मैं चाहता हूँ कि सभी लोग उस सत्य को ढूंढ़ें जिसके विषय में मैं बिना किसी सन्देह के आश्वस्त हूँ। यदि मसीहियत सही है, जैसा मैं विश्वास करता हूँ और प्रमाण स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि वह है, तो अत्यंत प्रेममय चीज़ जिसे मसीही लोग कर सकते हैं वह यह है कि इसे दूसरों के साथ साझा करें ताकि वे यीशु में विश्वास कर सकें और स्वर्ग में अनंतकाल बिता सकें।

यहाँ पर मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि लोगों को डराऊं, परन्तु यीशु के सन्देश पर ध्यान न देने के खतरनाक परिणाम होते हैं। हम सभी इस जीवन में यात्रा पर हैं। इस जीवन का उद्देश्य यह है कि परमेश्वर को खोजें और उसे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पा लें। यही वह बात है जिसे बाइबल हमें बताती है। अपनी यात्रा के इस भाग को असफलता में खत्म मत होने दीजिए। कोई दूसरा मौका नहीं होगा। यह यात्रा धन-सम्पत्तियों और ताकत हासिल करने के बारे में नहीं है, जैसा संसार हमें बताता है। यह किसी ऐसी चीज़ के विषय में है जो बहुत अधिक महत्वपर्ण है—सत्य को खोजना।

वह सब जिसे पिछले अध्याय में कहा गया था उसे देखते हुए, मैं अक्सर आश्चर्य करता हूँ कि क्यों इतने सारे लोग मसीहियत के दावों को गंभीरतापूर्वक लेने में असफल हो जाते हैं, और क्यों इतने सारे लोग उसका इन्कार करने और उसके एवं यीशु मसीह के मिशन के विषय में संशय करके परमेश्वर को ठुकराते हैं। मैं आश्चर्य करता हूँ कि क्यों संसार में इतने सारे नास्तिक और अनीश्वरवादी हैं जब यीशु के जन्म से सैकड़ों वर्षों पहले मानवता को बचाने के लिए परमेश्वर की योजना की भविष्यद्वाणी इतनी स्पष्टता से की गई थी?

ब्लेइस पास्कल 17 वीं शताब्दी में रहते थे जब यूरोपीय जागरण, और साथ ही मसीहियत के दावों को लेकर संशयवाद पूरे ज़ोर-शोर में था। पास्कल एक महान फ्रांसिसी वैज्ञानिक और दर्शनशास्त्री थे, जो नास्तिकों, संशयवादियों, और अनीश्वरवादियों से घिरे रहते थे। साथ ही वे एक भक्त मसीही भी थे। पास्कल ने अपने मित्रों एवं जान-पहचानवालों को उनके संशयवाद के खतरे को सूचित करने के लिए एक तरीके की खोज की थी। उन्होंने न्यायसंगत तर्क को सूत्रबद्ध किया था क्योंकि वे बौद्धिक प्रकाशन के युग में रहते थे, अर्थात् ऐसे समय में रहते थे जब दर्शनशास्त्रियों एवं वैज्ञानिक ने पाया था कि तर्क एवं कारण के अनुप्रयोग के द्वारा सत्य को निर्धारित किया जा सकता था। पास्कल के न्यायसंगत तर्क को पास्कल का दांव कहा जाने लगा था।

पास्कल के दांव का सार-तत्व यह है: यदि कोई परमेश्वर में विश्वास करने का चुनाव करता है, तो उस व्यक्ति के पास खोने के लिए कुछ भी नहीं होता है परन्तु अर्जित करने के लिए सब कुछ होता है। यदि आप यह विश्वास करने का चुनाव करते हैं कि मसीहियत सही है, और आप गलत पाए जाते हैं, तो आप क्या खोते हैं? आप कुछ भी नहीं खोते हैं, परन्तु इसके बजाय ऐसे जीवन को अर्जित करते हैं जो उद्देश्य, अर्थ, और नैतिक ढांचे से भरा हुआ है, जिसका सब कुछ भलाई की ओर ले जाता है। फिर भी, यदि आप मसीहियत को और अपने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु को अस्वीकार करने का चुनाव करते हैं, और आप गलत हैं, तो आप अनंतकाल के लिए सब कुछ खो देंगे।

इन विकल्पों से सामना होने पर, पास्कल ने अपने नास्तिक एवं अनीश्वरवादी मित्रों से बहस की कि इस जीवन में एकमात्र तर्कसंगत चुनाव यह विश्वास करने का चुनाव करना था कि मसीहियत सही है और यह कि यीशु वाकई में संसार का उद्धारकर्ता है।

जब हम सावधानी से पास्कल के दांव से होकर सोचते हैं, तो ऐसा प्रतीत होगा कि हमें उसके साथ अवश्य सहमत होना चाहिए। असल में, ऐसा प्रतीत होता है कि समूचे संसार को पास्कल के दांव की बुद्धि को देखनी चाहिए क्योंकि नास्तिकवाद और अनीश्वरवाद का चुनाव वाकई में बुरा है। परमेश्वर के प्रकट अस्तित्व का इन्कार करने के द्वारा संभावित रूप से क्या अर्जित किया जा सकता है?—कदाचित् स्पष्ट विवेक के साथ अनुपयुक्त और सांसारिक अभिलाषाओं का अनुसरण? परन्तु क्या यह वाकई में नास्तिक या मूर्तिपूजक होने को उपयुक्त बनाता है, जब एक व्यक्ति को देह की क्षणभंगुर अभिलाषाओं के लिए अनंत यातना का जोखिम उठाना पड़ता है?

पश्चाताप करने और यीशु में विश्वास करने के लिए कभी देर नहीं होती है। ईमानदारी से ऐसा करके आप अनंतकाल के लिए स्वर्ग में अपने स्थान को आश्वस्त कर सकते हैं।

परमेश्वर आपकी खोजबीन और आपकी यात्रा को आशीष दे। आप उसके नाम को पुकारें और उससे विनती करें कि सत्य को आपके लिए प्रकट करे।

परिशिष्ट
कठिन प्रश्नों के उत्तर

क्या सत्य वाकई में संबंधात्मक है?

यह कथन कि "सत्य संबंधात्मक है" आत्मघाती कथन है। यदि सत्य संबंधात्मक है, तो वह कथन "सत्य संबंधात्मक है" भी संबंधात्मक है, जिसका अर्थ है कि यह सभी समयों, स्थानों और लोगों के लिए सही नहीं है। यदि यह सभी समयों, स्थानों और लोगों के लिए सही नहीं है, तो आपको इसके बारे में चिंता नहीं करना चाहिए क्योंकि शायद यह आप पर लागू नहीं होता है।

वास्तविकता तो यह है कि सम्पूर्ण सत्य परम सत्य है। सत्य वह है जो वास्तविकता से सम्बन्धित होता है। सत्य की मेरी समझ शायद गलत हो सकती है, परन्तु यह सत्य को नहीं बदलती है। 21 जुलाई 1969 को मनुष्यों ने पहली बार चन्द्रमा पर कदम रखा था। यह एक सत्य है जो परम सत्य है, अर्थात् यह सभी समयों, स्थानों और लोगों के लिए सही है। यदि मैं ईमानदारी से विश्वास करूँ कि चन्द्रमा पर पहला कदम 1983 में रखा गया, तो यह उस तथ्य को नहीं बदलता है कि यह वास्तव में 21 जुलाई 1969 को हुआ था। भले ही चीन में कोई व्यक्ति चन्द्रमा पर पहले कदम रखने से अवगत ना हो, फिर भी यह अब भी उसके लिए सही है कि चन्द्रमा पर पहला कदम 21 जुलाई 1969 को रखा था। असल में, यह सभी लोगों के लिए सही है जो अभी तक रहे हैं। सत्य के विषय में किसी व्यक्ति का ज्ञान या समझ वास्तविक सत्य को नहीं बदलती है। चाहे कोई व्यक्ति चन्द्रमा पर रखे पहले कदम को स्वीकार करे या अस्वीकार करे यह उस तथ्य को नहीं बदलता है कि चन्द्रमा पर पहला कदम इतिहास का एक तथ्य है और यह एक निश्चित तिथि को घटित हुआ था। मनुष्य ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि सभी सत्य को जानें, परन्तु परमेश्वर उस स्थति में है, और एक दिन, इसे प्रकट कर दिया जाएगा।

बाइबल दावा करती है कि यीशु ही परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र मार्ग है। यदि यह कथन सच है, जैसा मैं विश्वास करता हूँ कि यह उस प्रमाण पर आधारित है जो इस पुस्तक में प्रस्तुत है, तब यह सभी लोगों के लिए सही है।

क्या मैं वाकई में यहाँ पर हूँ?

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि जीवन महज एक भ्रम है। इसे निष्पक्ष रूप से आसान होना चाहिए कि इसकी जांच की जाए। यदि एक व्यक्ति को किसी के हाथ को उबलते हुए पानी के मटके में डालना पड़े, तो उस व्यक्ति को निश्चित रूप से दर्द होगा। यह आसान है कि किसी ऐसे व्यक्ति की जांच की जाए जो इस पर सन्देह करता है। स्पष्ट रूप से, भ्रम दर्द का एहसास नहीं करता है। इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि हमारा अस्तित्व स्पर्शजन्य और शारीरिक है।

नए नियम की खोई हुई पुस्तकों के बारे में क्या कहा जाए?

जबकि यह सही है कि उस समय चारों ओर अनेक सुसमाचार पाए जाते थे, परन्तु उन्हें प्रारम्भिक कलीसिया के द्वारा अस्वीकृत किया गया था क्योंकि उन्हें ऐसे लेखकों के द्वारा नहीं लिखा गया था जो घटनाओं के करीब रहे थे जब वे वास्तव में घटित हुई थीं। सुसमाचार लेखक मत्ती और यूहन्ना ऐसे प्रेरित

थे जो पृथ्वी की अपनी समूची सेवकाई के दौरान यीशु का अनुसरण करते थे। मरकुस प्रेरित पौलुस का करीबी सहायक था। लूका प्रेरित पौलुस का सहयात्री और सहकर्मी था। नए नियम के सुसमाचार लेखकों ने यीशु के क्रूसारोहण के कुछ दशकों के भीतर ही अपने सुसमाचारों को लिखा था।

नए नियम से अलग रखी गई इन पुस्तकें को क्रूसारोहण के बाद ऐसे व्यक्तियों के द्वारा 100 से लेकर 200 वर्षों या उससे अधिक वर्षों में लिखा गया था जो चश्मदीद गवाह नहीं थे। वे फिलिप्पुस के सुसमाचार, मरियम के सुसमाचार, और थोमा के सुसमाचार को शामिल करते हैं। उन्हें यरूशलेम के कई सैकड़ों मील दूर मिस्र में खोजा गया था, और वे ज्ञानवादी शिक्षाओं से भरे हुए थे। ज्ञानवाद एक गलत पंथ था जिसमें अलग अलग मान्यताओं का मिश्रण पाया जाता है और उनके विचारों को यहूदियों, यूनानियों, विभिन्न दर्शनशास्त्रियों, और मसीहियत से लिया गया था। ज्ञानवाद (Gnostics) ने अपने दिनों की अनेक धार्मिक मान्यताओं को अपने में मिश्रित किया था, अतः वे मसीही नहीं था।[73]

ज्ञानवादी मान्यताओं और दावों को प्रारम्भिक कलीसिया के द्वारा अस्वीकार किया गया था क्योंकि वे प्रेरितों के चश्मदीद गवाही के साथ समहत नहीं थे। यह स्मरण करना महत्वपूर्ण है कि बाइबल की खोई हुई पुस्तकें वाकई में खोई हुई नहीं थीं। ऐसा कहना कहीं अधिक सटीक है कि उन्हें प्रारम्भिक कलीसिया के द्वारा अस्वीकार किया गया था क्योंकि उनमें विश्वसनीयता की कमी थी।

उनके विषय में क्या कहा जाए जिन्होंने यीशु के बारे में नहीं सुना है, क्या उन्हें नरक का दण्ड दिया जाएगा?

पहला, यह टालने की बात नहीं है, बाइबल स्पष्ट रूप से शिक्षा देती है कि यीशु स्वर्ग के लिए एकमात्र मार्ग है (यूहन्ना 3:16-18; 1 यूहन्ना 5:12, प्रेरितों के काम 4:12)।

दूसरा, इस पर विचार किया जाना चाहिए कि वह जिसने विश्व की रचना की थी वही उस सब का स्वामी है जो इसमें है। जगत में कुछ भी मौजूद नहीं होता, यदि परमेश्वर ने उसे सृजा न होता। अस्थायी प्राणियों के रूप में हमें कुछ पता नहीं है कि विश्व की सृष्टि करने में क्या शामिल है, और इस प्रकार हमारे पास आलोचना करने के लिए वाकई में कोई आधार नहीं है कि किस प्रकार परमेश्वर इस विश्व का संचालन करता है।

तीसरा, बाइबल हमें बताती है कि पृथ्वी से जाति-जाति के लोग स्वर्ग में होंगे, अतः यह स्पष्ट है कि प्रत्येक जाति के लोगों ने यीशु के बारे में सुन लिया होगा (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

चौथा, प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर ने सटीक रूप से निर्धारित किया है कि प्रत्येक व्यक्ति कब और कहाँ रहेगा जिससे लोग उसकी खोज करें और कदाचित् उसे ढूंढ़ लें (प्रेरितों के काम 17:26-28)। बाइबल का परमेश्वर सर्व-ज्ञानी और सर्व-सामर्थी परमेश्वर है, और इस प्रकार वह प्रत्येक व्यक्ति को एक नियुक्त स्थान पर रखने हेतु सक्षम है कि उसे अपनी वहीं से उत्तर दे सके जहाँ उसे उस समय होना चाहिए जब उन्हें यीशु को सुनना है। सूबेदार कुरनेलियुस की कहानी ऐसे परमेश्वर के सटीक उदाहरण है जो उन लोगों को दान देता है जो उसके पास जाते हैं, इसका वर्णन प्रेरितों के काम 10 में किया गया है।

सभी लोग अंत में सहमत होंगे कि परमेश्वर, अपने सिद्ध न्याय में, पूरी तरह से निष्पक्ष रहा है और उसने प्रत्येक व्यक्ति का सिद्धता से न्याय किया है।

पश्चाताप करने का अर्थ क्या है?

मरकुस के पहले अध्याय में, यीशु उन सब से कहता है जो उसकी बातें सुनकर पश्चाताप करेंगे और

विश्वास लाएँगे। इस भाग में पश्चाताप शब्द यूनानी *मेटानियो* से आता है, जिसका अर्थ मन परिवर्तन करना, खेदित होना है। धर्मविज्ञानी रूप से, परमेश्वर के प्रति हृदय के सच्चे परिवर्तन के साथ इसमें खेद या दुःख शामिल है। बिली ग्राहम ने एक बार कहा था कि सच्चा पश्चाताप पाप के लिए इतना दुखी होना है कि फिर पाप न करें। परमेश्वर को पुकारने और पश्चाताप करने और विश्वास करने के लिए कभी भी देर नहीं होती है। अब यह नियुक्त समय है कि परमेश्वर की खोज करें।

मैं एक मसीही कैसे बन सकता हूँ?

मसीही लोग यीशु मसीह के अनुयायी हैं। प्रेरितों के प्रचार कथन को सरल रूप से प्रेरितों के काम 2 में यहूदियों की विशाल भीड़ के प्रति पतरस के सम्बोधन में कहा गया है। पतरस ने उन्हें स्पष्ट किया था उन्होंने मसीहा को क्रूस पर चढ़ा दिया था, जिससे वे बहुत अधिक व्याकुल हो गए। यहूदियों ने पतरस से पूछा था कि उन्हें क्या करना चाहिए। पतरस ने जवाब दिया था:

> "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। (प्रेरितों 2:38)

हमें यह पहचानना होगा कि हम पापी हैं और हमें अपने पापों से पश्चाताप करना होगा, ठीक वैसे ही जैसे यहूदियों ने उस दिन किया था। यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेने में, हम सार्वजानिक रूप से पुष्टि करते हैं कि हम उस पर विश्वास करते हैं, उस पर भरोसा रखते हैं, और उसे ग्रहण करने की इच्छा करते हैं। हमें इसे सच्ची ईमानदारी में करना होगा, क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को जानता है। यदि हम यह सब को दूसरों को प्रसन्न करने के लिए करते हैं या दिखावा करते हैं, तो परमेश्वर जान जाएगा।

यदि आप इन कदमों को उठाने के लिए तैयार नहीं है, तो मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि परमेश्वर को पुकारें और उससे विनती करें कि आपके लिए सत्य को प्रकट करे और विश्वास करने में आपकी सहायता करे। जब आप इसे पढ़ते हैं तो परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए, उसके पवित्रशास्त्र की ओर मुड़िये। यूहन्ना का सुसमाचार शुरुआत करने के लिए बेहतरीन स्थान है।

मसीही जीवन बस ऐसा ही है, यह कोई मसीही पल नहीं है। इससे आशय है कि अन्य मसीहियों की संगति में तब तक जीवन बिताया जाए जब तक इस पृथ्वी पर आपके दिन पूरे नहीं हो जाते हैं। ऐसे परिपक्व मसीहियों की खोज कीजिए जो आपकी यात्रा में आपकी सहायता कर सकते हैं। अच्छी कलीसियाएं सार्वजानिक रूप से और नियमित रूप से बाइबल को परमेश्वर के प्रेरित और त्रुटिहीन वचन के रूप में थामे रहती हैं। यदि आपने इन शब्दों को उस कलीसिया में नहीं सुना है जिसमें आप शामिल हो रहे हैं, तो आपको किसी और कलीसिया को ढूंढ़ने की आवश्यकता है। शायद यह किसी दुकान के सामने हो या शायद पत्थर के विशाल भवन में हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। जो बात मायने रखती है वह यह है कि उस कलीसिया में लोग उसके अनुसार अपने जीवनों को बिताएं जिसे बाइबल सिखाती है और जो आराधना करने, स्तुति करने, और अपने सारे मन से परमेश्वर की सेवा करने के लिए इच्छित हों।

परमेश्वर सभी को ऐसे ही स्वर्ग में प्रवेश करने की अनुमति क्यों नहीं दे देता है?

यदि आप वाकई में किसी से प्रेम करते हैं, तो क्या आप उन्हें बाध्य करेंगे कि वे अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ करें? यह बिलकुल ऐसा ही है क्योंकि परमेश्वर इस बात से प्रेम करता है कि उसने हमें स्वतन्त्र इच्छा दी है। परमेश्वर हमें उससे प्रेम करने के लिए बाध्य नहीं करेगा। परमेश्वर ऐसे लोगों को बाध्य नहीं करेगा कि वे अनंतकाल के लिए उसकी उपस्थिति में रहें, जिन्होंने उसे ठुकराया है या उसकी उपस्थिति से इन्कार किया है। मसीही जीवन के गंभीर पहलुओं में से एक पवित्रीकरण है; अर्थात्, मसीह के उदाहरण के

अनुसार अपने जीवन को नमूना बनाना। मसीही लोग पवित्र आत्मा के प्रभाव में मसीह के समान और अधिक बनने हेतु इस जीवनपर्यन्त खोज के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में अनंत जीवन की तैयारी कर रहे हैं।

यीशु समूचे संसार के पापों के लिए मर गया था, परन्तु बहुत से लोग मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं करेंगे और यह विश्वास नहीं करेंगे कि वह परमेश्वर का पुत्र है। अनंत जीवन उन सभी के लिए सेंतमेंत की भेंट है जो मसीह को ग्रहण करते हैं।

क्या वाकई में यह निष्पक्ष होता यदि सभी लोग स्वतः ही स्वर्ग में चले जाते? इसका आशय यह होता कि ऐसे लोग जिन्होंने निष्पक्षता से नैतिक जीवन जीया था वे वहाँ पर अपश्चातापी हत्यारों, बलात्कारियों और निरंकुशों के ठीक बगल में होते।

परमेश्वर सिद्ध रूप से धर्मी है। सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की सिद्धता से रहित हो गए हैं। हम इतने ऋणी हैं कि हम चुका नहीं सकते हैं। परमेश्वर मानवजाति के पाप के ऋण के भुगतान के रूप में अपने पुत्र के बलिदान को स्वीकार करता है, परन्तु यदि हम उद्धारकर्ता के रूप में यीशु का इन्कार करते हैं, तो हमारा उद्धार कौन करेगा?

जैसा पहले कहा गया था, हम अपने पापों में डूबे हुए हैं। एक डूबनेवाला व्यक्ति स्वयं को नहीं बचा सकता या सकती है। जो यीशु में विश्वास करते हैं, परमेश्वर उनके पापों को क्षमा करता है। जिन्होंने यीशु को ग्रहण किया है, वह उनके ऋण के नोटिस पर "ख़ारिज" का निशान लगाता है।

क्या पृथ्वी की आयु उत्पत्ति को अप्रमाणित नहीं करती है?

लोकप्रिय विश्वास के विपरीत, बाइबल हमें नहीं बताती है कि पृथ्वी कितनी पुरानी है। कुछ मसीही लोग मानते हैं कि पृथ्वी लगभग 6,000 वर्षों पुरानी है, परन्तु अनेक लोग नहीं मानते हैं, जिनमें इस युग के और पिछले युगों के अनेक प्रमुख सुसमाचारीय (बाइबल में विश्वास करने वाले) धर्मविज्ञानी शामिल हैं।

ऐसी अवधारणा कि पृथ्वी केवल 6,000 वर्ष पुरानी है उस कालानुक्रम से आती है जिसे आयरिश बिशप जेम्स अशर के द्वारा तैयार किया गया था, जिसे 1650 में *एनल्स ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट* के शीर्षक के अधीन प्रकाशित किया गया था। पुराने नियम में लिखी गई वंशावलियों में लोगों की आयु को जोड़ने के द्वारा, और सृष्टि के लिए छः 24 घण्टों की अवधियों को मान लेने के द्वारा, बिशप अशर ने निष्कर्ष निकाला था कि परमेश्वर ने 23 अक्टूबर, 4,004 ईसा पूर्व की शाम से सृष्टि को आरंभ किया था। अशर के कालानुक्रम को किंग जेम्स बाइबल के अनेक अनुवादों में प्रिंट किया गया था।

पिछले 100 वर्षों में, वैज्ञानिकों ने सृष्टि-सिद्धांतवादियों की निंदा की है जो यह दावा करते हैं कि सभी मसीही विश्वास करते हैं कि कुछ डायनासोर केवल कुछ हज़ार वर्षों पहले ही पृथ्वी पर घूमते थे जबकि वास्तविकता तो यह है कि बाइबल में विश्वास करनेवाले अत्यंत महत्वपूर्ण धर्मविज्ञानियों की बड़ी संख्या "पृथ्वी के अधिक आयु वाले दृष्टिकोण" को मानते हैं जो पुष्टि करता है कि पृथ्वी बहुत ही पुरानी है। स्पष्टता के लिए, इस दृष्टिकोण को कि पृथ्वी लगभग 6,000 वर्ष पुरानी है, "युवा पृथ्वी" वाले दृष्टिकोण के रूप में कहा जाता है।

धर्मविज्ञानी जो अधिक आयु वाली पृथ्वी का दृष्टिकोण रखते हैं आम तौर पर ऐसा करते हैं क्योंकि वे बाइबल में प्रस्तुत कालानुक्रमों में अंतरालों को पाते हैं; वे विश्वास करते हैं कि यह वंशावलियों में लोगों की आयु को जोड़ने जितना सरल नहीं है। उन्होंने सृष्टि के प्रत्येक दिन की घटनाओं पर विचार किया है जिन्हें उत्पत्ति में दिया गया है, और यह विश्वास करते हैं कि इन घटनाओं को 24-घण्टे की अवधियों से अधिक की आवश्यकता थी।

पृथ्वी से अनंतकाल तक

पृथ्वी की आयु के विषय में किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण इस बात की निर्णायक सांकेतिक परीक्षा नहीं है कि कोई व्यक्ति मसीही है या नहीं। अधिकांश लोगों के द्वारा ऐसा माना जाता है कि यह दूसरा मामला है और इसे अनुमति नहीं देनी चाहिए कि यीशु में विश्वासियों को विभाजित करे। मसीही लोग इस मामले के दोनों पक्षों पर बाइबल की सभी महत्वपूर्ण शिक्षाओं पर विश्वास करते हैं, जिसमें बाइबल का त्रुटिरहित होना भी शामिल है—वे बस सृष्टि रचने के भागों का अलग रीति से अनुवाद करते हैं।

सुसमाचार क्या है?

सुसमाचार यह शुभ सन्देश है कि अनंत जीवन उन सभी के लिए उपलब्ध है जो पश्चाताप करते हैं और यीशु के पुनरुत्थान में और क्रूस पर उसके उद्धार करनेवाले कार्य में विश्वास करते हैं। पौलुस इसे सरलता से कहता है:

> हे भाइयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ, जिसे तुमने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं ने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा… (1 कुरिन्थियों 15:1-4)

मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है?

यीशु, अर्थात् परमेश्वर-मनुष्य, परमेश्वर और मनुष्य के बीच में के पुल के समान है। यीशु जगत की उत्पत्ति से ही परमेश्वर के साथ था। उसे सृजा नहीं गया था परन्तु वह संसार की उत्पत्ति से पहले परमेश्वर के साथ अस्तित्व में था। यीशु मसीह परमेश्वर का निष्पाप पुत्र है और इसलिए वह योग्य और सक्षम है कि पापमय मानवता का उद्धार करे। यदि आप यीशु को नज़रान्दाज़ या अस्वीकार करते हैं, तो आपको अपनी स्वयं की योग्यताओं पर परमेश्वर के सामने खड़ा होना होगा। पवित्रशास्त्र के अनुसार, कोई भी धर्मी नहीं है, सिद्धता की तो बात ही छोड़ दीजिए, अतः आपकी योग्यताएं पर्याप्त नहीं होंगी।

यदि परमेश्वर सिद्ध है, तो उसकी सृष्टि में इतनी अधिक गड़बड़ी क्यों है?

परमेश्वर की सृष्टि अच्छी थी। शैतान, अर्थात् परमेश्वर द्वारा सृजे गए स्वतन्त्र प्राणी ने परमेश्वर की अवज्ञाकारिता की और उसे स्वर्ग से पृथ्वी पर फेंक दिया गया था। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को चुनाव करने की स्वतन्त्रता दी थी। आदम और हव्वा को शैतान के द्वारा प्रलोभित किया गया था और वे परमेश्वर के अवज्ञाकारी हुए। परिणाम यह निकला कि सम्पूर्ण सृष्टि भ्रष्ट हो गई थी क्योंकि पाप ने संसार में प्रवेश किया था।

मानवता लगातार पाप करती रही क्योंकि बहुत से लोग परमेश्वर से फिर गए थे, और कोई धर्मी नहीं था। मानवता ने परमेश्वर की सृष्टि में गड़बड़ी कर दी, परन्तु यह मूल रूप से उस तरह नहीं था। गड़बड़ी मनुष्य का काम है, ना कि परमेश्वर का।

मसीहियों को इतना विशिष्ट क्यों होना है? क्या परमेश्वर के पास जाने के अनेक मार्ग नहीं हैं?

पहली बात, मसीहियत यह पुष्टि नहीं करती है कि यीशु ही एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य स्वर्ग पहुंच सकता है। पहले ही इस पर गहराई में चर्चा की गई थी।

जैसा अध्याय 9 में दिखाया गया है, सभी धर्म और विश्वास पद्धतियाँ विशिष्ट हैं। एक उस संभावना को अलग करता है कि परमेश्वर है; दूसरा इस्लाम को छोड़कर सभी अन्य धर्मों को अलग करता है, सभी

एक को छोड़कर उस संभावना को अलग करते हैं कि यीशु संसार का उद्धारकर्ता है। कुछ लोग बिना पुनर्जन्म के स्वर्ग अर्जित करने की संभावना को अलग करते हैं। सभी धर्म विशिष्ट हैं यदि उनके पास ऐसा कोई विश्वास है जिसे वे अनोखे रूप से सच मानते हुए थामे रहते हैं। सभी धर्म सत्य का दावा करते हैं जो, अंत में, अन्य धर्मों के विश्वास का खण्डन करते हैं। मसीहियत किसी भी अन्य धर्म से अधिक विशिष्ट नहीं है। जितना अधिक आप संसार के विभिन्न धर्मों के साथ परिचित होते हैं, उतना ही अधिक यह आपके लिए स्पष्ट होगा कि सभी धर्म विशिष्ट हैं। पिछले अध्यायों ने विचारयोग्य प्रमाण प्रस्तुत किए हैं कि मसीहियत बिना किसी सन्देह के सही है। इस बात को संसार के किसी भी अन्य धर्म के बारे में नहीं कहा जा सकता है।

प्रेरितों के अतिरिक्त, क्या प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे वाकई में सोचते थे कि यीशु परमेश्वर है? क्या 325 ईस्वी में हुई नाइसिया की परिषद में यीशु का "परमेश्वर" के रूप में आविष्कार नहीं गया था?

प्रारम्भिक कलीसियाई धर्माचार्य, अर्थात् कलीसिया के ऐसे अगुवे जो प्रथम कुछ शताब्दियों में प्रेरितों के बाद थे, उनकी लेखनियां उनके विश्वास की सामर्थी साक्ष्य प्रदान करती हैं कि यीशु परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था। उनके अपने शब्दों में, प्रारम्भिक धर्माचार्य जो अगुवे, बिशप, और मसीहियत के मेघावी व्यक्तित्व थे, उन्होंने प्रेरितों का अनुसरण करते हुए घोषणा की थी कि यीशु मानव देह में परमेश्वर है। उनके वचन आज के दिन तक प्रतिध्वनित होते हैं और साफ तौर पर उस धारणा का खण्डन करते हैं कि मसीह के ईश्वरत्व का सिद्धान्त 325 ईस्वी में नाइसिया की परिषद का आविष्कार था। प्रारम्भिक कलीसियाई धर्माचार्यों की शिक्षाओं में मसीह के ईश्वरत्व की पुनःपुष्टि, नाइसिया की परिषद से काफी लम्बे समय पहले की गई थी, जैसा कि निम्नलिखित पृष्ठ पर तालिका में दिखाया गया है।

प्रारम्भिक कलीसियाई धर्माचार्यों के शब्दों में मसीह का ईश्वरत्व[74]		
कलीसिया के धर्माचार्य	**तिथि (ईस्वी)**	**अभिव्यक्त दृष्टिकोण**
रोम का क्लीमेंट	लगभग 96	*"आइए हम प्रभु यीशु मसीह का परम आदर करें, जिसका लहू हमारे लिए बहाया गया था"*
इग्नेशियस	लगभग 105	*"हमारे परमेश्वर यीशु मसीह के साथ घनिष्ठ एकता में बने रहो।"*
एरिसटिडस	लगभग 125	*"मसीही लोग अपने धर्म की शुरुआत यीशु अर्थात् मसीहा से करते हैं। उसे सर्वोच्च परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है। ऐसा कहा गया है कि परमेश्वर स्वर्ग से धरती पर आया था। उसने एक इब्रानी कुंवारी से जन्म लेकर देहधारण किया और उसे वस्त्रों की तरह पहन लिया। और परमेश्वर का पुत्र मनुष्य की पुत्री के गर्भ में रहा था।"*
युस्तुस शहीद	लगभग 160	*"विश्व के पिता के पास एक पुत्र है। और वह, परमेश्वर का पहिलौठा वचन होते हुए, परमेश्वर भी है।"*
एथिनोगोरास	लगभग 175	*"एक ही परमेश्वर और लोगोस है जो उससे अर्थात पुत्र से निकलता है। हम पुत्र को ऐसा समझते हैं कि वह उससे अलग नहीं है।*
इरेनियुस	लगभग 180	"वह परमेश्वर है, क्योंकि इम्मानुएल नाम यह सूचित करता है।"
सिकन्दरिया का क्लीमेंट	लगभग 195	*"हमारा निर्देश देनेवाला पवित्र परमेश्वर यीशु, अर्थात् वचन है।"*
तरतुल्लियन	लगभग 197	*"सब के लिए वह एक समान है, अर्थात् सभी के लिए राजा, सभी के लिए न्यायी, सभी के लिए ईश्वर और प्रभु है।"*
ओरगन	लगभग 225	*"यीशु मसीह स्वयं ही प्राणों का प्रभु और सृष्टिकर्ता है।"*
कार्थेज की सातवीं परिषद	लगभग 256	*"यीशु मसीह, हमारा प्रभु और परमेश्वर, पिता परमेश्वर और सृष्टिकर्ता का पुत्र है।"*

यीशु के ईश्वरत्व में मसीही विश्वास साफ तौर पर पहली शताब्दी की तिथि को तय करता है और इसके बाद इसकी लगातार पुष्टि की जाती रही थी।

नोट्स

1 Hugh Ross, *Creator of the Cosmos* (Colorado Springs: Navpress, 2001), pp. 23-44.
2 Norman Geisler, "Causality, Principle of," *Baker Encyclopedia of Christian Apologetics* (Grand Rapids: Baker Books, 1999).
3 Stephen Meyer, *Signature in the Cell* (New York: Harper Collins, 2009), pp. 341-344.
4 Human Genome Project Information, "Frequently Asked Questions," Available Online at www.genomics.energy.gov (accessed 6/21/10).
5 Stephen Hawking, *A Brief History of Time* (New York: Bantam Books, 1988), p. 10.
6 Meyer, p. 227.
7 Lee Strobel, *The Case for a Creator* (Grand Rapids: Zondervan, 2004), pp. 229-230.
8 Jonathan Wells, Icons of Evolution (Washington, DC: Regnery, 2002), pp. 29-45.
9 Ibid.
10 Ibid.
11 Charles Darwin, *Origin of the Species*, Chapter 6, Available online at www.darwin-online.org.uk (Accessed 11/10/10).
12 Stephen Jay Gould, *The Panda's Thumb* (New York: Norton, 1982), p. 181.
13 Ibid., p. 182.
14 Richard Dawkins, *The Blind Watchmaker* (New York: Norton, 1996), p. 230.
15 Norman Geisler and William Nix, *A General Introduction to the Bible* (Chicago: Moody Press, 1996), p. 196.
16 Isaiah 49:5-6.
17 Matthew 16:16.
18 Deuteronomy 18:18-22.
19 Norman Geisler and Ronald Brooks, *When Skeptics Ask* (Grand Rapids: Baker Books, 1990), p. 115.
20 Geoffrey Bromiley, "Israel, History of the People of," *International Standard Bible Encyclopedia* (Grand Rapids: Eerdmans, 1982), Vol. 2, pp. 908-924.
21 2 Kings 25:1-21.

22 Charles Ryrie, *Ryrie Study Bible*, (Chicago: Moody Press, 1995), p. 1302.
23 John Walvoord and Roy Zuck, eds., *The Bible Knowledge Commentary* (Colorado Springs: Victor, 1983), 2Kings 23.
24 Randall Price, *The Stones Cry Out* (Eugene: Harvest House, 1997), pp. 252-252.
25 Harold W. Hoehner, *Chronological Aspects of the Life of Christ* (Grand Rapids: Zondervan Publishing, 1977), pp. 126-39.
26 Walvoord, Daniel 9 & Nehemiah 2.
27 Peter Stoner, *Science Speaks*, Chapter 3, Available online at: www.sciencespeaks.dstoner.net (Accessed 11/11/10).
28 William Albright quoted in *Baker Encyclopedia of Christian Apologetics*, "Dead Sea Scrolls."
29 Bromiley, "Dead Sea Scrolls," Vol. 1, p. 883.
30 Geisler, *Baker Encyclopedia of Christian Apologetics*, "Dead Sea Scrolls."
31 Geisler, *A General Introduction to the Bible*, pp.196-197.
32 Gary Habermas and Michael Liacona, *The Case for the Resurrection of Jesus* (Grand Rapids: Kregel, 2004), pp. 36-40.
33 William F. Albright, *Recent Discoveries in Bible Lands* (New York: Funk and Wagnalls, 1955), p. 136.
34 Geisler, *Baker Encyclopedia of Christian Apologetics*, "New Testament Manuscripts."
35 Gleason Archer, *A Survey Of Old Testament Introduction* (Chicago: Moody Press, 1994), p. 27.
36 Archer, pp. 26-27.
37 Frederic Kenyon quoted in *Baker Encyclopedia of Christian Apologetics*, "New Testament Manuscripts."
38 Geisler, Baker Encyclopedia of Christian Apologetics, "Archaeology, New Testament."
39 William Ramsay, *St. Paul the Traveler and Roman Citizen*, Chapter 1, Available online at www.ccel.org/ccel/ramsay/paul_roman.iv.html (Accessed 11/15/2010).
40 William Ramsay, *The Bearing of Recent Discovery on the Trustworthiness of the New Testament*, p. 222, Available online at www.archive.org/stream/bearingofrecentd00ramsuoft#page/n7/mode/2up (Accessed 11/15/2010).
41 A. N. Sherwin-White, *Roman Society and Roman Law in the New Testament* (Grand Rapids: Baker Books, 1978), p. 189.
42 Randall Price, *The Stones Cry Out* (Eugene: Harvest House, 1997), pp. 295-318.
43 Nelson Glueck, *Rivers in the Desert* (New York: Farrar, Strauss and Cudahy, 1959), p. 31.

44 Simon Greenleaf, *Testimony of the Evangelists*, Available online at www.provisionftv.com/Articles/Testimony%20of%20the%20Evangelists.pdf (Accessed 11/15/2010).
45 Stoner, Chapter 3, (Accessed 11/15/2010).
46 John 11:25.
47 Habermas and Liacona, pp. 48-77.
48 Hippolytus, *On the Twelve Apostles*, Ante-Nicene Father, vol 5 (Accessed in the The Master Christian Library, ver. 6).
49 1 Corinthians 15.
50 Habermas and Liacona, pp. 69-77.
51 Ryrie, Map 14.
52 Tacitus, *Annals*, Book 15:44, Available online at www.sacred-texts.com/cla/tac/a15040.htm (Accessed 7/15/10).
53 James Charlesworth, *Jesus Within Judaism* (New York: Doubleday, 1988), p. 95.
54 Julius Africanus, *On the Circumstances Connected with our Savior's Passion and His Life-giving Resurrection*, Ante-Nicene Father, vol. 6 (Accessed in the *The Master Christian Library*, ver. 6).
55 Pliny and Trajan Correspondence, Available online at the Ancient History Sourcebook, http://www.fordham.edu/halsall/ancient/pliny-trajan1.html (Accessed 7/15/10).
56 Ibid.
57 Ibid.
58 Lucian, *The Death of Peregrine*, Available online at Sacred Texts, www.sacred-texts.com/cla/luc/wl4/wl420.htm (Accessed 11/15/10).
59 I. Epstein, transl., *The Babylonian Talmud*, (London: Soncino, 1935). Vol. III, Sanhedrin 43a, p. 281.
60 Tim LaHaye and Ed Hindson, eds., "Second Coming of Christ," *The Encyclopedia of Bible Prophecy* (Eugene: Harvest House, 2004).
61 Matthew 25:13.
62 Abortion Statistics since 1973, Available online at http://www.nrlc.org/abortion/facts/abortionstats.html (Accessed 11/15/10).
63 United States Crime Rates 1960-2009, Available online at www.disastercenter.com/crime/uscrime.htm (Accessed 11/15/10).
64 List of Famines, Available online at http://en.wikipedia.org/wiki/List_of_famines (Accessed 11/15/10).

65 Arnold Fruchtenbaum, *The Footsteps of the Messiah* (San Antonio: Ariel Ministries, 2009), pp. 96-97.
66 Church Attendance Statistics, Available online at www.christianitytoday.com/yc/2001/003/15.88.html (Accessed 11/15/10).
67 John Marcum, "Measuring Church Attendance," Available online at www.jstor.org/pss/3512431 accessed online at http://www.jstor.org/pss/3512431 (Accessed 11/15/10).
68 Robert Manchin, "Trust Not Filling the Pews," Available online at www.gallup.com/poll/13117/religion-europe-trust-filling-pews.aspx (Accessed 11/16/10).
69 Eunice Or, "Trust in Religious Institutions does not Convey to Church Attendance," Available online at www.christiantoday.com/article/trust.in.religious.institutions.does.not.convey.to.church.attendance/ 1462.htm (Accessed 11/17/10).
70 James Gannon, "Is God Dead in Europe?," Available online at www.usatoday.com/news/opinion/editorials/2006-01-08-faith edit_x.htm (Accessed 11/17/10).
71 Ryrie, Notes for Ez. 38.
72 Matthew 24:2.
73 Bromiley, "Gnosticism," Vol. 2, p 484.
74 David Bercot, ed., A Dictionary of Early Christian Beliefs (Peabody: Hendriksen, 1999), pp. 93-106.

लेखक के विषय में

डैनियल कोट विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र के शिक्षक, पासबान, और मसीही विश्वास के पक्ष समर्थक हैं। डैन के पास मेइने विश्वविद्यालय से मेकेनिकल इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ साइंस की उपाधि और साथ ही साथ ब्रिजपोर्ट विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में मास्टर और साइंस की उपाधि है। इसी के साथ ही डैन के पास लिबर्टी विश्वविद्यालय से धर्मविज्ञान और पाशंसक-विद्या में डॉक्टरेट की उपाधि भी है और वे कन्सरवेटिव कॉन्ग्रीगेशनल क्रिश्चियन कॉन्फेरेन्स में एक अभिषिक्त व्यक्ति के रूप में अगुवाई करते हैं।